www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 9 ■ 1-15 मार्च, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

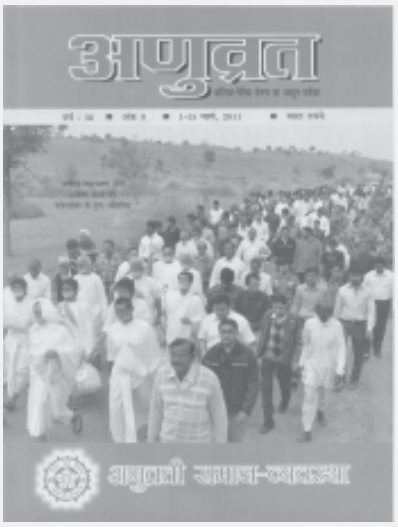

◆ अणुव्रत का ध्येय	*आचार्य तुलसी*	3
◆ अणुव्रती समाज-व्यवस्था	*आचार्य महाप्रज्ञ*	5
◆ ज्ञान बड़ा या आचार	*आचार्य महाश्रमण*	7
◆ मानवीय मूल्यों में अणुव्रत की भूमिका	*देवेन्द्र कुमार हिरण*	9
◆ कहां ले जायेगी ये मिलावट की प्रवृत्ति	*मुनि सुरेशकुमार*	11
◆ अणुव्रत नैतिक मूल्यों का जागरण	*कृष्णचन्द टवाणी*	12
◆ अणुव्रत : जीवन का यथार्थ दर्शन	*कुसुम जैन*	13
◆ संयम ही जीवन है	*समणी शारदाप्रज्ञा*	14
◆ भ्रष्टाचार का समाधान अणुव्रत से संभव	*डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी*	16
◆ काश! भ्रष्टाचार को.....	*हीरालाल छाजेड़*	18
◆ दागदार खद्दर और खाकी	*आशीष वशिष्ठ*	20
◆ माले-मुफ्त, दिल बेरहम	*जसविंदर शर्मा*	23
◆ ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय पदयात्रा	*मुनि राकेशकुमार*	24
◆ मधुमेह और प्रेक्षा चिकित्सा :3:	*मुनि किशनलाल*	26
◆ बच्चों को पारिवारिक कलह से बचाएं	*डॉ. रामसिंह यादव*	28
◆ सेल्फमेड नहीं, सहयोगी बनें	*सीताराम गुप्ता*	30
◆ बिहार में लोकतंत्र ने भरी अपनी तान	*सिद्धेश्वर प्रसाद*	31

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	8
◆ कविता	19
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की	22
◆ अणुव्रत आंदोलन	33-40

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत का आह्वान

तेजी से नीचे गिरते नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के त्रासदी भरे वर्तमान माहौल में युवा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की चुरु जिले के राजलदेसर कस्बे से 14 फरवरी 2011 को ''अहिंसक चेतना का जागरण एवं नैतिक मूल्यों का विकास'' लक्ष्य के साथ राष्ट्रव्यापी अहिंसा यात्रा प्रारंभ हो लूणासर ग्राम पहुंच, गतिमान है। परम्परागत भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को आत्मसात किये विकास की पगडंडियों पर आरूढ़ है किसान बहुल लूणासर ग्राम। लक्ष्य प्राप्ति के प्रथम पड़ाव में आयोजित जनसभा को उद्बोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा ''अहिंसक मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति-व्यक्ति में अनुकम्पा की चेतना प्रस्फुटित हो।''

अणुव्रत अनुशास्ता का उक्त आह्वान समाज, धर्म और राजनीति से जुड़े कर्णधारों के हृदयों को छू पायेगा? यही वह आधारभूत प्रश्न है जहां आकर अहिंसक नैतिक मूल्य बर्फ की भांति पिघल जाते हैं। हम बात तो मूल्यों की करते हैं लेकिन व्यवहार में ठीक इसका उलटा कर रहे हैं। आज धार्मिक स्थलों, राजनैतिक गलियारों और सामाजिक मंचों पर प्रदर्शन-आडम्बर का जो दौर चल रहा है, उससे अर्थ की चमक बढ़ी और मनुष्य का अवमूल्यन हुआ है। चारों तरफ बाजारवाद, भौतिकता, विलासिता, आडम्बर का बोलबाला है, जिनके चलते अहिंसक-नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है।

इस संदर्भ में मुझे अणुव्रत दर्शन के व्याख्याकार आचार्य महाप्रज्ञ का यह वाक्य याद आ रहा है ''मैं गरीबी से ज्यादा अमीरी को खतरनाक मानता हूं। अमीरी बड़ी हिंसा को जन्म देती है।'' आज हमारा मूल लक्ष्य अर्थ उपार्जन ही हो गया है। अर्थ प्राप्ति के लिए हम घिनौने से घिनौना कृत्य करने से भी नहीं कतराते हैं। अर्थ की बढ़ती लालसा ने शिक्षा केन्द्रों को भी अपनी चपेट में लेते हुए, ऐसे पाठ्यक्रमों को बढ़ावा दिया है जिन्हें पढ़ बालक केवल धन कमाने की मशीन बन नैतिक मूल्यों से दूर भाग रहा है। अर्थ के प्रति बढ़ती हमारी यह आसक्ति प्रतिस्पर्द्धा को जन्म दे रही है और हम एक-दूसरे से श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए मानवीय मूल्यों को तिलांजलि दे रहे हैं।

अणुव्रत आंदोलन विगत छः दशकों से मानवीय मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठापना में संलग्न है। असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण के साथ अणुव्रत ने अपनी यात्रा के 62 वर्ष पूरे किये हैं। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के शब्दों में चरित्र को प्रतिष्ठित करने में अणुव्रत ने अहम भूमिका निभाई है। उसने देश में एक नयी विचारधारा का प्रवाह बहाया, उपासना में उलझे हुए मनुष्य से चरित्र की पहचान करवाई और एक मानव धर्म को उजागर किया। अणुव्रत ने सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, असाम्प्रदायिकता आदि सार्वभोम तत्वों की धारा बहाई, युग चेतना को झकझोरा, हजारों-हजार व्यक्तियों को उस धारा में बहने के लिए आमंत्रित किया।

63वें स्थापना दिवस (1 मार्च 2011) पर अणुव्रत आंदोलन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के आध्यात्मिक नेतृत्व में पुनः संकल्पित हो भारत धरा का आह्वान कर रहा है कि हम भौतिकता की चकाचौंध से बाहर निकल कर पुनः पीछे की ओर अपने घर को लौटे और प्रदर्शन-आडम्बर से मुक्त होते हुए अनैतिक आचरण न करने का संकल्प लें।

● डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत का ध्येय

आचार्य तुलसी

भारतीय संस्कृति में मोक्ष की निश्चित अवधारणा है। इस संस्कृति में आस्था रखने वाला व्यक्ति अपने मन में मुक्त होने की घनीभूत इच्छा रखता है। इसी इच्छा से प्रेरित होकर वह अपने इष्ट से याचना करता है

असतो मा सत् गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योः मा अमृतं गमय

'मुझे असत् से सत् की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।' तीनों ही मांगे बहुत सुंदर हैं। सत्, प्रकाश और अमरत्व प्राप्त होने के बाद मनुष्य को चाहिए ही क्या? मैं इन वाक्यों को थोड़ा बदलना चाहता हूँ, याचना के स्थान पर पुरुषार्थ को जोड़ना चाहता हूँ। पुरुषार्थ में विश्वास रखने वाले व्यक्ति की भाषा होगी मैं असत् से सत् की ओर जाऊँ, मैं अंधकार से प्रकाश की ओर जाऊँ, मैं मृत्यु से अमरत्व की ओर जाऊँ। इसमें व्यक्ति का अपना कर्त्तव्य उजागर होता है। आस्था-प्रधान संस्कृति में याचना की बात अस्वाभाविक नहीं है, फिर भी इसमें पुरुषार्थहीनता नहीं होनी चाहिए। पुरुषार्थी व्यक्ति अपने इष्ट का संबल या आलंबन प्राप्त कर सकता है। उसका संकल्प होता है

अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि
अन्नाणं परियाणामि नाणं उवसंपज्जामि
मिच्छत्तं परियाणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि

''मैं अमार्ग को छोड़ता हूँ और मार्ग को स्वीकार करता हूँ। मैं अज्ञान को छोड़ता हूँ और ज्ञान को स्वीकार करता हूँ। मैं मिथ्यात्व को छोड़ता हूँ और सम्यक्त्व को स्वीकारता हूँ।' इस प्रकार सोचने वाला व्यक्ति ईश्वर के प्रति आस्थाशील रहता हुआ भी लक्ष्य-प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ का उपयोग करेगा। यदि हम बच्चों के अपरिपक्व मस्तिष्क में प्रारंभ से ही ऐसे संस्कार भरेंगे तो उनके अवचेतन मन में निरंतर पुरुषार्थ की लौ प्रज्वलित होती रहेगी। पुरुषार्थ के अभाव में किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यक्तित्व-निर्माण में सहायक नहीं हो सकती।

शिक्षा पाने का अधिकारी कौन हो सकता है? इस जिज्ञासा के समाधान में आप्त पुरुषों ने कहा

विवत्ती अविणीयस्य संपत्ती विणीयस्य य।
जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ।।

अविनीत को विपत्ति और सुविनीत को संपत्ति मिलती है ये दोनों जिसे ज्ञात हैं, वही शिक्षा को प्राप्त होता है। शिक्षा का उद्देश्य है जीवन की विसंगतियों को दूर करना। इस उद्देश्य की पूर्ति उसी शिक्षा से हो सकती है, जो स्वयं विसंगतियों से दूर हो। जिस शिक्षा में मूलतः ही विसंगति हो, उससे विकास की संभावना कैसे की जा सकती है?

मेरे अभिमत से शिक्षा का पहला उद्देश्य होना चाहिए भीतर चेतना का जागरण। आज शिक्षा के द्वारा बुद्धि को जगाया जा रहा है, मन को जगाया जा रहा है, पर चेतना-जागरण की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। समस्या का मूल यही है। हमें इसी बिंदु पर गंभीरता से विचार करना है।

मनुष्य की आंतरिक चेतना को जगाने के लिए बौद्धिक विकास के साथ चारित्रिक विकास की ओर ध्यान देना नितांत आवश्यक है। चरित्र व्यक्ति का भी होता है, समाज का भी होता है और राष्ट्र का भी होता है, इसी प्रकार राष्ट्रीय चरित्र से व्यक्ति प्रभावित होता है। जिस राष्ट्र का कोई चरित्र नहीं होता, उसके नागरिक चरित्रसंपन्न कैसे होंगे?

चरित्र को प्रतिष्ठित करने में अणुव्रत ने अहम् भूमिका निभाई है। अणुव्रत एक आचार-संहिता का नाम है। वह लोक-जीवन में व्याप्त मानवीय दुर्बलताओं को परिष्कृत कर स्वस्थ जीवन जीने की

अणुव्रत का मार्ग यह नहीं है कि नैतिक बनने के लिए काम छोड़ दिए जाएँ। काम छोड़ देने पर नैतिक और अनैतिक बनने का प्रश्न ही नहीं उठता। अपना काम करते हुए आदमी अनैतिक आचरण न करे बस यही अणुव्रत का ध्येय है। अणुव्रत संस्कार निर्माण का अभियान है। एक आदमी संकरी पगडंडी द्वारा पहाड़ पर सीधा चढ़ सकता है। पर हजारों-हजारों लोग और वाहन वैसे नहीं चढ़ सकते। सड़क बनाने में समय लगता है पर उस के बनने पर एक बच्चा भी पहाड़ की चोटी पर पहुँच सकता है। हमें निष्ठा के साथ काम करना चाहिए। सफलता की उतावली में यथार्थ को नहीं भुला देना चाहिए। मैं यह चाहता हूँ कि अभियान के प्रयत्न तीव्र हों, सघन हों और व्यवस्थित हों।

www.terapanthinfo.com

दिशा देता है। कुछ लोग पूछते हैं कि पिछले वर्षों में अणुव्रत ने क्या किया? अणुव्रत को जो काम करना था, उसने वही काम किया। उसने देश में एक नयी विचारधारा का प्रवाह बहाया, उपासना में उलझे हुए मनुष्य से चरित्र की पहचान करवाई और एक सार्वभौम धर्म या मानव-धर्म को उजागर किया।

अणुव्रत ने जाति, प्रांत, भाषा, धर्म, रंग और लिंग आदि भेदजनक सीमाओं में सिमटे हुए धर्म को विस्तार के लिए व्यापक धरातल दिया। उसने धर्म के नाम पर चलने वाली स्वार्थसिद्धि पर प्रहार किया और परमार्थ तत्त्व को खोजने का दृष्टिकोण दिया।

अणुव्रत ने धर्म की प्रासंगिकता को त्रैकालिक प्रमाणित करते हुए उसे असांप्रदायिक या चरित्र प्रधान धर्म के रूप में विकसित होने का अवसर दिया। किसी भी संप्रदाय में रहता हुआ व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है। किसी भी जाति या भाषा से जुड़ा हुआ व्यक्ति अणुव्रतों की साधना कर सकता है। किसी भी रूप में परमात्मा को मानने वाला व्यक्ति अणुव्रत का आचरण कर सकता है और परमात्मा की सत्ता में विश्वास करने वाला व्यक्ति भी अणुव्रती बनने का गौरव अर्जित कर सकता है।

अणुव्रत ने सत्यनिष्ठा, प्रामाणिकता, असांप्रदायिकता आदि सार्वभोम तत्त्वों की धारा बहाई, युग-चेतना को झकझोरा, हजारों-हजारों व्यक्तियों को उस धारा में बहने के लिए आमंत्रित किया।

राष्ट्रीय चेतना के विकास हेतु जितने प्रयत्न आज हो रहे हैं उनकी पृष्ठभूमि में चरित्र का बल हो तो सब काम अच्छे ढंग से आगे बढ़ सकते हैं। चरित्र को गौण करके कितना ही विकास कर लिया जाए, समस्या ज्यों की त्यों खड़ी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उभरने वाली समस्या का कारण भी चरित्रहीनता है। शिक्षा नीति में किन तत्त्वों का समावेश जरूरी है, इस संदर्भ में शिक्षाशास्त्री अपनी-अपनी अनुशंसाएं प्रस्तुत कर रहे हैं। उन अनुशंसाओं में चरित्रबल को पुष्ट करने या आंतरिक व्यक्तित्व का निर्माण करने का लक्ष्य मुख्य रहेगा, तभी शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य भीतरी चेतना का जागरण, सार्थक हो सकता है। क्योंकि मनुष्य का चरित्र सही है तो सब कुछ सही है। चरित्र सो जाएगा तो सब कुछ सो जाएगा। अणुव्रत आंदोलन शिक्षा में चरित्र के समावेश की अनुशंसा पर पहले भी सजग था, आज भी सजग है।

नैतिकता का प्रशिक्षण

हिंसा, संग्रह और अनैतिक मूल्यों के प्रति जिस वेग से आस्था बढ़ रही है, उसी वेग से यदि नैतिक अभियान ने काम नहीं किया तो क्या दीर्घकालीन परिणाम की आशा की जा सकती है? यह प्रश्न बड़ी तत्परता से पूछा जाता है। किन्तु इस का उत्तर उतनी तत्परता से नहीं दिया जा सकता।

आज अधिकांश लोग अपने-अपने स्वार्थ की सिद्धि में संलग्न हैं। स्वार्थ सिद्धि को बुरा भी नहीं कहा सकता। किन्तु दूसरों के स्वार्थों को विघटित कर अपना स्वार्थ साधना निश्चित ही बुरा है और बहुत बुरा है। समाज में इस बुराई के प्रति घृणा उत्पन्न हुए बिना नैतिकता के भाग्य के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

मैं नैतिकता को व्यवस्थाओं व विधि-विधानों के साथ नत्थी नहीं करता मैं उसे व्यक्ति-व्यक्ति के हृदय की अच्छाई के साथ जोड़ता हूँ। जो व्यक्ति अपना हित साधने के लिए दूसरों का नुकसान नहीं करता, दूसरों के प्रति क्रूर व्यवहार और विश्वासघात नहीं करता, उसे मैं नैतिक आदमी मानता हूँ।

अणुव्रत संस्कार निर्माण का अभियान है। एक आदमी संकरी पगडंडी द्वारा पहाड़ पर सीधा चढ़ सकता है। पर हजारों-हजारों लोग और वाहन वैसे नहीं चढ़ सकते। सड़क बनाने में समय लगता है पर उस के बनने पर एक बच्चा भी पहाड़ की चोटी पर पहुँच सकता है। हमें निष्ठा के साथ काम करना चाहिए। सफलता की उतावली में यथार्थ को नहीं भुला देना चाहिए। मैं यह चाहता हूँ कि अभियान के प्रयत्न तीव्र हों, सघन हों और व्यवस्थित हों।

मंद अग्नि से पानी गर्म नहीं होता। अग्नि में पर्याप्त ईंधन डालने पर ही पानी गरम हो सकता है। पाँच-पाँच हाथ के पचासों गड्ढे खोदने पर भी जल नहीं निकलता। यदि पचास हाथ का एक गड्ढा खोदा जाता है तो जल निकल आता है।

इधर-उधर बिखरी ईटों से मकान नहीं बनता। मकान बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित ढंग से जाँचना होता है। अणुव्रत का भावी कार्यक्रम इन्हीं तथ्यों पर आधारित है। अणुव्रत अभियान को तीव्र करने के लिए जनता तक पहुँचना व उसे नैतिकता से होने वाले लाभ समझाना जरूरी है। ''तुम्हें नैतिक बनना चाहिए'' यह उपदेश है। इससे बहुत सफलता की आशा नहीं की जा सकती। आप नैतिकता और अनैतिकता के परिणामों का विश्लेषण कीजिए। जनता किस ओर आकृष्ट होती है, यह उसी पर छोड़ दीजिए। यदि आपकी शैली समर्थ है और आप उस के हृदय तक पहुँच सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि वह नैतिकता के लाभ से प्रभावित न हो। सूत्र की भाषा में नैतिकता का उपदेश उस (नैतिकता) के विकास का मंद प्रयत्न है और नैतिकता का प्रशिक्षण उस के विकास का तीव्र प्रयत्न है।

नैतिक जीवन जीना चाहिए, यह शुभ संकल्प हैं। जिस आदमी में थोड़ा-सा भी सत् का अंश है, वह संकल्प को स्वीकार करना चाहेगा। किन्तु नैतिक जीवन जीने में आने वाली कठिनाइयों को पार करने का मार्ग न सूझे तब आदमी नैतिक मार्ग से दूर हट जाता है।

अणुव्रत का मार्ग यह नहीं है कि नैतिक बनने के लिए काम छोड़ दिए जाएँ। काम छोड़ देने पर नैतिक और अनैतिक बनने का प्रश्न ही नहीं उठता। अपना काम करते हुए आदमी अनैतिक आचरण न करे बस यही अणुव्रत का ध्येय है।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रती समाज-व्यवस्था

आचार्य महाप्रज्ञ

अणुव्रत आंदोलन की कल्पना है, अहिंसक समाज बने। समाज अहिंसक बने, इसका अर्थ यह नहीं कि सर्व-हिंसा-त्यागी मुनि बने। अहिंसा का अणुव्रत लेना सबके लिये संभव है, पर मुनि बनना (या अहिंसा का महाव्रती बनना) सबके लिये संभव नहीं है। कल्पना वही होनी चाहिये, जो संभव हो। अहिंसा का अणुव्रत समाज के लिए असंभव नहीं है। अहिंसक समाज बने इसका तात्पर्य यह है कि अहिंसा और सत्य को सर्वोपरि साध्य मानकर चले, वैसा समाज बने।

जीवन की आवश्यकताएं नहीं छूटतीं यह निर्विकल्प है। विकल्प उनके पूर्ति-क्रम में होते हैं। पूर्ति की पद्धति सामाजिक होती है। निर्वाह की जिस पद्धति को समाज उचित या अनुचित मानता है, उसके पीछे उसकी दार्शनिक मान्यताएं होती हैं। इच्छा पर नियंत्रण सभी समाजों में होता है। यह समाज-एकरूपता है। नियंत्रण का तारतम्य और उसके प्रेरक हेतु सबमें एक रूप नहीं होते। नियंत्रण के चार प्रकार हैं 1. भौतिक, 2. राजनीतिक, 3. सामाजिक, 4. नैतिक या आध्यात्मिक। उनके प्रेरक हेतु क्रमशः प्रकृति-भय, राज्य-भय, समाज-भय और आत्मपतन-भय हैं। इनमें पहले तीन भय बाहरी और आखिरी आंतरिक हैं। प्रकृति, राज्य और समाज की मर्यादा का उल्लंघन करने वाला उनके द्वारा दण्ड पाता है। इसलिए दण्ड की आशंका हो, वहां उनकी मर्यादा का पालन और जहां वह न हो वहां मर्यादा की अवगणना भी हो जाती है। आत्मिक-नियंत्रण दण्ड प्रेरित नहीं होता। वह व्यक्ति का अपना आंतरिक विवेक-जागरण है। इसलिए उसमें बाहर-भीतर का द्वैध नहीं होता। प्रकाश या तिमिर, परिषद् या एकांत में बुराई से बचने की समवृत्ति हो जाती है, यही आध्यात्मिक भय है। यह भय रखने वाला बाहर की किसी भी शक्ति से नहीं डरता, इसलिए सही मायने में यह अभय है। अणुव्रती समाज-व्यवस्था में नियंत्रण का प्रेरक हेतु आत्म-पतन का भय है। उसमें वही व्यवस्था या विधि उचित मानी जाती है, जो आत्म-पतनकारक नहीं होती। आवश्यकता-पूर्ति का क्रम व्रतों में बाधा डालने वाला नहीं होता। व्रतों में बाधा वासना से आती है। आवश्यकता और वासना का पृथक्करण करना ही अणुव्रती समाज-व्यवस्था का लक्ष्य है।

आवश्यकताएं अधिक रहें, वैसी दशा में नैतिक निष्ठा बन नहीं सकती। उसके बिना व्रत केवल औपचारिक हो जाते हैं। इसलिए आवश्यकताएं कम करना भी अणुव्रती समाज-व्यवस्था का लक्ष्य है।

अधिक आवश्यकताएं निर्वाहमूलक नहीं होतीं। वे इच्छा पर नियंत्रण न कर सकने की स्थिति में होती हैं। यह रोग का मूल है। इच्छा पर नियंत्रण नहीं होता है, तब आवश्यकताएं बढ़ती हैं। जब आवश्यकताएं बढ़ती हैं, नैतिक निष्ठा कम होती है। नैतिक निष्ठा कम होती है, व्रत औपचारिक बन जाते हैं। औपचारिक व्रतों से वह शान्ति नहीं मिलती, जो व्रतों से मिलनी चाहिए। इसलिए अणुव्रती समाज-व्यवस्था का सबसे पहला या प्रधान लक्ष्य है इच्छा का नियंत्रण। संक्षेप में इच्छा-नियंत्रण के द्वारा आवश्यकता का अल्पीकरण और उसके द्वारा आवश्यकता और वासना का पृथक्करण करना अणुव्रती समाज-व्यवस्था का लक्ष्य है।

तीन भूमिकाएं

खाना स्वाभाविक लगता है। नहीं खाना स्वाभाविक नहीं लगता। खाने का समय नहीं खाने के समय की अपेक्षा बहुत थोड़ा होता है। खाना शरीर की जरूरत है, इसलिये प्राणी खाता है। जरूरत पूरी होने पर नहीं खाता, यह उसका हित है। इसलिए वह खाना छोड़ देता है खाने पर नियंत्रण कर लेता है। नियंत्रण शक्ति कम होती है; वह पेटू बन जाता है, जरूरत पूरी हो जाने पर भी खाता ही रहता है। यह विकार-पक्ष है। परिमित खाना स्वभाव-पक्ष है। आरोग्य-संवर्धन के लिए स्वभाव-पक्ष का प्रतिरोध करना नहीं खाना, भूख सहना यह हित पक्ष है। समाज की सारी वृत्तियां इन तीनों पक्षों में समाज जाती है। कानून या विधि-विधान व्यक्ति को विकार-पक्ष से स्वभाव-पक्ष की ओर अग्रसर करता है। व्रत स्वभाव-पक्ष से हित-पक्ष की ओर जाने की साधना है या यूं कहना चाहिए विकार और स्वभाव में विरोध होता है, तब सामाजिक विधि का निर्माण होता है तथा स्वभाव और हित में विरोध होता है तब आध्यात्मिक या नैतिक व्रतों की साधना अपेक्षित होती है। विकार, स्वभाव और हित को परिभाषा की संज्ञा में अति मात्रा, मात्रा और अमात्रा कहा जा सकता है। उदाहरणस्वरूप वासना की अति मात्रा-पूर्ति विकार है। वासना की परिमित मात्रा-पूर्ति शरीर का स्वभाव है। वासना-विजय या वासना की अमात्रा हित है। स्वभाव की दृष्टि से विकार अकर्त्तव्य है और हित की दृष्टि से

www.terapanthinfo.com

स्वभाव अकर्त्तव्य है। शरीर-स्वभाव की दृष्टि से अति मात्रा में खाना अकर्त्तव्य है पर आवश्यक व उपयोगी खाना अकर्त्तव्य नहीं है। परन्तु हित की दृष्टि से परिमित खाना भी अकर्त्तव्य हो जाता है। दूसरे के लिए पहले का त्याग (उत्तरवर्ती के लिए पूर्ववर्ती का त्याग) कर्त्तव्य की विशेष प्रेरणा से ही होता है। व्यक्ति में विवेक जागरण का उत्कर्ष होता है, तभी वह स्वभाव के लिए विकार का और हित के लिए स्वभाव का त्याग करता है।

जिस ओर मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा हो, वही उसका कर्त्तव्य माना जाये तो अकर्त्तव्य जैसा कुछ बचा ही नहीं रहता। शोषण, संग्रह और सत्ता की ओर मनुष्य की जैसी स्वतः स्फूर्त प्रेरणा होती है, वैसी भले कार्यों के प्रति नहीं होती। किन्तु यह विकार के मोहक आवरण से ढंकी हुई स्वाभाविक प्रेरणा है, इसलिये यह अकर्त्तव्य है। वैध ढंग से व्यापार, परिग्रह और अधिकार प्राप्ति की ओर जो स्वाभाविक प्रेरणा होती है, उसके पीछे आवश्यकता या उपयोगिता की सामान्य भावना होती है, इसलिये वह सामान्य कर्त्तव्य है। अपरिग्रह और असत्ता समाज के वर्तमान मानस में स्वभाविक प्रेरणा लभ्य नहीं है, इसलिए ये प्रधान कर्त्तव्य हैं।

अणुव्रती समाज व्यवस्था में अकर्त्तव्य का वर्जन, सामान्य कर्त्तव्य का नियंत्रण और प्रधान कर्त्तव्य का विकास ये तीन भूमिकाएं होंगी, जिनका स्थूल संकेत आंदोलन की तीन श्रेणियों से परिलक्षित होता है।

नया मूल्यांकन - नया आकर्षण

परिस्थिति के मूल्यांकन और आकर्षण की दृष्टि बदले बिना समाज की स्थिति में मोड़ नहीं आता। इसलिये अणुव्रती समाज की व्यवस्था के मूल्य और आकर्षण नये होने चाहिएं। इसमें मूल्यांकन की दृष्टि त्याग और आकर्षण की दृष्टि आत्मिक पवित्रता का संरक्षण और विकास होगी। श्रम के द्वारा मूल्यांकन करने की बात कही जाती है पर अणुव्रत-दृष्टि के अनुसार श्रम आवश्यकता की कोटि का है। वह जीवन की प्राथमिक या अनिवार्य आवश्यकता है, साधना नहीं। इसलिये वह समाज के उत्कर्ष की अपेक्षा बन सकता है, मानदण्ड नहीं। त्याग आवश्यकता की पूर्ति नहीं है, वह पवित्रता का आचरण है। इसलिये उसमें मानदण्ड बनने की क्षमता है। श्रम करे या न करे, कर सके या न कर सके, पर अपवित्रता का त्याग श्रमिक और धनिक दोनों श्रेणियों के लिए आवश्यक है। इसी प्रकार कहा जा सकता है त्याग कोई करे या न करे, कर सके या न कर सके, श्रम तो दोनों के लिए आवश्यक है। इस प्रकार दो स्वतंत्र विकल्पों से त्याग और श्रम दो स्वतंत्र वृत्तियां बन जाती हैं। त्याग श्रम नहीं है और श्रम त्याग नहीं है। किन्तु जहां श्रम है वहां त्याग सरलता से आ सकता है, बढ़ सकता है और जहां त्याग है वहां श्रम टिक सकता है। भोग-प्रधान जीवन में विलास आता है। उससे श्रम की वृत्ति टूट जाती है। असल में श्रम की प्रधानता में त्याग आ भी सकता है और नहीं भी। किन्तु त्याग की प्रधानता (औपचारिक नहीं किन्तु हार्दिक त्याग की प्रधानता) में श्रम अपने आप आयेगा। इस प्रकार अणुव्रती समाज-व्यवस्था में श्रम नीचा नहीं माना जाएगा। वह जीवन-निर्वाह की अनिवार्य अपेक्षा की दृष्टि से देखा जाएगा। व्रतों की सुरक्षा के लिए परावलम्बन यानी विलास की ओर वृत्ति नहीं पनप सकेगी। अधिक पैसे का साध्य-परिणाम विलास और प्रासंगिक परिणाम परावलम्बन होता है। व्रत का साध्य परिणाम पवित्रता और प्रासंगिक परिणाम स्वावलम्बन या श्रम है। पैसे की जगह मूल्यांकन का साधन व्रत बने, विलास का आकर्षण छूटकर पवित्रता का आकर्षण बढ़े, तभी परावलम्बन का स्थान स्वावलम्बन ले सकता है। इसलिए समाज और विशेषतः भावी पीढ़ी के संस्कारों को प्रारंभ से ही इस नए मूल्य और आकर्षण की दृष्टि दी जाए, इसका मौलिक प्रयत्न होने की अपेक्षा है।

अहिंसक समाज की कल्पना

अणुव्रत आंदोलन की कल्पना है, अहिंसक समाज बने। समाज अहिंसक बने, इसका अर्थ यह नहीं कि सर्व-हिंसा-त्यागी मुनि बने। अहिंसा का अणुव्रत लेना सबके लिये संभव है, पर मुनि बनना (या अहिंसा का महाव्रती बनना) सबके लिये संभव नहीं है। कल्पना वही होनी चाहिये, जो संभव हो। अहिंसा का अणुव्रत समाज के लिए असंभव नहीं है।

अहिंसक समाज बने इसका तात्पर्य यह है कि अहिंसा और सत्य को सर्वोपरि साध्य मानकर चले, वैसा समाज बने। अहिंसक समाज में भोग, परिग्रह और हिंसा ये नहीं होंगे ऐसी बात नहीं किन्तु उसमें आवश्यकता से बढ़कर इनका स्थान नहीं होगा। ये साध्य तो नहीं ही होंगे।

जो हिंसक कहलाता है, वह सदा हिंसा ही करता है, यह बात नहीं है। अहिंसक कहलाने वाला कभी भी हिंसा नहीं करता, यह भी नहीं है। निश्चय-दृष्टि में हिंसक और अहिंसक की चर्चा बहुत सूक्ष्म हो जाती है। व्यवहार-दृष्टि में हिंसा प्रधान व्यक्ति या समाज को हिंसक और अहिंसा-प्रधान व्यक्ति या समाज को अहिंसक कहा जाता है। हिंसा के प्रधान कारण हैं अपनापन और इच्छा का विस्तार। जिस वस्तु के साथ व्यक्ति का अपनत्व जुड़ता है, उसकी रक्षा के लिए उसमें आग्रह का भाव बन जाता है। उसे निभाने के लिए फिर हिंसा करने में कोई सिकुड़न नहीं होती। इच्छा का विस्तार और हिंसा, ये सदा साथ-साथ चलते हैं। अपनत्व की भावना को विस्तृत और इच्छा को सीमित किये बिना हिंसा की प्रधानता नहीं मिट सकती। अहिंसक समाज की रचना के ये दो स्तम्भ हैं। इनका निर्माण आत्मौपम्य और संयम से होता है।

www.terapanthinfo.com

"जहाँ आचार की निर्मलता होती है वहाँ यथार्थ को स्वीकार किया जाता है, छुपाया नहीं जाता। दुनिया में अनेक प्रकार का ज्ञान है और अनेक प्रकार का आचार है। आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में उसी ज्ञान और आचार का महत्व है जिससे व्यक्ति राग से विराग की ओर प्रस्थान कर सके। सब के साथ मैत्री-भाव का विकास हो सके। कल्याणकारी कार्यों में आगे बढ़ सके।"

ज्ञान बड़ा या आचार

आचार्य महाश्रमण

शिष्य ने गुरु के पास जिज्ञासा व्यक्त करते हुए कहा भन्ते! ज्ञान बड़ा होता है या आचार? पहले ज्ञान की आराधना करनी चाहिए या आचार का पालन? गुरु ने समाधान की भाषा में कहा-वत्स! अपेक्षा-भेद से दोनों बड़े हैं। कहीं ज्ञान बड़ा है तो कहीं आचार। जहाँ ज्ञान को महत्त्व दिया गया, वहाँ कहा गया-पढमं नाणं तपो दया' पहले ज्ञान फिर दया, आचार आदि। यहाँ ज्ञान का मतलब है, सम्यक् ज्ञान। यदि ज्ञान सम्यक् नहीं है तो आचार सम्यक् हो नहीं सकता। जैन तत्त्वज्ञान में बताया जाता है कि संसारी जीव के दो प्रकार हैं भव्य जीव और अभव्य जीव। अभव्य जीव कभी मोक्ष नहीं जा सकता। वह मोक्षगमन के लिए सर्वथा अयोग्य होता है। उसे कभी भी सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो ही नहीं सकता। अभव्य जीव ग्रन्थि भेदन में समर्थ नहीं होता। तीर्थंकरों, मुनियों की ऋद्धि-विशेष को देखकर वह दीक्षित हो सकता है, अन्य किन्हीं कारणों, निमित्तों से दीक्षित हो सकता है। साधु के निर्धारित आचार का पालन कर लेता है। आचार्यपद पर भी सुशोभित हो जाता है। यहाँ तक ही नहीं, अपने हाथों से सैकड़ों मुमुक्षुओं को दीक्षित कर देता है और वे दीक्षित मुनि मोक्ष भी चले जाते हैं, किन्तु स्वंय कभी मोक्ष नहीं पा सकता, क्योंकि वह अभव्य है। उसके पास सम्यक् ज्ञान नहीं है। सम्यक् ज्ञान के अभाव में वह द्रव्यतः साध्वाचार का पालन कर सकता है, किन्तु भावतः नहीं। इसलिए उसे कभी मोक्ष नहीं मिल सकता। वन्ध्यापुत्र के समान उसके मोक्षगमन की कल्पना निरर्थक हो जाती है। गुणस्थानों के क्रम में भी चौथे गुणस्थान में ही सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। जब की सम्यक् आचार पाँचवें गुणस्थान से शुरू होता है। ज्ञान के अभाव में किया गया आचार का पालन बहुत फलदायी नहीं होता।

अहिंसा एक आचार है। सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, ईमानदारी आदि भी आचार हैं। पहले अहिंसा आदि को समझना होगा। तत्पश्चात् ही उनका पालन किया जा सकता है। एक नवदीक्षित मुनि को गोचरी करने (भिक्षा-विधि) का ज्ञान ही नहीं है, वह गोचरी कैसे करेगा? उसे पहले गोचरी के नियमों को समझाया जाता है, तब वह गोचरी के लिए अर्ह हो सकता है। गोचरी कर सकता है। यहाँ ज्ञान मूल है। आचार नम्बर दो की बात है। यह एक सिद्धान्त है। एक दूसरा सिद्धान्त इसके विपरीत है। उसमें यह कहा जाता है कि ज्ञान होना कोई खास बात नहीं है, आदमी का आचार अच्छा होना चाहिए ठीक है तो सब ठीक है। दशवैकालिक सूत्र के नौवें अध्ययन में बताया गया है

कुछ आचार्य छोटी अवस्था में भी ज्ञान-सम्पन्न होते हैं तो कुछ आचार्य बड़ी अवस्था होने पर भी मन्द होते हैं, उनमें बाहुश्रुत्य का विकास नहीं होता। ज्ञान की अधिकता नहीं होती, फिर भी वे आचार सम्पन्न हैं तो उनकी अवहेलना करना खतरनाक होता है। आचार-सम्पन्न आचार्य की अवहेलना करने से शिष्य वैसे ही नष्ट हो जाता है जैसे अग्नि में ईंधन। आचार प्रधान हो तो भले ही उनमें श्रुत कम हो, फिर भी वे आचार्यपद के योग्य होते हैं। यहाँ आचार को प्रमुख स्थान दिया गया है और ज्ञान को गौण माना गया है आचार्य तुलसी ने भी आचार को प्रमुखता देते हुए लिखा है

100 रुपयों की नौली में 99 रुपये तो आचार के होते हैं और एक रुपया ज्ञान आदि का होता है। यहाँ ज्ञान का मतलब है, विभिन्न विषयों का ज्ञान। एक आदमी के पास सम्यक् ज्ञान है और आचार भी है, किन्तु व्यापक ज्ञान नहीं है। वह अंग्रेजी को अच्छी तरह नही जानता। हिन्दी भाषा पर भी पूरा अधिकार नहीं है। विज्ञान के बारे में भी खास कुछ नहीं जानता। गणित में भी बहुत कमजोर है और न ही उसके पास अच्छा वक्तृत्व है। विभिन्न विधाओं का ज्ञान न होने के बावजूद भी वह अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यहाँ तक कहा गया कि एक साधु को बहुत सीमित ज्ञान है। वह महाव्रत, समिति, गुप्ति आदि के बारे में तो जानता है, किन्तु बहुश्रुतता उसके पास नहीं है। ज्ञान की अल्पता की स्थिति में भी वह 12वें गुणस्थान तक

www.terapanthinfo.com

पहुँच जाता है। 12वें गुणस्थान के ठीक बाद उसे केवल ज्ञान प्राप्त हो जाता है। यहाँ तक बात स्पष्ट हो जाती है कि ज्ञान की अल्पता होते हुए भी वह आचार के द्वारा इतना आध्यात्मिक विकास कर लेता है जिससे केवल ज्ञान उपलब्ध हो जाता है।

गम्भीरता से चिन्तन करने पर लगता है कि ज्ञान और आचार एक ही वस्तु के दो भाग हैं। दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं जहाँ सम्यक् ज्ञान की चर्चा की जाती है वहाँ ज्ञान का स्थान प्रथम हो जाता है और आचार का दूसरा। जहाँ विभिन्न विधाओं के सन्दर्भ में ज्ञान की चर्चा की जाती है वहाँ आचार का स्थान प्रथम होता है और ज्ञान का दूसरा।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि व्यक्ति के पास सम्यक् ज्ञान है। जो जैसा है उसे उसी रूप में समझता है, फिर भी ज्ञान के अनुरूप आचरण नहीं कर पाता सही और गलत को जानते हुए भी गलत काम कर लेता है, अपराध कर लेता है।

बहुत वर्षों पहले एक कथानक पढ़ा था। एक गाँव में महात्मा जी रहते थे। उन्हें अनेक भाषाओं और विधाओं का ज्ञान था। किन्तु जीवन में सरलता, निश्छलता, ईमानदारी नहीं थी। लोगों के सामने आचार की बड़ी-बड़ी बातें करते थे। उपदेश देते थे। मांस खाना पाप है, अण्ड़ा खाना गलत है, परन्तु स्वयं हमेशा मच्छी खाते थे। महात्मा जी रोज सवेरे अन्धेरे में घूमने जाते और साथ में मच्छी ले आते। एक दिन भ्रमण करके वापस आने मे देरी हो गई। रास्ते में एक मुँहलगा भक्त मिल गया। उसने देखा महात्मा जी ने कोख में कुछ छुपा रखा है। भक्त ने पूछ लिया बाबाजी! कोख में क्या छुपा रखा है? बाबाजी ने सोचा, आज तो मेरा पर्दाफाश हो जाएगा। असलियत को छुपाते हुए कहा यह तो मेरी पुस्तक है। भक्त इसमें से पानी जैसा क्या टपक रहा है? महात्मा रामचरित महाकाव्य का सार टपक रहा है। भक्त यह पूँछ जैसी क्या दिखाई दे रही है? महात्मा-यह ताड़पत्र है। भक्त यह रंग जैसा क्या है? महात्मा रामायण गौड़ाक्षर लिपि में लिखी गई है इसलिए रंगीन है। भक्त बाबाजी! इस में गंध किस की आ रही है? महात्मा भक्त! यह सजीव पुस्तक है। राम-रावण के महासंग्राम में बहुत से लोग मारे गए, यह उन्ही की गन्ध आ रही है। इतने में महात्मा जी का हाथ हिला और मछली निकलकर नीचे गिर गई। इसी बात को संस्कृत लोक में कहा गया

जहाँ आचार की निर्मलता होती है वहाँ यथार्थ को स्वीकार किया जाता है, छुपाया नहीं जाता। दुनिया में अनेक प्रकार का ज्ञान है और अनेक प्रकार का आचार है। आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में उसी ज्ञान और आचार का महत्व है जिससे व्यक्ति राग से विराग की ओर प्रस्थान कर सके। सब के साथ मैत्री-भाव का विकास हो सके। कल्याणकारी कार्यों में आगे बढ़ सके। ज्ञान की समीचीनता व आचार की निर्मलता के द्वारा साधक अपनी साधना को सफल बना सकता है।

राष्ट्र चिन्तन

◆ कुछ वक्त से तरह-तरह के घोटालों का इतना शोर है और विपक्ष इतना आक्रामक है कि ऐसा लगता है, जैसे सरकार को समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करे। दरअसल समस्या कुछ करने की उतनी नहीं है, जितनी कि उस प्रभाव की है, जो जनता पर पड़ रहा है। सरकार की समस्या यह है कि वह शायद भ्रष्टाचार के मुद्दे पर उतनी निष्क्रिय नहीं है जितनी दिखाई दे रही है, लेकिन यह बात वह जनता तक पहुंचा नहीं पा रही है। लोकतांत्रिक प्रणाली में सरकार चलाने का मतलब सिर्फ काम करना नहीं होता, बल्कि जनता को यह जताना भी होता है कि सरकार क्या कर रही है या सरकार चलाने वाले लोग क्या सोच रहे हैं। जनता से संवाद लोकतंत्र का बेहद जरूरी हिस्सा है और इस स्तर पर यह सरकार खरी नहीं उतरी है। हम किसी भी समिति, चाहे वह लोक लेखा समिति हो या संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी), के सामने प्रस्तुत होने को तैयार हैं। इससे यह भी लगता है कि सरकार जेपीसी के गठन के लिए तैयार हो चुकी है। अगर ऐसा होता है तो विपक्ष को भी आक्रामकता छोड़ कर संसद के कामकाज में हिस्सा लेना चाहिए। आखिरकार सांसदों को चुना इसलिए ही जाता है कि वे संसद में मौजूद रह कर जनहित के मामलों पर बहस करेंगे।

डॉ. मनमोहन सिंह, *प्रधानमंत्री*

◆ जो गठबंधन सरकार भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे और जिसके कारण देश टुकड़े-टुकड़े में बंट जाए उसे चलाने से मना कर देना चाहिए। प्रधानमंत्री पर किसी ने व्यक्तिगत दोषारोपण नहीं किया है लेकिन वह ऐसा स्वीकार करते हैं तो दाल में कुछ काला है। भ्रष्टाचार इस वक्त देश का एक ज्वलंत मुद्दा है और बिहार की राजग सरकार इसे कतई बर्दाश्त नहीं करेगी।

नीतिश कुमार, *मुख्यमंत्री : बिहार*

◆ सरकार ने अगर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के गठन का ऐलान नहीं किया तो संसद की कार्यवाही नहीं चल पाएगी। विपक्ष जेपीसी के जांच के दायरे में 2जी घोटाले समेत एस बैंड डील और राष्ट्रमंडल खेलों में कथित घोटालों को भी शामिल करना चाहता है।

सुषमा स्वराज, *नेता प्रतिपक्ष*

www.terapanthinfo.com

मानवीय मूल्यों में अणुव्रत की भूमिका

देवेन्द्र कुमार हिरण

अणुव्रत दर्शन क्रांति का दर्शन हैं जो वह व्यक्ति को, समाज को एवं राष्ट्र को बदलना चाहता है। समाज और राष्ट्र का परिवर्तन व्यक्ति के परिवर्तन का ही फलित है। इसलिए अणुव्रत व्यक्ति निर्माण का उद्देश्य लेकर चल रहा है। अणुव्रत दर्शन की परिधि में कुछ प्राचीन मूल्यों का विघटन और नये मानदण्डों का स्थिरीकरण होता है। मानवीय और सामाजिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मानवीय एकता, समानता, स्वतंत्रता एवं सह-अस्तित्व में विश्वास होना नितांत अपेक्षित हैं। ये तत्व अणुव्रत दर्शन के प्राण हैं। इनके आधार पर ही मानवीय चेतना का विकास संभव है।

जिस समय देश में अनैतिक शक्तियों का प्रवाह तीव्र गति पर था और अधिकांश लोग उस प्रवाह में बह रहे थे उस समय अणुव्रत ने प्रतिश्रोत में चलने की पत सुझाई। एक बार कुछ अटपटा सा लगा किन्तु शीघ्र ही लोगों की समझ में आ गया कि प्रतिश्रोत गामिता के बिना समाज में क्रांति नहीं होगी और क्रांति के बिना सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन नहीं आयेगा। सामाजिक न्याय के लिए और लोक जीवन के लिए विचार क्रांति की बड़ी अपेक्षा है। इससे विचार प्रसार की भूमिका प्रशस्त होती है और व्यति को सोचने के लिए नया वातावरण मिलता है।

क्रांति का फलित है व्यापक स्तर पर होने वाला कोई बड़ा परिवर्तन। व्यक्ति जिस समाज में जीता है और जब उसकी व्यवस्थाओं और परम्पराओं में घुटन महसूस करता है, तब वह किसी नये मार्ग का अनुसरण करता है। वहां उसे अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है, फिर भी वह अपने लक्ष्य से प्रतिबद्ध रहता है। यह सामाजिक क्रांति है। जो व्यक्ति लक्ष्यच्युत हो जाता है, उसकी क्रांति सफल नहीं होती। सफल क्रांतिकारी वही होता है, जो हर मुसीबत को झेलता हुआ नई समाज व्यवस्था का निर्माण करके जाता है।

कुछ लोग क्रांति के साथ हिंसा की अनिवार्यता स्वीकार करते हैं। किन्तु अणुव्रत दर्शन के अनुसार वह क्रांति सफल नहीं, जिसमें हिंसा का सहारा लिया जाता है। क्रांति के साथ हिंसा का संबंध जोड़ने से वर्ग संघर्ष, जाति विग्रह, भाषा विवाद, प्रांतीय झगड़ों को भी क्रांति का रूप दिया जा सकता है, किन्तु परिवर्तन के अभाव में क्रांति का कोई अर्थ नहीं है। वर्षों तक केवल संघर्ष चलता रहे और परिवर्तन न हो वह क्रांति कैसी? अणुव्रत दर्शन पूर्ण रूप से अहिंसा पर आधारित है। वह कहता है जाति, वर्ग, भाषा, प्रांत के जो विवाद हैं, उन्हें अहिंसात्मक प्रतिरोध से समाप्त किया जाना चाहिए। अनैतिकता के भयंकर प्रवाह में बहते हुए जनमानस को नैतिकता की ओर मोड़ देना एक क्रांति है। अणुव्रत का प्रयास इसी ओर है।

अणुव्रत विचार क्रांति समाज में पर्याप्त विषमता का अन्त करना चाहता है और वह एक शोषणविहीन समाज रचना के लिए प्रयत्नशील है। लोकतंत्रीय शासन पद्धति के लिए यह आवश्यक है कि किसी का शोषण न हो। शोषण न श्रम का हो न समय का, न बुद्धि का हो, न किसी की दुर्बलता से अनुचित लाभ उठाने का। सब अपनी योग्यता के अनुसार काम करें और उपकरण सामग्री जुटायें। अनावश्यक एवं अतिरिक्त संग्रह समाज की स्वस्थता में बाधक हैं। संग्रह के कीटाणु इतने विषैले और संक्रामक हैं कि एक व्यक्ति की संग्रहपरक मनोवृत्ति से समाज प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

अणुव्रत का मूल उद्देश्य मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा अथवा नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास है। किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से यह आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्थाओं में भी संशोधन की भूमिका तैयार करता है। अनैतिक आचरण और दुर्व्यसनों के विरुद्ध एक आवाज उठाकर हमने अर्थव्यवस्था का संतुलन का आधार प्रस्तुत किया है। व्यवसाय के क्षेत्र में आचार संहिता के आधार पर व्यक्ति की अनैतिक और संग्रही मनोवृत्ति में संशोधन का संकेत है। अणुव्रत को आदर्श मानकर चलने वाले व्यक्ति के सामने संघर्ष की स्थिति पैदा हो सकती है पर वह संकल्प बल के सहारे हर संघर्ष को पार कर सकता है।

अणुव्रत दर्शन सम्प्रदाय निरपेक्ष दर्शन है। किसी भी सम्प्रदाय विशेष का व्यक्ति इसकी आचार संहिता के बारे में दो मत नहीं है जैन, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान, सिक्ख कोई भी अणुव्रती बन सकता है, जिनका जीवन की पवित्रता में विश्वास है। चारित्रिक मूल्यों के प्रति आस्था है। अणुव्रत का अनुसरण करने में कोई उपासना पद्धति बाधक नहीं है। क्योंकि अणुव्रत की कोई उपासना पद्धति है ही नहीं। वह उपासना की अपेक्षा आचार को अधिक महत्व देता है। आचार का प्रतिबिम्ब विचार जगत पर पड़ता है और विचारों का प्रभाव आचार पर होता है।

नारी जागरण में अणुव्रत ने अपनी एक विशिष्ट भूमिका निभाई है। जो भारतीय नारी गुलामी के दौर समाप्त होने के पश्चात भी विदेशी दासता की मानसिकता से मुक्त नहीं हो पायी, अणुव्रत ने उनमें नवीन प्रकाश का संचार किया। रूढ़ि प्रथा, पर्दा प्रथा आदि रूढ़ियों की जकड़न से नारी को बाहर निकालकर उनमें साहस एवं आत्मविश्वास का बीजारोपण किया। जिससे आज की

www.terapanthinfo.com

नारी न केवल शिक्षित हुई हैं, अपितु स्वयं जागृत होकर देश को जागृति का संदेश दे रही है। जिस नारी में कभी मंच पर खड़े होने की हिम्मत तक नहीं थी, आज वह हजारों की उपस्थिति में धारा प्रवाह अपनी अभिव्यक्ति देकर अपनी विद्वता और साहस का परिचय करवा रही है। इसके मूल में अणुव्रत की ही बुनियाद है।

सामाजिक जीवन और शिक्षा जगत में भी संयम उपेक्षित हो रहा है। फलस्वरूप मादक वस्तुओं का सेवन, छूत आदि व्यसन और सामाजिक कुरूढ़ियां अपने पांव फैला रही हैं। विद्यार्थी को प्रारंभ से ही प्रायोगिक रूप में ''संयम खलु जीवनम्'' का घोष सिखा दिया जाय और सामाजिक जीवन में उसे प्रतिष्ठित कर दिया जाये तो जीवन को नई दिशा और नया आयाम मिल सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में जीवन का प्रयोग को मूल्य देने और सम्मिलित करने का यही उद्देश्य है।

किसी भी प्रवृति, कार्यक्रम, संस्थान, समाज और राष्ट्र का संचालन करने वाला व्यक्ति होता है। उस व्यक्ति का चरित्र निर्माण न हो तो अच्छी से अच्छी व्यवस्था भी लड़खड़ा जाती है। व्यक्ति के चरित्र निर्माण का प्रयत्न बुनियादी सच्चाई है। अणुव्रत इस सच्चाई को सामने रखकर चल रहा है। उसकी घोषणा है ''सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा'' व्यक्ति के सुधार से ही समाज का सुधार संभव है। समाज सुधार की यात्रा राष्ट्र सुधार की दिशा में आगे बढ़ती है। समाज, राष्ट्र के निर्माण का सपना पूरी तरह व्यक्ति निर्माण पर टिका हुआ है। व्यक्ति का चरित्र निर्माण - अणुव्रत दर्शन का मूल आधार है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की विचार क्रांति के संदर्भ में कहा अणुव्रत मानवता की न्यूनतम मर्यादा है। वह असम्प्रदायिक धर्म है - वह मानव धर्म है और समस्याओं का समाधान है।

आचार्य तुलसी ने इस कल्पना को समूचे भारत के जनजीवन में प्रवेश देने का प्रयास किया। लाखों किलोमीटर की पदयात्रा के द्वारा गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक सारे देश का भ्रमण करते हुए गांव-गांव, घर-घर एवं व्यक्ति-व्यक्ति के पास पहुंच कर अणुव्रत की आचार संहिता को जो स्वस्थ समाज रचना की आचार संहिता है जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करते हुए आह्वान किया कि प्रत्येक व्यक्ति सही इन्सान बने, सही मानव बनें।

यह अणुव्रत की ही देन है कि आज देश की चुनाव प्रणाली में एक उल्लेखनीय मोड़ आया? तत्कालीन चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषण ने अणुव्रत की आचार संहिता को देखा, समझा और उसे कार्यरूप में परिणित करने का निर्णय किया। इतिहास गवाह है कि उनकी इस दृढ़निष्ठा एवं सूझबूझ के कारण ही चुनाव सुगम, स्वच्छ व सस्ते होने लगे। जिससे मतदाताओं में एक नवीन विश्वास का संचार हुआ। चुनाव की घोषणा होते ही ''आदर्श आचार संहिता'' लागू होती है। यह आचार संहिता अणुव्रत से प्रभावित संहिता ही तो हैं। जिसे परिवर्तित रूप में देश के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि अणुव्रत के द्वारा कितने बड़े परिवर्तन की संभावना बन सकती हैं। ये कितनी आदर्श स्थिति होगी, यदि सारा देश ही अणुव्रती बन जाये? यदि ऐसा हकीकत में संभव हो जाये तो देश की अस्सी प्रतिशत समस्याओं से निदान पाया जा सकता है और एक आदर्श व्यक्तित्व की परिकल्पना (जो नैतिक व चारित्रिक बल से युक्त हो) साकार हो सकती है। अणुव्रत दर्शन से ही प्रभावित होकर देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी यह इच्छा जतलाई कि मुझे यदि कोई पद दिया जाये तो मैं अणुव्रत के सेवक का पद लेना अधिक पसंद करूंगा।

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की आचार संहिता में बताया है कि मैं मानवीय एकता में विश्वास करता हूं। इसमें जातीय कट्टरता, जातीय संघर्ष एवं साम्प्रदायिकता बाधा डालती है। यही सब तोड़-फोड़ का कारण बनती हैं। वर्तमान में हम देखें तो यह जातीय संघर्ष जो अभी छोटे रूप में हैं, भविष्य में बड़ा होने पर मुश्किलें खड़ा करेंगी। एक जाति दूसरी जाति के विरोध में खड़ी हैं। अगर इसका विस्तार हुआ तो हमारा देश भारत जो विभिन्न जातियों विभिन्न संप्रदायों, विभिन्न धर्मों वाला देश है, ऐसी स्थिति में बड़ी भयावह स्थिति बन सकती है। एक समस्या बन सकती है और राष्ट्रीय अखण्डता को खतरा पैदा कर सकती हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में आचार्य तुलसी ने कहा अणुव्रत एक ऐसा दर्शन है, जो नये इंसान पैदा करने की पृष्ठ भूमि का निर्माण करता है। अणुव्रत रुग्ण मानवता के लिए संजीवनी है। अणुव्रत मानवीयता का प्रहरी है। अणुव्रत हृदय परिवर्तन का आंदोलन है। अणुव्रत शुद्ध भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। अणुव्रत एक ऐसा दीप है, जो हजारों दीप जला सकता है। अणुव्रत एक-एक व्यक्ति में फूटने वाली दिव्य ज्योति है। अणुव्रत मानता है कि जिस प्रकार शरीर की प्रत्येक धमनी में रक्त का संचार अपेक्षित है, उसी प्रकार जीवन के प्रत्येक पहलू में नैतिकता, मानवता, प्रामाणिकता और चारित्रिकता का बहाव अपेक्षित है।

अणुव्रत की आस्था व्यक्ति निर्माण में है। व्यक्ति जितना नैतिक, प्रामाणिक एवं आचार निष्ठ होगा, समाज और राष्ट्र भी उतना ही सुसंस्कृत एवं समृद्ध होगा।

अणुव्रत ने मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में अपनी सम्पूर्ण शक्ति का नियोजन किया है। महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। उसी का प्रतिफल है कि आज अणुव्रत की आचार संहिता एवं मानवीय आचार संहिता के सूत्र समूचे विश्व में आदरणीय हैं, स्मरणीय हैं।

अपेक्षा है कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना में अपने आपको भागीदार बनाये और उसी दिशा की ओर अपनी गति करे।

''देवरमण'', गंगापुर (भीलवाड़ा)
(राजस्थान) 311801

www.terapanthinfo.com

कहां ले जायेगी ये मिलावट की प्रवृत्ति

मुनि सुरेशकुमार

मानव की मानवता की शर्त है ईमानदारी-प्रामाणिकता। जब-जब प्रामाणिकता सिसकती है तब-तब जन्म लेता है आदमी के भीतर का हैवान। यही हैवानियत जीवन की शान्ति को छीन कर तनाव, अस्वास्थ्य और अशान्ति के गर्त में गिराती है।

यह कहना गलत नहीं होगा कि लगातार बढ़ती आबादी, सीमित होते पदार्थ और असीम आकांक्षायें ही नैतिकता की जड़ों को खोखला बना रही हैं। विकास विनाश की तरफ ले जा रहा है, संवेदना क्षीण होती जा रही है।

अभी हाल ही में अखबारों की सुर्खियां बनी ''सात सौ किलो नकली मावा जब्त'', ''सौ टन नकली घी का जखीरा पकड़ा'', ''मसालों में मिलावट का पर्दाफाश'' खबरें क्या बयान कर रही हैं, यही कि अब दुनिया में सौ प्रतिशत शुद्ध व पवित्र कुछ भी नहीं मिलेगा। आम से खास हर नागरिक शुद्ध पदार्थ पाने को तरस जायेगा। घी में चर्बी, आलू, सोयाबीन, मसालों में मिट्टी, काली मिर्च में पपीते के बीज, नकली दवा, नकली इंजेक्शन और न जाने क्या-क्या। कुछ नकली बाजारों तक पहुंच कर उपभोग करने वालों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से न केवल नुकसान पहुंचा रहे हैं बल्कि लाखों जिन्दगियां छीन रहे हैं।

इस संदर्भ में एक घटना बहुत प्रासंगिक व मार्मिक है

एक व्यक्ति हर रोज पत्नी की तू-तू, मैं-मैं से परेशान हो गया, जिन्दगी से उबरकर आत्महत्या करने का निर्णय करते हुए रात को सोने से पहले जहर खाकर सो गया। रात बीती। प्रभात हुआ, उठा! हैरान रह गया कि मैंने रात को जहर खाया था और अभी भी जिन्दा हूं। यह सब कैसे हुआ? ओह! मैं सपना तो नहीं देख रहा हूं। जानकारी ली तो पता लगा कि जिसे उसने जहर समझ कर खाया वह नकली था।

प्रत्यक्ष या परोक्षतः यह तथ्य सौ प्रतिशत सही है कि बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक या आध्यात्मिक ह्रास जितना इस मिलावट की प्रवृत्ति ने किया है उतना और किसी ने नहीं किया और इस प्रवृत्ति की आग में घी डालने की भूमिका निभाती है रुग्ण और स्वार्थी मनोदशा। लेकिन इस मनोदशा का खामियाजा देर-सबेर ही सही लेकिन भुगतान होगा।

युग पुरुष महावीर की आर्ष वाणी है ''कडाण कम्माण न मोक्खो अत्थि'' किये गये कर्मों से भोग के बिना छुटकारा नहीं मिलता। मिलावट के गोरख धन्धे में आज जिस धड़ल्ले से आम आदमी की पहुंच बन रही है क्या वह नारकीय जीवन की तरफ नहीं धकेलेगा, क्या देश की शक्ति का क्षरण नहीं होगा, क्या मानवता के हितों पर कुठाराघात नहीं होगा। एक समय था जब समूचा संसार हिन्दुस्तान की मिशाल दिया करता था कि यह देश बला की शक्ति संपन्न है, समृद्ध है। यहां ऋषि, मुनियों की त्याग और तपस्या की आध्यात्मिक संस्कृति मुखर है, अनैतिकता और भ्रष्टाचार आने से डरती है। लेकिन अब वो दिन लद गये, कोई भी विदेशी बचते-बचाते आता है। हर तरफ मिलावट की सड़ांध फैलने लगी है।

संवेदनहीनता ने इतनी गहरी जड़ें जमा ली हैं कि परोपकार, परार्थ भावना हाशिये पर गिर गई है और स्वार्थ सीना ताने खड़ा है। मेहनत-मजदूरी कर रोजी-रोटी का जतन करने वालों से लेकर देश की कमान संभालने वालों तक का एक बड़ा भाग भ्रष्टाचार की जड़ों को मजबूत बना रहा है। शुद्ध खान-पान के अभाव में शुद्ध आबोहवा की कल्पना ही नहीं की जा सकती और शुद्ध आबोहवा के बिना उत्तम स्वास्थ्य पाने का सपना भी बेमानी है।

अपना हित साधने के लिये, थोड़े से पैसों के लिये वो स्वार्थी लोग न जाने कितनी जिंदगियों को मौत के मुंह में धकेल देते हैं। अब हमारा देश भी भ्रष्टाचार की गिनती में आने लगा है। अखबारों की खबरों की ये पंक्तियां सचमुच हमारे धूमिल होते आदर्शों पर स्वयं शर्मिन्दगी का अहसास करवा रही है।

एक प्रेरक प्रसंग याद आ रहा है

भारत का एक दूध विक्रेता विदेश गया। संयोगवश वहां उसका प्रवास दूध विक्रेता परिवार में ही रहा। एक दिन उस दूध विक्रेता की बेटी ने उससे कहा पिताजी आज दूध का उत्पादन कम हुआ है अब ग्राहक को दूध सप्लाई कैसे करोगे। यह सुनते ही पिताजी के ललाट पर चिंता की लकीरें खिंच गयीं, वो कुछ समाधान निकाल पाते उससे पहले ही हिन्दुस्तानी ने तपाक से कहा इसमें चिंता करने जैसी क्या बात है। इसका समाधान बहुत आसान है ''ऐसा करो जितना दूध कम हुआ है उतना पानी मिला दो, बस हो गया समस्या का समाधान।''

हिन्दुस्तानी का इतना कहना हुआ और विदेशी लड़की आग बबूला होकर कहने लगी चले जाओ यहां से हम अपने वतन के लोगों की सेहत के साथ खिलवाड़ करने की सोचना तो दूर सपना भी नहीं ले सकते।

कितना घृणास्पद हो गया है हमारा चिंतन, कितना मतलबी हो गया है आदमी। वक्त की नब्ज पर हाथ रखकर आइये समाज को एक स्वस्थ परिवर्तन की ओर ले चलें, भ्रष्टाचार की जड़ों को खत्म कर दें।

अणुव्रत की आचार संहिता का एक छोटा-सा नियम ''मैं अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा, छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा। मैं खाद्य पदार्थों में मिलावट कर या नकली को असली बता कर नहीं बेचूंगा।'' अगर समाज का हर वर्ग इसे अपना ले तो सचमुच देश सच्चे सुख की ओर बढ़ सकेगा।

अणुव्रत नैतिक मूल्यों का जागरण

कृष्णचन्द टवाणी

अणुव्रत का अर्थ है अणु यानि छोटा व्रत, नियम अर्थात् अहिंसक एवं नैतिक चेतना जगाने वाला छोटे-छोटे नियमों का धर्म, ऐसा धर्म जो मनुष्य में मानवता लाने के लिए कार्य कर रहा है तथा भारत एवं विश्व के 192 देशों सहित संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक इसकी गूंज है। आजादी के बाद भारत देश में हुए हिन्दू-मुस्लिम दंगों एवं व्यक्तियों के नैतिक मूल्यों के गिरते व्यवहार से व्यथित होकर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी ने सन् 1949 में व्यक्ति को चरित्र-निर्माण का लक्ष्य देने के लिए अणुव्रत दर्शन की स्थापना की। जैन संघ के आचार्य होते हुए भी उन्होंने इसे वर्ण, जाति, रंगभेद एवं सम्प्रदायों से मुक्त रखकर हर मानव को इसे अपनाने का आह्वान किया।

अणुव्रत दर्शन मनुष्य को बदलने का दर्शन है। मनुष्य अपनी प्रकृति का निरीक्षण करे उसे समझे और उसमें परिवर्तन लाने के लिए अभ्यास करे। व्यक्ति का चरित्र निर्माण अणुव्रत दर्शन का मूल आधार है। अणुव्रत का दृष्टिकोण मुख्य रूप से व्यक्ति निर्माण का है। हमारी धर्म साधना का माध्यम उपासना है। केवल उपासना को धर्म मानने वाले धार्मिक व्यक्ति आज व्यापार व्यवसाय में अप्रामाणिकता बरतता है, मिलावट को सजावट का रूप दे रहा है, भ्रष्टाचार को शिष्टाचार बना रहा है एवं झूठ को व्यापार की कला बता रहा है एक तरह से उन सबको व्यापार-व्यवसाय का हिस्सा बना रहा है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से घोषणा की कि उपासना का स्थान दूसरा है, प्रथम स्थान धर्म का है और धर्म किसी को भी अनैतिक काम करने की इजाजत नहीं देता है।

अतः अणुव्रत एक शुद्ध धर्म है। इसकी घोषणा है ''सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।'' व्यक्ति के सुधार से समाज का सुधार संभव है। समाज सुधरेगा तो राष्ट्र-सुधार की दिशा में आगे बढ़ेगा। मूल बात यह है कि व्यक्ति में सुधार आ जायेगा तो समाज से राष्ट्र को न तो अनैतिक आचरण करने वाला राजनेता मिलेगा, न अप्रामाणिक व्यापारी व्यवसायी मिलेगा और न ही भ्रष्टाचार को शिष्टाचार मानने वाले मिलेंगे।

अणुव्रत का उद्देश्य है हमारे अंधियारे जीवन में उजाला करने का। अतः, अणुव्रत जीवन दर्शन भी है। अणुव्रत में शक्ति है संजीवनी है जो अज्ञानी व्यक्ति को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नई ऊर्जा देता है और उसे प्राणवान बनाता है। अणुव्रत का मंच सभी के लिए खुला है। अणुव्रतों के प्रति आस्था एवं रूचि जागृत होने पर ही अणुव्रतों का पालन हो सकता है। नैतिक मूल्यों एवं अहिंसक समाज की रचना के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आचार संहिता दी है। जो भी सुधि पाठक इस दर्शन से जुड़ना चाहता है उसे अणुव्रत आचार संहिता का पालन कर अपने दैनिक जीवन का विकास करना चाहिए।

वर्तमान में आचार्य तुलसी के उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ तो यहां तक कहते थे कि ''आज संसार में रोटी-पानी की अगर कमी है तो उसका कारण है नैतिकता का अभाव अगर मनुष्य में नैतिकता आ जाये तो संसार में रोटी की कमी नहीं रहेगी क्योंकि इसमें हर समस्या का समाधान करने की शक्ति विद्यमान है।'' दार्शनिक दृष्टि से और गहराई से चिंतन करें तो पता चलेगा कि जिसके होने से समस्याओं का समाधान होता है और जिसके न होने से समस्याएं उलझती हैं कभी सुलझती नहीं उसका नाम है नैतिकता और नैतिकता का नाम ही अणुव्रत है। अणुव्रत आचार संहिता है

1. मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।
   - आत्म-हत्या नहीं करूंगा।
   - भ्रूण-हत्या नहीं करूंगा।
2. मैं आक्रमण नहीं करूंगा।
   - आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा।
   - विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
3. मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।
4. मैं मानवीय एकता में विश्वास करूंगा।
   - जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को उच्च/निम्न नहीं मानूंगा।
   - अस्पृश्य नहीं मानूंगा।
5. मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा।
   - साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊंगा।
6. मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।
   - अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा।
   - छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा।
7. मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूंगा।
8. मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।
9. मैं सामाजिक कुरुढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।
10. मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊंगा।
    - मादक तथा नशीले पदार्थों शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूंगा।
11. मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।
    - हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा।
    - पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूंगा।

प्रधान संपादक : 'अध्यात्म अमृत', सिटी रोड, मदनगंज-किशनगढ़ (राजस्थान)

अणुव्रत : जीवन का यथार्थ दर्शन

कुसुम जैन

अणुव्रत जीवन का आधार है और जीवन की ऊंचाइयों तक पहुंचने का माध्यम। यह अध्यात्म की पृष्ठभूमि है और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा है। मानव समाज में नैतिकता को प्रस्थापित करने के लिए अणुव्रत की दिशा में पुरोगमन होना नितांत अपेक्षित है। शताब्दियों से जमे हुए रूढ़ संस्कारों, अर्थहीन मानदंडों और भौतिकी प्रवेश में पनपे मूल्यों को तोड़ने के लिए अणुव्रत परमाणु-विस्फोट से अधिक कार्यकारी हो सकता है।

अणुव्रत-दर्शन अतीत और भविष्य इन दो तटों के बीच बहने वाला सतत प्रवाही स्त्रोत है। जीवन की अवांछनीय वृत्तियों को अपने साथ बहाकर यह स्त्रोत की निर्मलता को अविवादास्पद रखने के लिए प्रयत्नशील है। अणुव्रत दमन में नहीं, शोध में विश्वास रखकर चलता है। दमित वृत्तियां अवकाश पाते ही फिर उभर आती हैं और व्यक्ति को अपने पथ से भटका देती हैं। शोधन जीवन विकास की प्रशस्त प्रक्रिया है। इसमें अनीप्सित वृत्तियों के तार-तार खुल जाते हैं और वे रूपांतरित होकर जीवन को उजागर कर देती हैं।

दमन में व्यक्तित्व दबता है और शोधन में वह वाष्प की तरह अधिक उपयोगी बन जाता है। जल का अनिरूद्ध प्रवाह प्रलय मचा देता है वही वाष्पीकरण से अनेक कल-कारखानों का नियंता बन जाता है। अणुव्रत-साधना से संशोधिक वृत्तियों की गति अंतर्मुखी हो जाती है। उससे जीवन में हल्कापन, उच्चता और उज्जवलता का प्रवेश होता है जो व्यक्ति के लिए काम्य है। अणुव्रत आचार-संहिता देशकाल आदि से अविच्छिन्न प्रकाश है। यह सूर्य के प्रकाश की भांति सबके लिए सुलभ है। जाति, वर्ण, लिंग, रंग आदि सीमाओं को तोड़कर अणुव्रत ने धर्मक्रांति के लिए प्रशस्त-भूमिका का निर्माण करने में सफलता प्राप्त की है।

अणुव्रत के मंच से धर्मक्रांति के पांच सूत्र उद्घोषित हुए बौद्धिकता, 2. प्रायोगिकता, 3. समाधान-परकता, 4. वर्तमान- प्रधानता, 5. धर्म-सद्भावना। इन पांच सूत्रों में रूढ़िवादी धर्म को उस परिधि से मुक्त कर बुद्धिवाद और प्रयोग की कसौटी पर कसने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रयत्न को जब तक समूह-चेतना का धरातल प्राप्त नहीं होता है, जीवन-विकास का क्रम आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक मनुष्य का दृष्टिकोण सम्यक् नहीं होता है, वह यथार्थ से अवगत नहीं हो सकता। अणुव्रत दर्शन दृष्टि-निर्माण का दर्शन है। सम्यक् दर्शन उस स्वच्छ दर्पण के समान है जो प्रत्येक वस्तु के सही प्रतिबिम्ब को ग्रहण कर लेता है। अणुव्रत न अतिवादी आदर्श की कल्पना है और न व्यवहार का लोप है। वह यथार्थ के ठोस धरातल पर मनुष्य को जीवन की कला सिखाता है। भगवान महावीर ने 2600 वर्ष पूर्व महाव्रत और अणुव्रत की जो धाराएं प्रवाहित की, उनमें से एक धारा की प्रस्तुति वर्तमान परिवेश में अणुव्रत आंदोलन के रूप में जानी जाती है। अणुव्रत का आधार समतावादी दृष्टिकोण है। जो व्यक्ति समता को समझ लेता है और समता से अनुप्राणित जीवन जीना चाहता है, वह न तो किसी का अहित कर सकता है, न किसी को सता सकता है, न आक्रमण कर सकता है और न आक्रामक नीति का समर्थन तथा तोड़फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग ले सकता है।

मानवीय एकता में विश्वास, समतापरक मनोवृत्ति की फलश्रुति है। इस फलान्विति में व्यक्ति न किसी को धोखा दे सकता है, न किसी का शोषण कर सकता है, न वह सत्य और न्याय को नकार सकता है तथा न आत्म-विमुख होकर कोई गलत काम कर सकता है। वह जिसके प्रति असत् चेष्टा करने का चिंतन करता है, उसे उसमें अपने असत् का बोध होता है। इस दृष्टि से अणुव्रत दर्शन समता का दर्शन है, आत्मोपम्य का दर्शन है, मानवता का दर्शन है और जीवन का दर्शन है।

अणुव्रत एक नैतिक आंदोलन है। वह जन-जन के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए नैतिक आचार-संहिता के आधार पर काम कर रहा है। अणुव्रत के अनुसार त्रिकोणात्मक अभियान के द्वारा अनैतिक वृत्तियों से जूझा जा सकता है। वे तीन कोण हैं प्रशासन, समाज और व्यक्ति। प्रशासन कानून के द्वारा किसी प्रवृत्ति को रोकना चाहे, उसमें सामाजिक और वैयक्तिक स्तर पर सहयोग नहीं मिला तो अनैतिकता का एक रास्ता अवरुद्ध होगा, चार नये रास्ते खुल जायेंगे। व्यक्ति नैतिक जीवन जीना चाहे, पर उसे समाज और प्रशासन की ओर से समुचित व्यवस्था न मिले तो वह पराभूत हो जाता है। इसलिए प्रशासन का काम है समुचित व्यवस्थाओं का निर्माण, समाज का काम है नैतिकता की दृष्टि से उपयुक्त मानदण्डों का निर्धारण और व्यक्ति का काम है, नैतिक मूल्यों के प्रति आस्थावान रहते हुए अपने जीवन में उनका क्रियान्वयन। प्रशासन, समाज और व्यक्ति अपने-अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहें तो कोई कारण नहीं कि राष्ट्र का स्तर ऊंचा न हो।

संविधान में विचार और अभिव्यक्ति के स्वातंत्र्य का अधिकार हो पर उस अधिकार के उपयोग में संयम और विवेक का पुट रहे, यह आवश्यकता है। शक्ति का संचय करने के लिए व्यक्ति अपने आपको किसी संगठन से जोड़ता है। संगठन धार्मिक हो, सामाजिक हो या राजनैतिक। उसमें हिंसा को प्रोत्साहन न मिले, यह ध्यान रखना जरूरी है। अर्थ जीविका का साधन है। व्यक्ति साधन जुटाता है, यह समाज-सम्मत है, पर संग्रह और शोषण की स्थिति हर दृष्टि से अवांछनीय है। नीतिकारों ने कहा है कि अर्थाजन के साधन दूषित नहीं होने चाहिये। अणुव्रत इस संदर्भ में प्रशासन और जनता दोनों को नैतिकता का पथ दिखाता है। उभयात्मक नैतिकता से ही जनतंत्र को सार्थकता मिल सकती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रति प्रामाणिक हो और दूसरे के प्रति रहने का संकल्प लें तो लोकतंत्र के उज्जवल भविष्य की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। अणुव्रत भय और आतंक से स्वीकृत अनुशासन को अंतःकरण से जोड़ना चाहता है। वह संदेह और अस्थिरता को विश्वास में परिणत करना चाहता है। इससे जनतंत्र की नींव गहरी होगी और जनतंत्र के अनुकूल परिवेश में अणुव्रत को अधिक काम करने की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी।

संपादिका : 'णाणसायर' (शोध पत्रिका)
बी-5/263 यमुना विहार,
दिल्ली-110053

संयम ही जीवन है

समणी शारदाप्रज्ञा

कंक्रीट के जंगल, सुविधायुक्त जीवन शैली, असीमित उपभोग्य पदार्थ का परिणाम धरती पर जीव जगत के विनाश के रूप में सामने आ रहा है। मनुष्य के अस्तित्व पर नित-नई मुसीबतें आ रही हैं। पर्यावरण विज्ञानी नित-नई घोषणाएं कर रहे हैं। वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग के सन्दर्भ में अपने अभिमत पेश कर रहे हैं। अध्ययन के मुताबिक इस सदी के अंत तक वैश्विक तापमान सात डिग्री सेल्सियस बढ़ जाएगा। परिणामस्वरूप अंटार्कटिका और ग्रीन लैण्ड में बड़ी मात्रा में बर्फ पिघलाकर समुद्रों के जलस्तर को बढ़ा देगी। समुद्रतट पर बसे शहरों को खतरा पैदा हो जाएगा।

वाशिंगटन विश्वविद्यालय के जलवायु विज्ञान विभाग द्वारा किए गए एक अध्ययन में इस बात की पुष्टि हुई है कि जलवायु परिवर्तन की बढ़ती समस्या इस सदी के अंत तक दुनिया की आधी आबादी को खाद्यान्न से वंचित कर सकती है।

कोलंबिया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक स्टीफन मोर्स के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव मलेरिया, फ्लू आदि बीमारियों को फैलाने वाला साबित होगा। लोगों को पहले से ज्यादा संक्रामक रोगों का सामना करना पड़ेगा।

दूसरी ओर कुछ वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग की जगह ग्लोबल कूलिंग का खतरा देख रहे हैं। न्यूयॉर्क में जलवायु पर हुई एक कॉन्फ्रेंस में नासा माइक्रोवेव साउंडिंग यूनिट तथा हेडले क्लाइमेट रिसर्च युष्टि ने इस बात को प्रस्तुत किया है कि धरती अब कूलिंग के दौर में प्रवेश कर रही है। उन्होंने बताया करीब 26 साल के अंतराल पर गर्म और ठंडे चक्र आते रहते हैं। गर्म चक्र के बाद अब ठंडे चक्र का समय है जो आने वाले दो दशकों तक रहेगा।

कूलिंग हो या वार्मिंग दोनों ही स्थितियां जीव जगत् के लिए भयावह है। बढ़ता जलस्तर, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण इन सबके लिए जिम्मेदार कौन है? ईमानदारी के साथ कहना पड़ेगा ''हम खुद।'' यह एक अलग मुद्दा है कि विकसित देश विकासशील देशों से कहते हैं वे ग्रीन हाउस गैसों कार्बन डाई-ऑक्साइड आदि के उत्सर्जन को नियंत्रित करें। विकासशील देश विकसित देशों पर वर्तमान स्थिति का उत्तरदायित्व डाल रहे हैं। मुख्य बात यह है कि मानव ने ही खुद अपने लिए यह खतरा पैदा किया है।

इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र महासचिव वान की मून का मंतव्य मननीय है आज ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु में बदलाव ने हमें विनाश के मुहाने पर ला खड़ा किया है। इसके लिए वास्तव में हम स्वयं ही जिम्मेदार है।

मानव विश्व की व्यवस्था में हस्तक्षेप कर रहा है यह हिंसा है। प्रकृति अपनी व्यवस्था से चल रही है उसे अपनी सुविधानुसार उपयोग करने की प्रवृत्ति घातक है। हिंसा का केन्द्रीय तत्त्व मानव स्वयं है। आचार्य तुलसी ने आयारों की अर्हत् वाणी के माध्यम से इस सत्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया है

विश्व व्यवस्था का जो अस्वीकारी-
अभ्याख्यानी।

वह अपने अस्तित्व सत्त्व का
अभ्याख्यानी।।

विश्व व्यस्था का सादर सम्मान -
विधायी।

वह अपने अस्तित्व सत्व का
अनुसंधायी।।

पर्यावरण सुरक्षा का वह स्वयं प्रमाणी।
आयारो की अर्हत् वाणी।।

भगवान महावीर ने हजारों वर्ष पूर्व मानव को चेतावनी दी थी मरना है तो मारो, जीना है तो मत मारो क्योंकि जिसे तू मारना चाहता है वह तू ही है। भगवान महावीर ने जीव जगत् की व्यापक और सूक्ष्म सत्ता को स्वीकार किया और उन्हें भी न मारने का निर्देश दिया। मानव ने उसका उल्लंघन किया और आज स्वयं विनाश के द्वार पर खड़ा है। भगवान की षड़जीवनिकाय की अवधारणा मौलिक एवं अस्तित्ववादी अवधारणा है।

पृथ्वीकाय पृथ्वी ही जिनका शरीर है, वे जीव।

अप्काय जल ही जिनका शरीर है, वे जीव।

तेजस्काय अग्नि ही जिनका शरीर है, वे जीव।

वायुकाय वायु ही जिनका शरीर है, वे जीव।

वनस्पतिकाय पेड़-पौधे, पत्तियां फूल आदि वनस्पति ही जिनका शरीर है, वे जीव।

त्रसकाय सुख की कामना और दुःख की निवृत्ति के लिए गमना गमन करने वाले जीव।

इन छः प्रकार के जीवों के प्रति संयम पर्यावरण-सुरक्षा का महत्वपूर्ण कदम है।

''अहिंसा निउणं दिट्ठा सव्वभूएसु संजमो।''

सब जीवों के प्रति संयम रखने को भगवान ने अहिंसा कहा है।

इस परिभाषा के अनुसार संयम और अहिंसा एक ही है। आचार्य तुलसी ने उद्घोषणा की संयम ही जीवन है। संयम से हम अपना ही नहीं दूसरों का जीवन भी सुरक्षित संरक्षित कर सकते है। यह हमें आज और अभी से ही करना होगा। वान की मून ने चेतावनी दी है यदि इस दिशा

में आज समय रहते ठोस प्रयास नहीं किए गए तो कल बहुत देर हो जाएगी। उस समय तक पर्यावरण संतुलन इतना गड़बड़ा जाएगा कि फिर उसको संभाल पाना किसी के बस में नहीं होगा।

ज्यादातर लोग आलीशान जीवन जीने के आदी हैं। उन्हें परवाह नहीं उनकी जीवन शैली का प्रभाव धरती तथा धरती पर रहने वाले अन्य प्राणियों पर क्या पड़ रहा है? हर व्यक्ति पर्यावरण के प्रति जागरूक हो तो अब भी बचाव की बहुत गुंजाइश है। हम अपनी जीवन शैली में संयम को स्थान दें।

संयम ही जीवन है। असंयम के कारण जीवन पर मंडराता खतरा हमारे सामने है। एक अनुमान के मुताबिक सन् 2050 तक पृथ्वी के 40 प्रतिशत जीव जन्तुओं का खात्मा हो जाएगा। इस अनुमान के पीछे है मानव की भोगवादी जीवन शैली। मानव अपनी जीवन शैली में संयम को अपनाकर करोड़ों टन कार्बन डाई-ऑक्साइड के उत्सर्जन को रोक सकता है, ऊर्जा को बचा सकता है। संयम के छोटे-छोटे नुस्खे जो पर्यावरण संरक्षण के लिए भी उपयोगी हैं

विद्युत संयम

● कार्य पूरा होने के बाद, कमरे से बाहर निकलते समय पंखा बत्ती तथा बिजली चलित उपकरणों का स्विच बंद करने की आदत डालें।

● हर समय एयरकंडीशनर को चालू न रखें। आवश्यकता होने पर इसका तापमान 24 डिग्री सेल्सियस पर रखा जाए।

● सी.एफ.एल. बल्ब का उपयोग उपयुक्त है।

● यथासंभव कम्प्यूटर और फोन दोनों का साथ-साथ प्रयोग न किया जाए।

● फ्रिज या फ्रीजर को चालू अवस्था में खाली न रखना ऊर्जा बचत का माध्यम है।

● टी.वी. को हर समय चालू न रखा जाए।

जल संयम

● शावर या नल न चलाकर पानी को बाल्टी में लेकर स्नान करने से जल का संयम होता है।

● शेविंग तथा ब्रश करते समय, चेहरा धोते समय पानी मग में लेकर इस्तेमाल किया जा सकता है।

● कार को पाइप से पानी डालकर धोने की बजाय बाल्टी में पानी लिया जा सकता है।

● लॉन में प्रयोग किया हुआ पानी भी काम में लेना उपयुक्त है।

● घरों में लो फ्लश - टॉयलेट का इस्तेमाल जल संयम का अच्छा उपाय है।

● बर्तन, कपड़े आदि की धुलाई तथा अन्य घरेलू काम करते समय नल खोलकर न रखें। आवश्यकतानुसार खोलें या टब, बाल्टी में पानी लेकर उपयोग करें।

वनस्पति संयम

● बड़े पेड़ न काटें, न कटवाएं। पौधों को भी न काटने की आदत डालें। फूल, पत्तियों के साथ भी अनावश्यक छेड़छाड़ न करें।

● कागज का दुरूपयोग न करें। सामान्यतया घरेलू कामों में एक तरफ खाली कागजों का प्रयोग करें। बच्चों को भी एक कार्य के लिए पुरानी कापियों के बचे हुए कागज इकट्ठा कर कॉपी बनाकर दें।

● ऑफिस में भी आवश्यक होने पर ही प्रिंट लें। प्रिंट कागज के दोनों ओर लें।

प्लास्टिक संयम

● लंच को प्लास्टिक पन्नी और एल्युमिनियिम फॉयल के बजाय पुनः उपयोग किए जाने वाले डिब्बों में पैक करें।

● प्लास्टिक बैग के स्थान पर पेपर या कपड़े का बैग इस्तेमाल करें।

● प्लास्टिक कचरे में वृद्धि करने वाले पदार्थों का उपयोग न करें।

● डिस्पोजल उत्पादों से यथासंभव परहेज करें।

वाहन संयम

● छोटी-छोटी दूरी के लिए वाहन प्रयोग न करें। पैदल चलने से सहज ही व्यायाम हो जाएगा। ईंधन की बचत तो होगी ही।

● कार-पूल वाहन संयम का अच्छा उपक्रम है।

● जहां रेल, बस आदि सामूहिक वाहनों की अच्छी व्यवस्था हो वहां यथासंभव व्यक्तिगत वाहनों से बचें।

ध्वनि संयम

● वाहनों के हॉर्न आवश्यकता से अधिक नहीं बजाएं।

● मोबाइल की रिंगटोन धीमी व मधुर रखें।

● कम बोलें, धीरे बोलें, मधुर बोलें।

● स्टीरियों, टेप, सी.डी. की आवाज धीमी रखें।

● घरेलू कार्यक्रमों में यथासंभव लाउडस्पीकर का उपयोग न करें।

व्यक्ति सबके साथ समानता का व्यवहार करे, किसी का अहित न करे, किसी को धोखा न दे यही सही जनतंत्र है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

भ्रष्टाचार का समाधान अणुव्रत से संभव

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

आज चतुर्दिक भ्रष्टाचार का ताण्डव दृष्टिगोचर हो रहा है। कॉमनवैल्थ खेल घोटाला, दूरसंचार घोटाला, आदर्श कॉलोनी घोटाला, जमीन घोटाला आदि ऐसे घोटाले हैं जो किसी भी देश को कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ सकते। बोफोर्स घोटाला और चारा घोटाला जैसी समस्या अभी तक समाहित नहीं हुई कि ये नये घोटाले कब तक भारतीय राजनीति को कलंकित करते रहेंगे इसके बारे में अभी कुछ कहना ख्याली पुलाव होगा। आदर्श कॉलोनी घोटाले ने भले ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अशोक चौहान की कुर्सी छीन ली हो और दूरसंचार घोटाले से डी. राजा को भले ही कैबिनेट मंत्रीपद गंवाना पड़ा हो और सीबीआई द्वारा उन्हें गिरफ्तार भी कर लिया गया है। किन्तु ये घटनाएं भ्रष्टाचार पर लगाम लगा सकेगी यह कहना ठीक नहीं होगा। जमीन घोटाले से जुड़े कर्नाटक के मुख्यमंत्री येदुरप्पा ने तो बेशर्मी की हद कर दी यह कहकर कि जब तक अपराध साबित नहीं हो जाता तब तक वे त्यागपत्र नहीं देंगे।

अच्छा खासा पद, अच्छी खासी तनख्वाह और अच्छा खासा रुतबा फिर भी उपर्युक्त लोगों को भ्रष्टचार करने की जरूरत क्यों पड़ी! यह एक अहम सवाल है? अच्छे कार्य करने की शपथ लेने वाले ये नेता, क्षेत्र के विकास का आश्वासन देने वाले जनप्रतिनिधि चुनाव जीतकर पद पर प्रतिष्ठित होकर सबकुछ क्यों भूल जाते हैं? क्यों उन्हें अपनी सात पीढ़ियों की चिंता सताने लगती है। जबकि वे स्वयं दूसरों को यह उपदेश देते हैं कि 'पूत कपूत तो का धन संचै, पूत सपूत तो का धन संचै। किन्तु सत्ता के मद में मदहोश ये नेता भ्रष्टाचार की सारी सीमाएं लाँघ जाते हैं। यही नहीं इन नेताओं के रहमोकरम पर पलने वाले क्षेत्रीय गुण्डों एवं माफिया

लोगों की हरकतों का कहना ही क्या? ये लोग क्षेत्रीय स्तर पर जितना मिलावट, ब्लैक मार्केटिंग, लूट-खसोट, मारपीट कर सकते हैं, बेरोकटोक करते हैं। अपने केन्द्रीय आकाओं के नाम पर करते हुए उन्हें कोई रोक नहीं पाता क्योंकि 'सैंया भये कोतवाल तो डर काहे का।' और यदि कोई ईमानदार अफसर रोकने की कोशिश करता है तो उसे रास्ते से ही हटा दिया जाता है। जब पूरा देश जोश-खरोश के साथ गणतंत्र दिवस मनाने की तैयारी कर रहा था तो गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर महाराष्ट्र के नासिक जिले के मनमाड कस्बे में खुल्लम-खुल्ला ऑयल डिपो में मिलावट को रोकने के लिए एडीशनल कलेक्टर यशवन्त सोनावणे ने छापा मारा तो उन पर पैट्रोल छिड़ककर जला दिया गया। एक ईमानदार अफसर को अपनी ईमानदारी की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। महाराष्ट्र सरकार ने अपने घड़ियाली आंसू बहाकर मानो अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली हो। यदि इसी प्रकार भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने वाले ईमानदार अफसरों को अपनी कुर्बानी देनी पड़ेगी तो भला कौन अफसर भ्रष्टाचार को रोकने का प्रयास करेगा। कुछ समय पहले एक अधिकारी मंजूनाथ को पैट्रोल पम्प पर छापा मारने की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी और राजस्थान के नागौर जिले के कलेक्टर डॉ. सामित शर्मा को ईमानदारी की कीमत ट्रांसफर से चुकानी पड़ी। लगभग सवा साल के कार्यकाल में डॉ. शर्मा ने वह सबकुछ करके दिखा दिया जो एक ईमानदार अफसर को करना चाहिए। जिले के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को समय पर ड्यूटी के लिए पाबन्द किया तो विभिन्न विभागों में भेष बदलकर वहां की कमजोरियों एवं विकृतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। सस्ती दर पर जेनेटिक दवाओं को उपलब्ध कराकर असंभव कार्य को संभव कर दिया। मिलावट, काला-बजारी एवं गुण्डागर्दी करने वालों पर मानों शामत आ गयी हो और जरूरतमंदों की फरियाद सुनकर तत्काल समाधान देते थे, ऐसे लोकप्रिय अफसर ने एक मंत्री के गलत धन्धे को रोकने की कोशिश की तो उन्हें नागौर से जयपुर भेज दिया गया। कौन कहे ऐसे आदर्श अफसर को पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित किया जाता, तबादला करके मानों उन्हें दण्डित किया गया हो। जिले की जनता रोती रही, उन्हें रोकने के लिए प्रदर्शन करती रही, किन्तु सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। कहते हैं कि मंत्री के दबाव में आकर मुख्यमंत्री ने डॉ. सामित शर्मा का ट्रान्सफर कर दिया और नागौर जिले की जनता को आहत कर दिया। ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा का दण्ड यदि ऐसे अफसरों को मिलता रहा तो कौन अफसर अच्छा करने का प्रयास करेगा।

ये कुछ लोग न केवल भ्रष्ट तरीके से पैसे का अर्जन करते हैं अपितु अर्जित अकूत धन को विदेशी बैंकों में सुरक्षित पहुंचा देते हैं। एक प्रामाणिक रिपोर्ट में आंकड़े प्रस्तुत करते हुए लिखा गया कि भारत का विदेशी बैंकों में इतना पैसा पड़ा

है यदि उसे वापिस लाया जाय तो सवा अरब की आबादी में प्रत्येक को 2000 की प्रतिमाह पेंशन साठ साल के लिए दी जा सकती है। इस आंकड़े से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत का कितना पैसा विदेशी बैंकों में जमा है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि सुप्रीम कोर्ट से फटकार खाने के बावजूद भी केन्द्र सरकार विदेशी बैंकों से यह पैसा लाने का प्रयास नहीं कर रही है और न ही उन लुटेरों का नाम ही उजागर कर पा रही है। ऐसी अक्षम, असमर्थ सरकार से भला भ्रष्टाचार रोकने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं। स्विस बैंक जूलियस बेयर के कर्मचारी रह चुके 55 वर्षीय रूडोल्फ एल्मर ने दुनियाभर के काले धन को सबके सामने लाने का संकल्प किया तो उसे जेल में डाल दिया गया है। विकीलिक्स ने जो कालेधन का चिट्ठा खोला है उसके स्रोत एल्मर ही हैं।

सचमुच भ्रष्टाचार भ्रष्ट तंत्र से फैलता है। भ्रष्ट तंत्र कोई आसमान से नहीं टपका है। तंत्र के पीछे व्यक्ति ही है और भ्रष्ट तंत्र के पीछे भ्रष्ट व्यक्ति है। अतः अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने व्यक्ति सुधार की बात कही थी। मंजूनाथ, यशवन्त और डॉ. सामित शर्मा ये व्यक्ति हैं जिन्होंने समाज के बीच एक आदर्श कायम किया। प्रथम दो को इसके लिए अपना बलिदान तक देना पड़ा। वे चाहते तो काजल की कोठरी में काले बनकर एशो-आराम की जिन्दगी व्यतीत कर सकते थे किन्तु उन्हें यह गंवारा नहीं था।

अणुव्रत की आचार-संहिता में एक सूत्र है "मैं आचरण एवं व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।" अणुव्रत का हार्द है "संयमः खलु जीवनम्" अर्थात् संयम ही जीवन है। प्रत्येक समस्या का कारण है व्यक्ति का असंयमी होना। यदि सभी व्यक्ति संयम व्रत को जीवन में उतारकर कार्य करें तो सभी समस्याएं स्वतः समाहित हो जायेगी। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर संग्रह की सीमा का निर्धारण कर ले और अप्रामाणिक तरीके से अर्जन को त्याग दे तो भ्रष्टाचार का नामोनिशान नहीं रहेगा। आचार्य तुलसी ने राष्ट्रीय चारित्र के निर्माण के लिए जिस अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने जिसका विस्तार किया और आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व में जिसे नयी दिशा मिल रही है, दुर्भाग्य से राज्य और केन्द्र सरकारों का सहयोग न मिलने से यह आंदोलन इतना कारगर नहीं हो सका जितनी कल्पना आचार्य तुलसी ने की थी। अतः आवश्यकता इस बात की है कि सत्ता के शीर्ष पर बैठे नेता इस आंदोलन की उपयोगिता को स्वीकार कर स्वयं आत्मसात करें और इसे राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप दें तो हमारा देश भ्रष्ट देश न कहलाकर स्वस्थ राष्ट्र कहलायेगा।

निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय,
लाडनूं (राजस्थान)

नई दृष्टि हो, नई सृष्टि हो अणुव्रतों के द्वारा

अणुव्रत अनुशास्ता
युवा मनीषी आचार्य श्री महाश्रमण

का

शत-शत अभिवन्दन

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा
श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल
वलसाड़ (गुजरात)

काश! भ्रष्टाचार को अणुव्रत की बोतल में कैद कर दिया जाता

हीरालाल छाजेड़

युगदृष्टा आचार्य तुलसी ने स्वतंत्रता के शैशव काल में ही इस बात पर पुरजोर प्रयत्न किया था कि देश की स्वाधीनता के साथ-साथ देशवासियों के चरित्र-उत्थान का कार्य सबसे प्रमुख है, उन्होंने कहा था "असली आजादी अपनाओ" देश के प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र स्वच्छ बनने से ही आजादी का स्वाद चखा जा सकेगा, अगर उस समय उनकी बात मानकर राष्ट्र के कर्णधार भ्रष्टाचार के इस दैत्य को अणुव्रत रूपी बोतल (जो आचार्य तुलसी ने उस समय प्रदान की थी।) में बंद कर दिया जाता तो आज भ्रष्टाचार का यह दैत्य बेकाबू नहीं हो पाता। आज हमारा देश विश्व के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच जाता।

आज पूरा राष्ट्र भ्रष्टाचार के दावानल में जल रहा है किसी को रास्ता नहीं सूझ रहा है। प्रतिदिन घोटालों के समाचारों से समाचार-पत्र भरे रहते हैं। भारत ने 60 साल में 205 खरब रुपये (462 बिलयन डॉलर) भ्रष्टाचार अपराध और टैक्स चोरी के कारण गंवायें हैं। वाशिंगटन में हुए एक अध्ययन में यह बात सामने आई है।

अध्ययन के अनुसार भारत को कुल 462 बिलियन डॉलर का नुकसान 1948 से 2008 के बीच में हुआ है, जो भारत पर विदेशी कर्ज (230 अरब डॉलर) से दोगुना है। इस रकम का बड़ा हिस्सा विदेश भेजा गया है। संस्था के निदेशक रेमंड्स बेकर ने कहा कि इसके कारण गरीब और अमीर के बीच की खाई काफी बढ़ गई है। 1948 के बाद से ही भारत के भ्रष्टाचारियों ने उन देशों में धन जमा करना शुरू कर दिया, जहां इस मामले में पूरी गोपनीयता बरती जाती है।

अणुव्रत का जो मार्ग हमें आचार्य तुलसी ने आज से 60 वर्ष पूर्व दिखाया था, उस पर चलकर आने वाली अगली पीढ़ी के लिए बेहतर भारत छोड़ें ताकि उनके बच्चे कह सकें कि हां घोटाले कोई ऐसी चीज थी जिसके बारे में वह भ्रष्टासुर के बारे में हमारे पितामह बात किया करते थे। आचार्य तुलसी का यह नारा "सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा" सत्य साबित हो सकेगा।

विदेशों में भेजी जाने वाली यह रकम भारत के जीडीपी का 40 फीसदी है। विदेशों में अवैध रूप से भेजे जा रहे भारतीय धन में हर वर्ष 11.6 प्रतिशत की दर से बढ़ोतरी हो रही है। भारत में आर्थिक सुधार करीब दो दशक पहले शुरू हुए थे और माना जा रहा था कि विदेश में जमा किये जाने वाले काले धन पर अंकुश लगेगा, लेकिन यह भी गलत साबित हुआ।

भ्रष्टाचार ने सभी क्षेत्रों में अपनी जबर्दस्त घुसपैठ कर ली है। पूर्व नौ सेना प्रमुख विष्णु भागवत ने गत दिनों स्पष्ट कहा कि देश का रक्षा मंत्रालय सबसे भ्रष्ट है। हथियारों की खरीद विदेशों से होती है और करोड़ों-अरबों की खरीददारी में करोड़ों की दलाली भी बनती है। चाहे वह पनडुब्बी हो अथवा एयरक्राफ्ट्स या कुछ और, दलाल अपने हाथ धो ही लेते हैं।

स्वास्थ्य, गृह, शिक्षा, रेलवे, सड़क परिवहन, सिंचाई और संचार मंत्रालय किस-किस के घोटालों का उल्लेख करें। अब तो केवल यह खोजना पड़ेगा कि कौन-सा क्षेत्र इस भ्रष्टासुर से बचा हुआ है। गरीब विद्यार्थियों हेतु करोड़ों रुपयों की पुस्तकें आयीं किन्तु जिन्हें जरूरत थी उन तक न पहुंच कर रद्दी में बेच दी गयी। सरकारी दवाखानों से दवाइयां मेडिकल स्टोर्स, निजी अस्पतालों, रिश्तेदारों तक पहुंच जाती हैं। सरकारी उपक्रमों की तरह निजी उपक्रमों में भी फर्जी बिलों द्वारा भ्रष्टाचार हो रहा है मिल-बांट कर खाने वाली परंपरा भलीभांति स्थापित हो चुकी है। आपसी मतभेदों और दलाली के बंटवारे में गड़बड़ियां ही भंडाफोड़ करती हैं अन्यथा पता लगाना बहुत कठिन है। गरीबों का शोषण सुनियोजित तरीके से सर्वत्र जारी है। 60 रुपये न्यूनतम मजदूरी दर निर्धारित है। बावजूद उसके मजदूरों को 40 से 50 रुपये ही दिये जाते हैं और अंगूठे 60 रुपये के लगवाये जाते हैं। ठेकेदारी पद्धति ने निजी क्षेत्रों के प्रबंधकों की तो मानो लॉटरी लगा दी। मालिक भी जानते हैं कि उनके वफादार कहां-कहां गड्ढे खोद रहे हैं किन्तु उनकी भी मजबूरी है। एक मजबूर दूसरे मजबूर का बिगाड़ ही क्या सकता है।

किसी को किसी का भय नहीं : क्योंकि नीचे से ऊपर तक सभी भ्रष्ट हैं। वरिष्ठ अधिकारियों की निजी ताकत, आर्थिक शक्ति दिनोंदिन बढ़ रही है। पहले

मंत्रियों का भय रहता था, किंतु आजकल कोई भय नहीं रहा। अधिकारियों की मंत्रियों से, सचिवालयों के दलालों से सीधी मिलीभगत जो है। इसीलिए अब घोटाले भी सामान्य करोड़ों में नहीं कई लाख करोड़ों तक पहुंच गये हैं। अभी इन दिनों जो घोटाले मीडिया में बार-बार आने वाली खबरों पर छाए हुए हैं। संचार मंत्री पर एक लाख 76 हजार करोड़ का सरकारी खजाने को चूना लगाने का ताजा घोटाला सामने आया है। सभी आंकड़े चौकाने वाले हैं।

पिछले कुछ महिनों से मीडिया पर बार-बार आने वाली घोटाले की खबरों से आम आदमी की चेतना को मथने लगी है, विशाल मध्यवर्ग को समझ में आ गया है कि आखिर क्या चल रहा है। अपनी सफलता से खुश मीडिया अगले घोटाले के पीछे शिकारी कुत्ते की तरह पड़ा रहता है। जो अपना पूरा कर्त्तव्य निभा रहा है। इसीलिए आज राजनीति से जुड़े लोग भी मीडिया से बहुत डरते हैं।

आतंकवादी का कोई मजहब नहीं होता, वैसे ही भ्रष्ट राजनीतिज्ञ की कोई राजनीतिक पार्टी नहीं होती। अगर सभी पार्टियां, मीडिया, धर्मगुरु सामाजिक संस्थाएं आप और हम, भारत के लोग मिलजुलकर अपनी भूमिका सही ढंग से निभाएं, तभी देश को इस भ्रष्टासुर के चंगुल से निकालने में कुछ हद तक सफलता मिल सकती है। आइए! अणुव्रत का जो मार्ग हमें आचार्य श्री तुलसी ने आज से 60 वर्ष पूर्व दिखाया था, उस पर चलकर आने वाली अगली पीढ़ी के लिए बेहतर भारत छोड़ें ताकि उनके बच्चे कह सकें कि हां घोटाले कोई ऐसी चीज थी जिसके बारे में वह भ्रष्टासुर के बारे में हमारे पितामह बात किया करते थे। आचार्य तुलसी का यह नारा ''सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा'' सत्य साबित हो सकेगा।

अगर देश से बाहर स्विस बैंकों में जमा काला धन देश में ला सकें तो देश की गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी और हिंसा सभी का समाधान एक साथ हो जायेगा। देश में फिर कोई समस्या ही नहीं रह जायेगी। सभी संगठनों को राजनैतिक नेताओं को कुर्सी से ऊपर उठकर, भ्रष्टाचार के मुद्दों को लेकर अपनी राजनीति की रोटियां नहीं सेंककर एकजुट हो सत्ता पक्ष एवं विपक्ष को मिलकर भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाना होगा। तभी देश का भविष्य उज्जवल होगा देश खुशहाल तो देशवासी खुशहाल। संसद में हो-हल्ला करके संसद की कार्यवाही ठप्प या बाधित करने से क्या हॉसिल होगा। भ्रष्टाचार के द्वारा सरकार के राजस्व खाते में आई कमी को संसद में गतिरोध कर करोड़ों रुपये का नुकसान का चढ़ावा चढ़ जायेगा। देश के सभी कर्णधारों, विद्याताओं को प्रभु सन्मति दे।

जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार,
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)

गुण और कर्म

पेड़ों पर जब फल लगें, झुकते पेड़ महान।
गुणी मनुज विनयी बनें, यह उनकी पहचान।।

जो उपयोगी काम है, उसमें डालो हाथ।
उसमें निश्चित सफलता, मिले सत्य का साथ।।

धैर्य और उत्साह ही, हैं उन्नति के मूल।
जीवन-धारा बह रही, ये दो सुंदर फूल।।

जाति धर्म से है बड़ी, सत्य न्याय की बात।
जो इसको माने नहीं, वह सहता आघात।।

प्रेम और सद्भावना, हैं संस्कृति के फूल।
जो अपनाता है नहीं, उसको चुभते शूल।।

सबको सुख की चाहना, किन्तु न सुख मिल पाय।
इसका एक उपाय है, परहित से सुख आय।।

दीवारों के कान हैं, निंदा करना भूल।
उन्हें पता लग जायेगा, वे होंगे प्रतिकूल।।

हिंसा से हिंसा बढ़े, और प्रेम से प्रेम।
जहां जगत में प्रेम है, वहां सदा ही क्षेम।।

तन-मन में दृढ़ता नहीं, जीवन डांवाडोल।
जब जीवन ही ना टिके, फिर उसका क्या मोल?

लेखन में परहित भरा, वह तो है साहित्य।
अंधकार को जो हरे, वह तो है आदित्य।।

● मोहन उपाध्याय
26/117, क्रिश्चियनगंज, विकासपुरी
अजमेर - 305001 (राजस्थान)

दागदार खद्दर और खाकी

आशीष वशिष्ठ

जब बात खद्दर और खाकी की चलती है तो सारा देश सस्वर दोनों को भला-बुरा कहता है शायद ये अकेला ऐसा मामला होगा जिसमें बिना किसी भेदभाव और राजनीति के सारा देश एक मंच पर खड़ा दिखाई देता है। पिछले दो-तीन दशकों में खद्दर और खाकी की चाल, चेहरा और चरित्र इतना दागदार हुआ है कि देश के आम आदमी का विश्वास इनसे उठ चुका है और वो खद्दर और खाकी को संदेह की नजर से देखने लगा है। खद्दर और खाकी अपनी दुर्गति के लिए खुद ही जिम्मेदार हैं और आज स्थिति यह आ चुकी है कि खद्दर और खाकी को बिना किसी हिचक के जनता महाभ्रष्ट, चोर, डकैत, लुटेरा न जाने किस-किस उपाधि से आए दिन विभूषित करती रहती है। जो खद्दर किसी जमाने में जनता और देश की सेवा और बलिदान का प्रतीक माना जाता था आज वही खद्दर चोरी, मक्कारी, और भ्रष्टचार का मामूली कपड़े में तब्दील हो चुका है। देश के आम आदमी की नजर में नेताओं की अहमियत दो पैसे की भी नहीं है और पुलिस का हाल तो इतना बुरा है कि उन्हें तो बीड़ी और चाय पिलाकर या फिर दस-बीस रूपये देकर खरीदा जा सकता है। खद्दर और खाकी पहनकर चाहे कोई शख्स कितनी भी ईमानदारी और मेहनत से जीवन बसर करता हो लेकिन आज इन दोनों की आम छवि इतनी धूमिल हो चुकी है कि इन दोनों को पूरा देश बेईमान और चोर ही समझता है और इनके विरूद्ध असंसदीय भाषा का प्रयोग खुलकर करता है। अपवाद स्वरूप साफ-सुथरी छवि, ईमानदार, कर्मठ, कर्त्तव्यपरायण नेता और पुलिसवाले भी देश में विद्यमान हैं जिनकी बदौलत कुछ भले काम हो भी रहे हैं लेकिन इन महानुभावों की संख्या उंगुलियों पर गिनी जा सकती है बेईमान, भ्रष्टों और मक्कारों की भीड़ में चंद ईमानदारी के प्रयास प्रभावी और व्यापक तौर पर दिखाई नहीं देते हैं। खद्दर और खाकी के प्रति देश के आम आदमी के प्रति रोष दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है जो किसी भी समय विस्फोटक रूप धारण कर सकता है।

आजादी की लड़ाई के दौरान नेताओं के आह्वान पर लोग घर-बाहर, जमीन-जायदाद, शिक्षा-कैरियर, धन-संपदा, सुख-आराम, और यहां तक अपनी बीवी-बच्चों को छोड़कर निःस्वार्थ भाव से देश की आजादी के लिए सालों जेल में बिता दिया करते थे या फिर हंसते-हंसते अपने प्राणों की आहुति भी दे डालते थे। आजादी के पहले खद्दर की जितनी प्रतिष्ठा, मान-सम्मान थी उतनी इज्जत दुनिया के किसी भी देश में किसी नेता की नहीं रही होगी। लेकिन जैसे-जैसे देश प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हुआ वैसे-वैसे हमारे नेता स्वार्थी, लालची, सत्तासुख के भोगी और ऐसे आराम तलब हुए कि उनमें एक साथ कई विकार पैदा हो गए और एक बार सन्मार्ग से हटने के बाद उनकी गाड़ी हमेशा कुमार्ग पर ही दौड़ने लगी। जनता तो भोली-भाली, अशिक्षित और अनजान है उसकी ताकत का जैसे चाहो निजी हित साधने के लिए उपयोग करते रहो। वोट डालने के बाद जनता की औकात लौटे बाराती जैसी ही होती है। भाई-भतीजावाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयता, भाषा-बोली, जात-बिरादरी की ओछी और घटिया मानसिकता से राजनीति के अखाड़े में उतरे तथाकथित माफियाओं, गुण्डों और बदमाशों ने राजनीति को पैसा कमाने और कानून के डण्डे से बचने का सबसे आसान साधन बना लिया और माफिया से माननीय बन जनता के गाढ़े खून-पसीने की कमाई से खूब मौज की। देखा-देखी राजनीति का पूरा तालाब ही गंदला गया और हर दूसरा खद्दरधारी देश में लूट खसोट करने लगा। आजादी के बाद से अब तक हुए सैंकड़ों छोटे बड़े घोटालों का इतिहास खंगाल कर देख लीजिए खद्दरधारियों की भूमिका कहीं न कहीं संदिग्ध नजर आएगी। ये बात और है कि मोहरा किसी और को बना दिया जाए लेकिन पर्दे के पीछे कोई खद्दरधारी ही मिलेगा इस बात का आपको मानना ही पड़ेगा। चारा घोटला, बोफोर्स कांड, ताबूत घोटाला जैसे बहुचर्चित घोटालों और कांडों के साथ ही साथ हाल ही में उजागर हुए कॉमनवैल्थ गेम्स घोटाला, 2जी स्पेक्ट्रम और आदर्श सोसायटी घोटाले में खद्दरधारियों की भूमिका सारे देश के सामने उजागर हो चुकी है। देश की विभिन्न विधानसभाओं और संसद के अंदर सैंकड़ों अपराधी प्रवेश कर चुके हैं। दर्जनों तथाकथित माननीय बलात्कार और अन्य संगीन अपराधों में लिप्त हैं। आजादी पाने के लिए खद्दरधारियों की महती भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता है लेकिन पिछले तीन-चार दशकों में राजनीति

समय रहते खद्दर और खाकी को अपनी छवि को साफ सुथरा करने और जनता के विश्वास को पुनः बहाल करने का प्रयास करना होगा वरना दुःखी और पीड़ित जनता अलगावाद, नक्सलवाद या फिर आंतकवाद के बुरे रास्ते पर चल पड़ी तो लोक और तंत्र दोनों को बुरे परिणाम भुगतने होंगे।

के चरित्र में आई भारी गिरावट से देश के आम आदमी का विश्वास नेताओं से उठ चुका है और लोग नेताओं को हिकारत की नजर से देखते हैं। आज राजनीति धंधे का रूप ले चुकी है और काली कमाई और काले कारनामों को ढकने का साधन भी।

खद्दरधारियों की देखा-देखी खाकी ने भी अपनी चाल और चरित्र तय किया और खद्दरधारियों का संरक्षण और छत्र-छाया में नंगा नाच करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। चौराहे पर खड़े एक अदने से सिपाही से लेकर पुलिस के आला अफसर तक भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। देश में आज खाकी अराजक, स्वच्छंद और बेलगाम हो चुकी है। अपने राजनीतिक आकाओं के अलावा उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता है। जिस खाकी के कंधों पर आम आदमी की सुरक्षा का भारी जिम्मा है वही खाकी आम आदमी को सबसे अधिक सताती है। मानवाधिकार हनन के सैंकड़ों मामले पुलिस वालों के खिलाफ दर्ज हैं और आए दिन पुलिस वालों पर गुण्डों का साथ और मिलीभगत के आरोप लगते रहते हैं। बावजूद इसके खाकी के कान पर जूं नहीं रेंगती। अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में खाकी और खद्दर की मिलीभगत का जो कारनामा सारे देश के सामने आया है उसने खाकी को दागदार नहीं तार-तार कर दिया है। बलात्कार की पीड़ित एक गरीब लड़की को न्याय दिलाने की बजाय पुलिस के आला अधिकारी दोषी विधायक को बचाने और उसके काले कारनामों पर पर्दा डालने का यत्न करते रहे। विधायक के इशारे पर पीड़ित लड़की को चोरी के झूठे मुकद्मे में फंसाकर जेल की सलाखों की पीछे धकेलने का कुत्सित काम करने से भी खाकी बाज नहीं आई। ये है खाकी की असली सूरत और हकीकत। बांदा रेप मामले की भांति कानपुर के दिव्या मामले में भी पुलिस के आला अधिकारियों की दागदार छवि उजागर हो चुकी है। ये मामले तो बस बानगी भर हैं लगभग हर मामले में पुलिस रसूख वाले के सामने हाथ जोड़े और दिशा-निर्देश मांगती नजर आती है। जिस थानेदार का डंडा गरीब और आम आदमी पर शेर की भांति दहाड़ा और रोब गांठता है वही थानेदार माननीयों और रसूख वालों के सामने मेमना बन जाता है।

यूपी के शीलू बलात्कार कांड की भांति लगभग हर छोटे-बड़े मामले में पुलिस पीड़ित को ही तंग और परेशान करती है। क्योंकि उसे पता है कि जब तक उनके खद्दरधारी आकाओं का संरक्षण उन्हें प्राप्त रहेगा तब तक जनता उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती है इसलिए एस.पी. से लेकर थानेदार तक क्षेत्रीय एम.पी., एम.एल.ए. और सभासद की चमचागिरी करना ही अपना धर्म और कर्म समझता है। जब खद्दर और खाकी दोनों दूध शक्कर की तरह घुल-मिल जाते हैं तो मिलकर दादागिरी, गुण्डागर्दी और इंसानियत की सारे हदें पार कर जाते हैं। पुलिस वाले देश के हर चौराहे पर सरे आम वसूली करते हैं और थाने या पुलिस चौकी में बिना कुछ लिए-दिए कोई काम न करने का रिवाज बन चुका है। पुलिस मकहमे जितना खुला भ्रष्टाचार किसी दूसरे मकहमे में शायद नहीं है। पुलिस वाले तो लाश से कफन नोचने से भी नहीं हिचकते हैं ये वो कड़वी हकीकत है जिसे सारा देश बखूबी जानता-समझता है। देश में अपराधियों का बढ़ता हौंसला और क्राइम रेट, मानवाधिकार हनन के मामले, जेल और पुलिस हिरासत से अपराधियों के भागने की बढ़ती घटनाएं, पुलिस वालों का अनैतिक, अमानवीय और गैर कानूनी आचरण, भ्रष्टाचारं, आमजन का पुलिस पर बढ़ता अविश्वास ये दर्शाते हैं कि हमारे देश की पुलिस कितनी अकर्मण्य, भ्रष्ट, गैर जिम्मेदाराना और अनैतिक हो चुकी है। खाकी के पास अपने बचाव के लिए दर्जनों तर्क हो सकते हैं लेकिन पुलिस की छवि और चरित्र में भारी गिरावट आई है इससे इंकार नहीं किया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि सारा अमला ही भ्रष्टाचार की चपेट में आ चुका है लेकिन दो-चार ईमानदारों के दम पर पूरे देश को सुधारने की बात सोचना भी तो बेमानी ही है। वैसे भी ईमानदार पुलिस अफसरों को इतने महत्वहीन स्थानों पर पोस्ट किया जाता है जहां उनके पास आम आदमी का भला करने के लिए कुछ अधिक होता ही नहीं है।

खद्दर और खाकी का स्वच्छंद और उनमुक्त व्यवहार लोकतंत्र के सबसे बड़ा खतरा बनकर उभर रहा है। जिन के हाथों में देश और कानून की बागडोर है अगर उन्हीं पर देश की जनता का विश्वास न हो तो हालात सामान्य नहीं कहे जा सकते हैं। आज देश के आधा दर्जन से अधिक राज्यों में नक्सली अपने पैर जमा चुके हैं और वहां नक्सली सामांतर सरकार चलाते हैं। नक्सलियों को स्थानीय जनता और ग्रामीणों का समर्थन प्राप्त है तभी तो वो उन इलाकों में बेखौफ घूमते हैं और नेताओं और पुलिस वालों से अधिक

नक्सलियों पर भरोसा और विश्वास रखते हैं। सरकार चाहे कुछ भी दावे या दलीले पेश करें लेकिन ये सच्चाई है कि देश के पिछड़े राज्यों और क्षेत्रों में नक्सलवाद की समस्या ही पैर जमा रही है और वो धीरे-धीरे पंजाब, हरियाण और उत्तराखण्ड जैसे राज्यों में पांव फैलाने की तैयारी कर रही है। असल में जिन क्षेत्रों में नेताओं का संपर्क कटा हुआ है और प्रशासानिक अधिकारी जहां झांकने का कष्ट नहीं उठाते हैं उन क्षेत्रों में थानेदार अपने आपकों कलेक्टर से ऊपर ही समझता है और मनमर्जी से कानून का डण्डा चलाता है। ऐसे में पुलिस प्रशासन से पीड़ित भोले भाले, अनपढ़ ग्रामीण नक्सलियों की शरण में चले जाते हैं और उनके सहायक बनकर खाकी और खद्दर से नफरत करने लगते हैं। नक्सल प्रभावित इलाकों के साथ ही साथ देश के अन्य हिस्सों में भी खद्दर और खाकी के प्रति गुस्सा दिनोंदिन बढ़ता और गहराता जा रहा है।

पुलिस और नेताओं की दागदार छवि उन्हें देश की जनता से अलग-थलग कर रही है। हालात इस कदर बिगड़ चुके हैं कि किसी सिफारिश या संपर्क के बिना कोई भला आदमी अकेले थाने नहीं जाता है। वैसे तो हर राज्य की पुलिस मित्र पुलिस होने का बढ़-चढ़ कर दावा करती हैं लेकिन मित्र पुलिस की मित्रता आम जनता को कितनी मंहगी पड़ती है ये तो पुलिस के चंगुल में फंसने पर ही पता चलता है। जनता के दिलो-दिमाग में पुलिस की छवि इतनी खराब हो चुकी है कि उसे लगता ही नहीं है कि कोई पुलिस वाला ईमानदारी से उसकी मदद करेगा और उसे संकट से उबारेगा। एक ओर जहां पुलिस से आम आदमी बचता फिरता है वहीं दूसरी और नेताओं के पास आम आदमी से मिलने की फुसर्त ही नहीं है ऐसे हालात में आम आदमी न्याय की उम्मीद में गलत तत्वों के हाथ का खिलौना बन जाता है। गरीबी, अज्ञानता, अशिक्षा, पिछड़ेपन और राजनीतिक जागरूकता के अभाव में खद्दर और खाकी देश की जनता को जानवर से अधिक नहीं समझते हैं। पिछले छः दशकों का रिपोर्ट कार्ड अगर देखा जाए तो इक्का-दुक्का सद्कार्यों को छोडकर एक भी ऐसा वाकया आपको याद नहीं होगा जब खद्दर और खाकी ने निःस्वार्थ भाव से पूरी ईमानदारी के साथ देश की जनता और न्याय का साथ दिया हो। वास्तविकता तो यह है कि हर बार दोनों गुनाहगार और गलत के साथ ही देते नजर आए हैं। ऐसा नहीं है कि खद्दर और खाकी कुछ कर पाने में सक्षम नहीं है। अगर खद्दर और खाकी का गठजोड़ चाहे तो देश में उन्नति और विकास के नये रास्ते खोल सकता है लेकिन आज आम आदमी का इन दोनों पर नाममात्र का विश्वास भी नहीं रह गया है। समय रहते खद्दर और खाकी को अपनी छवि को साफ सुथरा करने और जनता के विश्वास को पुनः बहाल करने का प्रयास करना होगा वरना दुःखी और पीड़ित जनता अलगावाद, नक्सलवाद या फिर आंतकवाद के बुरे रास्ते पर चल पड़ी तो लोक और तंत्र दोनों को बुरे परिणाम भुगतने होंगे।

स्वतंत्र पत्रकार, बी-96, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016 (उ.प्र.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रही छह दवाओं को प्रतिबंधित कर दिया है। दर्द और बुखार की दवा निमुस्लिड को सिर्फ 12 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए प्रतिबंधित किया गया है। जबकि बाकी पांच दवाओं को मानव इस्तेमाल के लिए पूर्ण प्रतिबंधित कर दिया गया है।

  बच्चों के लिए बनने वाले निमुस्लिड के दर्जनों फार्मूलों को बंद करने का फैसला किया गया है। हालांकि अन्य देशों में यह बड़ों के लिए भी प्रतिबंधित है। देश में निमुस्लिड टेबलेट का कारोबार करीब 300 करोड़ का है। बच्चों के जो फार्मूले बंद किए गए हैं, उनका कारोबार 30 करोड़ का है।

  प्रतिबंधित की गयी अन्य दवाओं में सिसाप्राइड को एसिडिटी खत्म करने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन यह दिल की धड़कन में खलल डाल रही है। सालाना कारोबार चार करोड़ का है। तीसरी दवा फिनाइल प्रापानोलामिन खांसी के सीरप में इस्तेमाल होती है। इसे बच्चे, बड़े सभी लेते हैं लेकिन इसके दुष्प्रभावों की देश में अनदेखी हो रही थी। यह दिमागी दौरे बढ़ाने के लिए जिम्मेदार है। चौथी दवा का नाम है ह्यूमन प्लेसेंटा।

- काली नदी से प्रदूषित हो रहे मोदीपुरम क्षेत्र से अंडरग्राउंड वॉटर के सैंपल भरने पहुंची टीम को ग्रामीणों के रोष का सामना करना पड़ा। गांव वालों ने टीम को बंधक बनाकर कमरे में बंद कर दिया। टीम में जेई और असिस्टेंट साईंटिस्ट समेत कई लोग शामिल थे। ग्रामीणों ने उन्हें जबरन हैंडपंप से निकालकर प्रदूषित पानी भी पिलाया। जब टीम ने गांव वालों को प्रदूषित पानी से जल्द ही छुटकारा मिलने का भरोसा दिलाया, तब ही ग्रामीणों ने बंधकों को मुक्त किया।

माले-मुफ्त, दिल बेरहम

जसविंदर शर्मा

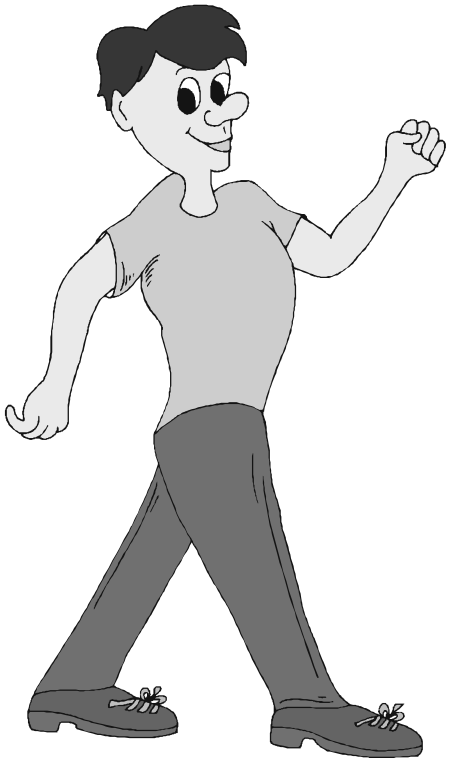

सुबह-सुबह अखबार के साथ मैं टैरेस पर अकड़कर आ बैठा और चाय की चुस्कियां लेने लेगा। बच्चों को स्कूल भेजकर श्रीमती भी अखबार से लोहा लेने लगी। श्रीमती अखबार को पिछले पन्ने से पढ़ना शुरू करती है क्योंकि उन पन्नों पर सेल, डिस्काउंट, फ्री ऑफर आदि विज्ञापन बहुत छपते हैं। बुरा वक्त बताकर तो आता नहीं। उस अंग्रेजी दैनिक में एक सेल पर श्रीमती की निगाह क्या भटकी कि मेरी सांस गले में अटक गई। उसकी आंखों में चमक आ गई, मेरा दिल डूबने लगा। मुझे अपने पर्स पर छुरियां चलती दिखाई देने लगी।

श्रीमती तो घर के बीसियों काम बीच में छोड़कर सेल देखने के लिए तैयार होने लगी। साथ में कह रही थी,' खरीदेंगे कुछ नहीं। आदमी को यह तो पता होना चाहिए कि लेटेस्ट ट्रेंड क्या चल रहा है।' इस बार मेक-अप करने में उसने पांच मिनट से ज्यादा समय नहीं लगाया। सूट या साड़ी पहनने में कोई नाज-नखरा नहीं दिखाया। वैसे यह राज की बात है कि जब उसे मायके या बाजार में अपनी खरीददारी करने जाना होता है तो उसे सजने-संवरने में ज्यादा वक्त नहीं लगता।

झंझट तो तब खड़ा होता है जब मैं उसे ससुराल लेकर जाता हूं। ऐसे मौकों पर श्रीमती पूरी अलमारी खोलकर बैठ जाती है और अजीब-सा टेड़ा मुंह बनाकर बिसूरती है, 'मेरे पास तो कोई ढंग का सूट या साड़ी ही नहीं, अच्छी सैंडिल नहीं, क्या पहनूं? सब घिसी-पिटी और पुराने फैशन की हैं।' अब आग लगने पर कुआं तो खोदा नहीं जा सकता। आदमी घर में क्या खाकर बोल सकता है? किसी भी समय फजीहत होने का डर रहता है। अंग्रेजी दैनिक में छपी उस सेल को देखने के लिए तैयार होकर हम निकल पड़े। उस बड़े-से पांच सितारा होटल के बाहर जब हमने अपना स्कूटर पार्क किया तो किसी का ध्यान हमारी तरफ नहीं गया। वहां एक से एक बढ़िया शानदार चमचमाती कारें खड़ी थीं। सुन्दर-सी लिफ्ट में सवार होकर हम उस शानदार हाल में पहुंचे जहां बंगलोर सिल्क साड़ी की मेगा सेल लगी थी ।

सुबह के दस बजे थे। हाल को करीने से सजाया गया था। भीड़ इतनी ज्यादा नहीं थी। हर तरफ चुस्त, चुलबुली, शोख व हसीन सेल्स-गर्ल्स अंग्रेजी में गिटपिट करती इठला रही थी। सेल देखने आई लेडीज भी खूब भरी-पूरी, गुदाज और सुडोल काया वाली थीं। श्रीमती तो हजारों साड़ियों के विशाल समुद्र में खो गई। हम कभी यहां खड़े होते तो कभी वहां। कोण बदल-बदलकर हमने उन हसीन तितलियों को जी भर कर निहारा जो अपने गुदाज जिस्म की सुध-बुध भुलाकर साड़ियां देखने में मग्न थी। श्रीमती ने तीन-चार साड़ियां पसन्द करके हमें थमा रखी थी। यूं रंग-बिरंगी साड़ियां अपनी बांहों में उठाकर पत्नी के पीछे-पीछे चलनेवाले वफादार और आज्ञाकार पति अकेले हम ही नहीं थे। पचास-साठ ऐसे खुशकिस्मत प्राणी और भी थे जो रोबोट की तरह अपनी पत्नी की हर इच्छा पूरी करने के लिए तत्पर खड़े थे।

फिर तो देखते-देखते आज्ञाकार पतियों और खुशकिस्मत व सौभाग्यवती पत्नियों का एक जबरदस्त रेला-सा आ गया। हर तरफ एक हड़कम्प-सा मच गया। सेल्स-गर्ल्स की हरकत तेज हो गई। हर कोई कुछ न कुछ मांग रहा था। उस हाल में सांस लेना तक दूभर हो गया था। खींचातानी होने लगी मानो ससंद के निचले सदन का सत्र चल रहा हो। एक-एक साड़ी पर चार-चार हाथ लपक रहे थे। कबीर ने इन्ही अधीर व बांकी बालाओं की बेसब्री वाली मनोदशा को ध्यान में रखकर कहा होगा राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट। करवा चौथ पास ही था। उसी के नाम पर श्रीमती ने पांच हजार की हमारी गुप्त बचत उस सेल में लुटवा दी। पहले के पति हर बात पर कहते थे कि वेतन मिलने पर फलां चीज ले दूंगा और इसी सब्जबाग में सारी उम्र औरत को उलझाए रखते थे। अब ए.टी.एम. और क्रेडिट कार्ड का जमाना है। अब पैसे पल्ले न भी हों तो भी सफल खरीददारी की जा सकती है। सेल की आंधी में श्रीमती ने वह सामान भी उठा लिया जो उसने पिछले पांच सालों में तो प्रयोग नहीं किया। पता नहीं जब करने लगेगी तब तक नया फैशन ही आ जाएगा।

5/2 डी रेल विहार मंसा देवी
पंचकुला - 134109 (हरियाणा)

संस्मरण

ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय पदयात्रा

मुनि राकेशकुमार

अणुव्रत की दृष्टि से मेरी कई यात्राएं हुई हैं किन्तु मुंबई से छत्तीसगढ़ की सीमा तक आठ सौ किलोमीटर से अधिक लम्बी यह पदयात्रा मेरे जीवन के लिए ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय है। इसमें मुझे बहुत अनुभव मिले, अणुव्रत का व्यापक कार्य हुआ।

मुंबई से प्रस्थान के समय नवभारत टाइम्स (मुंबई संस्करण) और गुजराती भाषा के दैनिक जनसत्ता में हमारी यात्रा के संबंध में संपादकीय लेख भी लिखे गए जिसमें पांच वर्षों के प्रवास में हुए अणुव्रत कार्य की चर्चा के साथ सचिवालय में हुई गोष्ठी और सरकार द्वारा प्रसारित परिपत्र पर प्रकाश डाला गया।

ईस्वी सन् 1968 में पांच वर्षों का प्रवास संपन्न होने पर हम लोग (मुनि राकेशकुमार, मुनि हर्षलाल एवं मुनि मिश्रीलाल) आचार्य तुलसी के निर्देशानुसार मुंबई से रायपुर (छत्तीसगढ़) चातुर्मास के लिए प्रस्थान करने वाले थे। उस समय राज्य के सचिवालय में एक विदाई संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पांच वर्षों में मुख्यमंत्री बी.पी. नाइक तथा अन्य मंत्रियों व सरकारी अधिकारियों से अच्छा सम्पर्क बन गया था। मुख्यमंत्री अनेक बार मिले थे। वे अणुव्रत के नैतिक अभियान से बहुत प्रभावित थे। गोष्ठी का आयोजन विधान सभाध्यक्ष टी.एस. भारदे व शिक्षा मंत्री डॉ. कैलाश एन.एन. की प्रेरणा से हुआ। इस गोष्ठी में मुख्यमंत्री वी.पी. नाइक मंत्रिमंडल के सदस्य, विधायक व प्रमुख प्रसासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री नाइक ने अपने भाषण में कहा 'मुनिश्री ने यहां अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से नैतिक जागरण का अच्छा कार्य किया है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा और व्यापार के क्षेत्र में नई जागृति आई है तथा नैतिक दृष्टि से परिवर्तन की लहर दिखाई दे रही है। मुंबई में साधु-संन्यासी बहुत हैं, पर मुनिश्री ने सभी संप्रदाय के लोगों को प्रभावित किया है। अणुव्रत के सिद्धांतों से किसी का कोई विरोध नहीं हो सकता। सैकड़ों व्यापारियों ने खाद्य पदार्थों में मिलावट नहीं करने का संकल्प किया है।'

श्री नाइक ने आगे कहा मुनिश्री रायपुर, छत्तीसगढ़ जाते हुए रास्ते में महाराष्ट्र के अनेक जिलों की यात्रा करेंगे। मैं चाहता हूं मार्गवर्ती सभी गांवों में मुनिश्री का लाभ प्राप्त हो, इसके लिए सभी पंचायतों को सूचित करना चाहिए। मुख्यमंत्री ने उसी समय ग्राम विकास व पंचायत मंत्री व्यंकटराव हीरे को पंचायत समितियों के लिए एक परिपत्र प्रसारित करने का निर्देश दिया। श्री हीरे ने आचार्य तुलसी और अणुव्रत अभियान के परिचय के साथ एक परिपत्र तैयार किया तथा यात्रा पथ में आने वाली सभी पंचायत समितियों को हमारे कार्यक्रमों में सहयोग देने की प्रेरणा दी।

साधारणतया इस प्रकार के सरकारी परिपत्र औपचारिक होते हैं। उनका परिणाम और प्रभाव बहुत कम देखने में आता है, किन्तु मुंबई महानगर की सीमा पार करते ही हमें यह अनुभव हुआ कि यह परिपत्र केवल औपचारिक नहीं है। छत्तीसगढ़ की सीमा तक आठ सौ किलोमीटर से अधिक इस पदयात्रा में हमें इसका चमत्कारिक प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ। जिस गांव में हमारा जाना होता, वहां ग्राम पंचायत की ओर से स्वागत तथा आवास का प्रबंध रहता। पंच लोग गांव के स्कूल के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों व प्रमुख लोगों के साथ हमारी अगवानी के लिए उपस्थित होते। महाराष्ट्र में अन्य जैन परम्पराओं के श्रावक बहुत हैं। वे भी स्वागत आदि कार्यक्रमों में प्रसन्नता से सम्मिलित होते। उनकी उदारता का हमारे मन पर सुंदर प्रभाव पड़ा। थाणा जिला पार करने के बाद नासिक जिले की सीमा में प्रवेश किया। नासिक में जैन समाज की संख्या अच्छी है। वहां पंचायत समिति की ओर से हमारे ठहरने की व्यवस्था एक स्कूल में की थी किन्तु जैन समाज ने हमें अत्यन्त आग्रह के साथ विशाल स्थानक में ठहराया। जितने दिन हम रहे, जैन-जैनेतर लोगों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर प्रवचनों का लाभ लिया।

नासिक जिले के अनेक गांव हमारे मार्ग में थे। गुरुदेव के आशीर्वाद से सभी स्थानों पर हमें अनुकूल वातावरण दृष्टिगोचर हुआ। लगभग चौदह वर्ष पूर्व गुरुदेव के साथ महाराष्ट्र के इन क्षेत्रों की पदयात्रा मैंने की थी। उस समय जैन

समाज की ओर से विरोध के स्वर मुखरित हो रहे थे। किन्तु इस यात्रा में समाज की ओर से हार्दिक सद्भावना प्राप्त हुई।

महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक ने भजन-कीर्तन के माध्यम से लोक-जागरण और संस्कार निर्माण का एक विशेष अभियान शुरू किया। उसका व्यापक प्रभाव इस यात्रा में देखा। हमारे रात्रिकालीन प्रवचनों और कार्यक्रमों की पंचायत समिति द्वारा गांव में सामूहिक उद्घोषणा होती। बहुत बार हजारों की संख्या में उपस्थिति रहती। प्रवचन के पूर्व भजन मंडलियों द्वारा भजन-कीर्तन का कार्यक्रम होता। उसके पश्चात् प्रमुख पंच या किसी प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा हमारा परिचय प्रस्तुत किया जाता। कभी-कभी राज्य सरकार द्वारा प्रसारित परिपत्र भी पढ़कर सुनाया जाता। मेरे पूर्व मुनि हर्षलाल और मुनि मिश्रीलाल के भी वक्तव्य होते। अणुव्रत की आचार-संहिता पर प्रकाश डालते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द, व्यसनमुक्ति, भ्रष्टाचार व रूढ़ि उन्मूलन अस्पृश्यता निवारण तथा बच्चों के संस्कार निर्माण आदि विषयों पर प्रवचन होता। अणुव्रत के इन आदर्शों से हर जाति और संप्रदाय के लोग सहमत और प्रसन्न होते। कार्यक्रम की समाप्ति पर अणुव्रत के संकल्प पत्र भी भरे जाते।

इस यात्रा में अनेक स्थानों पर पंचायत समितियों द्वारा तथा जैन समाज के चिंतनशील लोगों की ओर से अणुव्रत की आचार-संहिता के पेम्फ्लेट भी छपाए गए। उनके साथ ''संयममय जीवन हो'' इस अणुव्रत गीत का भी व्यापक प्रसार हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रमों में जब अणुव्रत गीत का सामूहिक संगान होता तो श्रोताओं के हाथ में छपे हुए पत्र भी होते जिससे हमारे साथ तन्मय बनकर सभी संगान करते। कभी-कभी संपूर्ण व्याख्यान अणुव्रत गीत की व्याख्या के आधार पर होता। नासिक, भुसावल, जलगांव, खामगांव, आकोला, अमरावती, वर्धा, नागपुर व भंडारा आदि अनेक प्रमुख नगरों का हमने इस यात्रा में स्पर्श किया। इन नगरों के सामाजिक, शैक्षणिक और राजनैतिक क्षेत्रों में जैन समाज का विशेष प्रभाव दिखाई दिया। जैन बंधुओं ने संप्रदायवाद की संकीर्ण भावना से हटकर हमारी इस यात्रा को जैन धर्म की प्रभावना का निमित्त माना। इन सभी शहरों में हमें अत्यन्त आग्रह के साथ स्थानकों और उपाश्रयों में ठहराया। जब पंचायत समितियों की ओर से हमारा स्वागत और प्रवचन का कार्यक्रम होता तो जैन समाज बहुत उत्साह से सम्मिलित होता। आकोला की विशाल अणुव्रत सभा में दो वृद्ध स्थानकवासी श्रावकों के भी वक्तव्य हुए। उन्होंने कहा हम महाराष्ट्र सरकार को धन्यवाद देते हैं कि मुनिश्री राकेशकुमार आदि मुनिजनों की पदयात्रा में सहयोग देने का पंचायत समितियों को निर्देश दिया है। उन्होंने आगे कहा हमारे विदर्भ क्षेत्रों में अनेक जैन आचार्य और साधु-साध्वीगण पधारे हैं। किन्तु मुनिश्री की इस यात्रा से जैन धर्म का अभूतपूर्व गौरव बढ़ा है। मुनिश्री ने हमारे सर ऊंचे कर दिये हैं। इस यात्रा को हम कभी भूल नहीं सकते।

विदर्भ क्षेत्र के जैन बन्धुओं का जितना विशाल और उदार दृष्टिकोण है उतना अन्यत्र कम देखा गया है। इसी प्रकार विदर्भ के प्रवासी राजस्थानी बन्धुओं का स्वतंत्रता आंदोलन में जो योगदान रहा है, उसका स्वतंत्र भारत के इतिहास में अपना एक विशेष महत्त्व है। हमें भी वहां कई स्वतंत्रता सेनानी मिले। जिनके जीवन में महात्मा गांधी के विचारों का गहरा प्रभाव परिलक्षित हुआ।

इस यात्रा में आचार्य विनोबा भावे द्वारा स्थापित पवनार आश्रम तथा महात्मा गांधी द्वारा संस्थापित ऐतिहासिक सेवाग्राम आश्रम में भी एक-एक दिन का प्रवास हमने किया। वहां पर भी अणुव्रत गोष्ठियों का आयोजन हुआ। वर्धा और नागपुर में जैन स्थानक और उपाश्रय में प्रवास हुआ। स्थानीय लोगों के आग्रह के कारण नागपुर में लंबा प्रवास हुआ तथा कई सार्वजनिक कार्यक्रम भी आयोजित हुए। वर्धा में संयोग से जमनालाल बजाज के पारिवारिक सदस्य भी मिल गए, जिनका मुंबई में निकट संपर्क रहा था। उनके सुझाव पर जमनालालजी द्वारा संस्थापित सेवा संस्थानों में निरीक्षणार्थ जाना हुआ।

नागपुर में महाराष्ट्र सरकार के वरिष्ठ मंत्री मधुकर राव चौधरी तथा व्यंकटराव हीरे भी मिले। उन्होंने यात्रा के संबंध में विस्तार से जानकारी ली और हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। इस यात्रा में सभी प्रमुख केन्द्रों में अवधान विद्या के प्रयोग का कार्यक्रम भी रहा। इसके साथ आध्यात्मिक साधना और संयम प्रधान जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा दी गयी।

नागपुर के पश्चात् भंडारा जिले में हमारा प्रवेश हुआ। महाराष्ट्र राज्य का वह अंतिम जिला है। उसके बाद हमारा छत्तीसगढ़ में प्रवेश हो गया। भंडारा में जिलाधीश महोदय के आग्रह पर उनके कार्यालय में ही अणुव्रत और अवधान विद्या का संयुक्त कार्यक्रम रहा। अणुव्रत की दृष्टि से मेरी कई यात्राएं हुई हैं किन्तु मुंबई से छत्तीसगढ़ की सीमा तक आठ सौ किलोमीटर से अधिक लम्बी यह पदयात्रा मेरे जीवन के लिए ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय है। इसमें मुझे बहुत अनुभव मिले, अणुव्रत का व्यापक कार्य हुआ। जैन धर्म और तेरापंथ की प्रभावना हुई। दोनों साथी संतों का विशेष सहयोग रहा। इस यात्रा में हमारे समाज पर किसी भी प्रकार का आर्थिक भार नहीं पड़ा।

मुंबई से प्रस्थान के समय नवभारत टाइम्स (मुंबई संस्करण) और गुजराती भाषा के दैनिक जनसत्ता में हमारी यात्रा के संबंध में संपादकीय लेख भी लिखे गए जिसमें पांच वर्षों के प्रवास में हुए अणुव्रत कार्य की चर्चा के साथ सचिवालय में हुई गोष्ठी और सरकार द्वारा प्रसारित परिपत्र पर प्रकाश डाला गया।

मधुमेह और प्रेक्षा चिकित्सा :3:

मुनि किशनलाल

नाड़ी शोधन प्राणायाम

विधि : अनुलोम विलोम की तरह ही नाड़ी शोधन प्राणायाम होता है। इसमें श्वास लेने और छोड़ने की गति तीव्र होती है।

पहला प्रकार

1. बाएं नथुने से श्वास लें, बाएं से श्वास छोड़ें। (9 बार)
2. दाएं नथुने से श्वास लें, दाएं से श्वास छोड़ें। (9 बार)

दूसरा प्रकार

1. बाएं नथुने से श्वास लें, दाएं नथुने से श्वास छोड़ें। (9 बार)
2. दाएं नथुने से श्वास लें, बाएं नथुने से श्वास छोड़ें। (9 बार)

तीसरा प्रकार (पर्याप्त अभ्यास पश्चात)

1. बाएं नथुने से श्वास लें, कुछ देर अन्दर रोकें। दाएं नथुने से श्वास छोड़ें, कुछ देर बाहर रोकें।
2. दाएं नथुने से श्वास लें, कुछ देर अन्दर रोकें। बाएं नथुने से श्वास छोड़ें, कुछ देर बाहर रोकें।

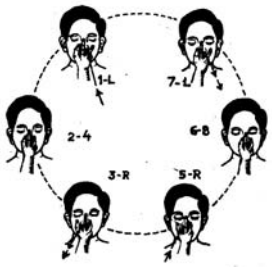

अनुलोम–विलोम

लाभ

1. नाड़ियां शुद्ध होती हैं।
2. पेट का मोटापा कम होता है।
3. प्यास और जागृत होती है।

अनुलोम–विलोम प्राणायाम

इस प्राणायाम में श्वास–प्रश्वास चन्द्र स्वर और सूर्य स्वर में एक–दूसरे के अनुलोम–विलोम अर्थात् विपरीत चलता है। अतः इसे अनुलोम–विलोम प्राणायाम कहते हैं।

1. जिस आसन में सुखपूर्वक स्थिरता से बैठ सकें उस आसन का चुनाव करें। जैसे पद्मासन, अर्द्धपद्मासन, सुखासन अथवा स्वस्तिकासन।
2. मेरुदण्ड और गर्दन को सीधा रखें। दृष्टि सम्मुख रहे।
3. दाहिने हाथ के अंगुठे से दाहिनी नासिका (सूर्य स्वर) को बंद करें। तर्जनी अंगुली भृकुटी के मध्य रखें। मध्यमा बाईं नासिका पर रहेगी।
4. चन्द्र स्वर से पूरक करें, फिर सूर्य स्वर से रेचन करें। पुनः चन्द्र स्वर से पूरक एवं सूर्य स्वर से रेचन करें इसी क्रम से अभ्यास जारी रखें।

नोट– इस प्राणायाम का अभ्यास करते समय मौसम का ध्यान अवश्य रखें। गर्मी के मौसम में चन्द्र स्वर से तथा सर्दी के मौसम में सूर्य स्वर से अभ्यास प्रारम्भ करें तथा इसी अनुसार सम्पन्न करें।

लाभ

1. मानसिक व प्राणधारा का संतुलन बढ़ता है।
2. भाव निर्मल बनते हैं।
3. ध्यान में मन लगता है।

सूर्यभेदी प्राणायाम

इस प्राणायाम में केवल सूर्य स्वर (दाहिनी नासिका) से श्वास को ग्रहण करते हैं अतः इसे सूर्यभेदी प्राणायाम कहा जाता है।

सूर्यभेदी प्राणायाम

1. जिस आसन में सुखपूर्वक स्थिरता से बैठ सकें उस आसन का चुनाव करें। जैसे पद्मासन, अर्द्धपद्मासन, सुखासन अथवा स्वस्तिकासन। मेरुदण्ड और गर्दन को सीधा रखें। दृष्टि सम्मुख रहे।
2. दाहिने हाथ की अनामिका से बायीं नासिका (चन्द्र स्वर) को बंद करें। तर्जनी अंगुली भृकुटी के मध्य रखें।
3. सूर्य स्वर से धीरे–धीरे पूरक करें। नाक के छिद्रों से लेकर गले और फेफड़ों को पूरी तरह श्वास से भरें। यथाशक्ति अन्तः कुम्भक करें।
4. धीरे–धीरे चन्द्र स्वर से रेचन करें। कुछ समय बाह्य कुम्भक करें।
5. पुनः सूर्य स्वर से पूरक–कुम्भक तथा चन्द्र स्वर से रेचन–कुम्भक करें।

नोट – अभ्यास के प्रारम्भ में नौ आवृत्ति करें, फिर धीरे–धीरे अभ्यास को बढ़ाएं।

सूर्यभेदी प्राणायाम का दूसरा प्रकार

सूर्यभेदी प्राणायाम के दूसरे प्रकार में सूर्य स्वर से पूरक–कुम्भक, रेचन–कुम्भक तथा पुनः सूर्य स्वर से ही पूरक किया जाता है। इस प्रकार केवल सूर्य स्वर से ही पूरक–कुम्भक, रेचन–कुम्भक करें।

लाभ –

1. वात एवं कफ का शमन होता है, ऊष्मा बढ़ती है।
2. पाचन शक्ति बढ़ती है।
3. आलस्य दूर होता है स्फूर्ति एवं ताजगी का अनुभव होता है।

सावधानी

सूर्यभेदी प्राणायाम गर्मी बढ़ाता है अतः ग्रीष्मकाल में इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। कफ और वायु प्रकृति वाले अपने कफ और वायु की उपशान्ति की दृष्टि से इसका प्रयोग करते हैं। अति उष्ण तथा पित्त प्रकृति वालों को इसका प्रयोग विवेकपूर्वक ही करना चाहिए।

प्रेक्षा

विधि–शरीर जिस आसन में सुख पूर्वक बैठ सकें उसमें बैठकर स्थिर करें। शिथिल करने का सुझाव दें और शिथिल करने के बाद शरीर के ममत्व का विसर्जन करें। कायोत्सर्ग सध जाने के बाद अपने चित्त को अग्न्याशय पर ले जाकर वहां रोग प्रतिरोधक शक्ति को सक्रिय करें और अग्नाशय की सक्रियता का सुझाव देवें। 'मेरा अग्न्याशय सक्रिय हो जावें .....। सक्रिय हो रहा है.....। अनुभव करें कि अग्न्याशय की सक्रियता पहले से बढ़ गई है। उसकी कल्पना करें। इस प्रेक्षाध्यान की प्रक्रिया को प्रतिदिन 10 मिनट तक जरूर करें। यह प्रयोग टाइप–1 डायबिटीज के लिए कारगर हो सकता है लेकिन टाइप–2 डायबिटीज के लिए नहीं।

अनुप्रेक्षा

किसी भी काम को दक्षतापूर्वक करने के पहले उस कार्य की पद्धति को बार–बार अभ्यास करके स्वयं को कार्य सक्षम बनाना पड़ता है। प्रेक्षा द्वारा इस सच्चाई को जाना गया कि रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता को सक्रिय करके शरीर के उस अंग को स्वस्थ किया जा सकता है जिसकी क्षमता कम हो गई है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को जगाने के लिए भी उसे बार–बार सचेत करना पड़ता है। यही कार्य अनुप्रेक्षा द्वारा किया जाता है।

विधि – शरीर को प्रेक्षाध्यान में जाने वाली विधि से ध्यानस्थ करें। रोग प्रतिरोधक क्षमता को अग्नाशय पर ले जाकर चिन्तन करें, 'मेरा अग्नाशय सक्रिय हो सकता है। मेरी रोग प्रतिरोधी क्षमता उसे रुग्णता से उबारने में सक्रिय बने। मैं अनुभव करता हूं कि मेरी रोग प्रतिरोधी क्षमता सक्रिय हो गई है। मेरा अग्नाशय स्वस्थ होता जा रहा है। मैं मधुमेह से मुक्त हो गया हूं। स्वास्थ्य का मानसिक चित्र बनायें। मैं स्वस्थ हो रहा हूं ..... मैं स्वस्थ हो रहा हूं ..... मैं स्वस्थ हो रहा हूं इस वाक्य का 15 मिनट तक मन ही मन जप करे। अगर अग्न्याशय बिल्कुल ही निष्क्रिय नहीं हुआ है तो निश्चित रूप से लाभ होगा। इस प्रक्रिया को प्रतिदिन करें और लाभ उठाएं।

जिस तरह खिड़कियां खुली रह जाने पर हवा के वेग से घर में कचरा आ जाता है उसी तरह हमारे शरीर में खाद्य असंयम, शरीर की निष्क्रियता और आलस्य के कारण भी कचरा इकट्ठा हो जाता है। इस कचरे को जब तक हम बाहर नहीं निकाल देते तब तक वह अस्वस्थता का कारण बना रहता है। इसलिए शरीर के कचरे की सफाई तथा नया कचरा नहीं आवे उसके लिए आश्रव द्वारों को बन्द करना पड़ता है। इसी को निर्जरा या तप कहते हैं।

तप – मधुमेह से बचने के लिए

1. चीनी और चीनी से बने पदार्थों का वर्जन करें।
2. आलू, चावल, शकरकन्द आदि स्टार्च बनाने वाले पदार्थ का भोजन में वर्जन करें।
3. मीठे फल जिनमें ग्लुकोज की मात्रा अधिक होती है न खायें।
4. सप्ताह में एक दिन एकासन करें, वह भी हल्का जिससे शरीर में जमा हुआ शर्करा जल जाये।

मुद्रा

मुद्राएं हमारे भावों को प्रकट करती हैं। भाषा का विकास तो बाद में हुआ। पहले मानव द्वारा अपनी भावनाओं को प्रकट करने का साधन मुद्रा ही था। जैसी मुद्रा होती है उसी से व्यक्ति के भावों को समझा जा सकता है। हस्त मुद्राओं का भी अपना महत्त्व है। पांचों अंगुलियां पंच तत्त्व की प्रतिनिधि हैं। इनसे पंच तत्त्व के असंतुलन को सन्तुलित करके व्यक्ति को स्वस्थ बनाया जा सकता है। मधुमेह रोग में प्राण मुद्रा और अपान मुद्रा रोगी को स्वस्थ बनाने में सहायक हैं।

प्राण मुद्रा

प्राण मुद्रा से प्राण शक्ति को सबल बनाया जाता है। प्राण शक्ति की कमी के कारण शरीर में उत्पन्न ग्लुकोज या मीठे तत्त्वों का पूरी तरह प्राण ऊर्जा बनाने में उपयोग नहीं हो पाता। इससे मधुमेह रोग उत्पन्न हो जाता है। प्राण ऊर्जा को मजबूत करने में प्राण मुद्रा सहायक बनती है। बशर्ते इसका विधि पूर्वक उपयोग किया जाये।

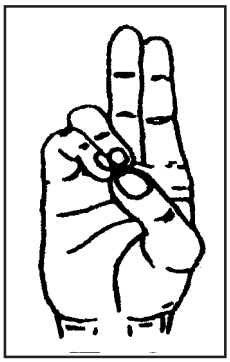

प्राण मुद्रा

1. सबसे छोटी अंगुली (जल तत्त्व) और अनामिका (कनिष्ठा के पास वाली अंगुली, पृथ्वी तत्त्व) के पौरों और अंगूठे (अग्नि तत्त्व) के पोर को मिलाकर बनने वाली मुद्रा प्राण मुद्रा कही जाती है।
2. आसन – पद्मासन या सिद्धासन में प्राण मुद्रा शक्तिशाली बनती है। मेरुदण्ड को सीधा रखें।
3. समय – 48 मिनट का प्रयोग पूर्ण होता है। अगर एक बार में न हो पावे तो 16–16 मिनट तीन बार में करके समय सीमा पूरी करें।

शेष पृष्ठ 29 पर...

बच्चों को पारिवारिक कलह से बचाएं

डॉ. रामसिंह यादव

बाल अवस्था मानवीय व्यक्तित्व के विकास की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। समस्त शारीरिक व मानसिक शक्तियां, आदतें, संस्कारों का विकास, भावनात्मक विकास एवं सामाजिक नैतिक मूल्यों का विकास इसी उम्र में अपनी पूर्ण गति से होता है। इस अवस्था में यदि कोई मानसिक विक्रति उत्पन्न हो जाती है तो उसे ठीक कर पाना बहुत ही कठिन होता है। घर-परिवार, बच्चों की प्राथमिक पाठशाला होती है और माता-पिता अपने बच्चों को बाल्यावस्था और किशोरावस्था में ध्यान देंगे, उसी पर उनका आने वाला समय भविष्य निर्भर करेगा। इसलिए अपने बच्चों को अच्छे संस्कार से सींचिए, ताकि वे बड़े होकर एक अच्छे इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनें।

बच्चों की अपनी दुनियां परिवार तक सीमित होती हैं, इसीलिए पारिवारिक जीवन में घटने वाली प्रत्येक घटना का उसके कोमल मन पर प्रभाव पड़ता है। घर का माहौल भी बच्चों के मन पर प्रभाव डालता है। पति-पत्नी के बीच आपसी संबंध यदि मधुर नहीं हो तो इसका असर बच्चों पर भी पड़ता है और वे डरे-सहमे हुए रहते हैं तथा अपने मन की बात माता-पिता को नहीं कह पाते हैं। ऐसी बात नहीं है कि पारिवारिक झगड़े घर में नहीं होते हैं। यह पारिवारिक झगड़े ऐसे होते हैं जो बच्चे के अविकसित मनोभाव मंडल में गंभीर रूप से उथल-पुथल मचा देते हैं। अनेक परिवारों में पति-पत्नी अपने बच्चों के सामने लड़ाई-झगड़ा गाली-गलोच और मारपीट करते हैं। जिसका बच्चों के कोमल मन पर कुप्रभाव पड़ता है।

पारिवारिक झगड़ों का कारण पैसा-धन या उससे संबंधित कोई अन्य समस्या हो सकती है तथा अभाव और व्यय को सही वितरण का तकाजा अथवा किसी एक के द्वारा दूसरे की उपेक्षा बर्ताव में कटुता। व्यक्तिगत आपसी मतभेद अथवा स्वभाव की भिन्नता भी झगड़े का कारण हो सकती है। सभी आपसी विवाद झगड़े के मूल में कोई न कोई अहं काम करता है। महत्वाकांक्षा या किसी अन्य कुंठा का शिकार होकर कोई व्यक्ति कलह शुरू करता है तो दूसरा प्रतिक्रिया स्वरूप उत्तर देता है और परिवार में विस्फोट होने लगते हैं। इससे घर का वातावरण विवादमय हो जाता है, ऐसे में बच्चे का मन तनावग्रस्त हो जाता है। उसमें निराशा, हताशा, उदासीनता, चिड़चिड़ापन आदि दिखाई देता है। ऐसे में उसका मन न खेलकूद में लगता है और न पढ़ाई में उसके स्वास्थ्य पर भी इसका बुरा असर पड़ता है और मन पर भी।

इसलिए परिवार का वातावरण ऐसा बनाने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे झगड़े कम से कम हो। माँ-बाप को चाहिए कि वे अपने आपसी मतभेद बच्चों के समक्ष प्रकट न करें। मां अपने बच्चों के समक्ष पति से ऐसा व्यवहार न करे जिसका बच्चों पर बुरा असर पड़ सकता हो। यदि परिवार का वातावरण अच्छा नहीं है तो बच्चों में अच्छे संस्कारों का पनपना मुश्किल होता है।

बहुधा देखा जाता है कि संयुक्त परिवार में झगड़े अधिक होते रहते हैं, जैसे सास-बहू में, ननद-भाभी में, देवरानी-जेठानी में भाई-भाई के बीच। पर संयुक्त परिवार से अलग रहकर भी यदि पति-पत्नी एक-दूसरे को समझने का प्रयास नहीं करते तब भी परिवार में कलह प्रारंभ हो जाती है। अक्सर जिसे हम परिवार या गृहस्थी कहते हैं वह चौबीसों घंटे और आपसी द्वेष का अड्डा बना रहता है। घर में शांति सुकून और प्रेम के स्थान पर क्रोध बरसता है इसी परेशानी और कलह के बीच बच्चों का विकास होता है, तो उनका व्यक्तित्व विकृत होता जाता है।

पारिवारिक कलह का बच्चे के मन पर गहरा कुप्रभाव पड़ता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पाता। अतः माता-पिता या अभिभावकों को चाहिए कि वे घर का वातावरण शांत, सुकून भरा एवं स्वस्थ्य बनाने का प्रयास करें।

बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति होती है। अतः स्वाभाविक है कलह वाले परिवारों से वे मारपीट गाली-गलोच व दूसरी गंदी आदतें तुरन्त सीख लेते हैं। माता-पिता की आंखों में धूल झोंकने लगते हैं और हिंसा या आपराधिक प्रवृत्ति में लिप्त हो जाता है।

बच्चों में संतुलित विकास के लिए यह आवश्यक है कि माता-पिता दोनों ही घर में प्रेमपूर्ण, अनुशासित मर्यादा वाला वातावरण बनाने की चेष्टा करें। यदि घर में झगड़े-कलह अधिक बढ़ गये हों तो बच्चे को कुछ दिनों के लिए किसी निकट संबंधी रिश्तेदार के घर भेजा जा सकता है। बुरी प्रवृत्तियां उनमें आने ही न दें। क्योंकि आपराधिक प्रवृत्तियों वाले माता-पिता के बच्चे अपराधी ही बनते हैं। इसलिए अनुचित कार्यों के लिए उनको नियंत्रित कर दूर ही रखा जाए। घर में हर समय रोने-धोने का वातावरण बच्चे के मन को अस्थिर बना देता है जहां तक संभव हो बच्चों के सामने अपना दुःख प्रकट करना भाग्य को कोसना उन्हें अभागा कहना या उन पर बात-बात पर क्रोध करना ठीक नहीं। उन्हें धीरे-धीरे स्थिति को सहन करने लायक बनाया जाना चाहिए।

बच्चों को पारिवारिक कलह से बचाएं

बच्चों को पारिवारिक कलह से बचाने के लिये यह आवश्यक है कि बच्चों के सामने पारिवारिक झगड़े न हों। आर्थिक स्थिति ठीक होने पर भी यदि माता-पिता आपस में अपना समायोजन संतोषजनक रूप से न कर पा रहे हों तो बच्चों को छात्रावास में रखा जाना बेहतर होगा। झगड़े का एक अस्थायी हल यह भी है कि झगड़ने वालों में से एक उस स्थान से बाहर चला जाए। कभी-कभी झगड़े के विषय को बदल देना भी कारगर रहता है। यह विचार भी झगड़े को अस्थायी रूप से दबा देता है कि लड़ने वाला व्यक्ति शत्रु नहीं बल्कि इंसान है जिसमें मेरी ही तरह

दुर्बलताओं का होना स्वाभाविक है। इस प्रकार यदि परिवार के सदस्य थोड़ी-सी सूझबूझ से काम लेकर और मौन के द्वारा अपने ऊपर नियंत्रण बनाये रखें तो घर में झगड़े की संभावना कम हो जाएगी। सब कार्य प्रफुल्लता, ईमानदारी और मौन भाव से करने का अभ्यास डालने पर गृह कलह से सदैव के लिए मुक्त हो सकता है।

क्षमा जहां है वहां कोई झगड़ा पनप ही नहीं सकता। इसके अतिरिक्त नित्यप्रति किसी कल्याणकारी ग्रंथ का थोड़ा-थोड़ा स्वाध्याय-मनन और उसके अनुसरण आचरण करने का अभ्यास भी लाभप्रद होगा। जिन समस्याओं पर विचार-विमर्श करने से कलह की संभावना हो उस पर बच्चों के सामने बातचीत न करें। घर का बजट एक ऐसी ही समस्या है, जिसके बारे में पति-पत्नी तभी बात करें जब बच्चे बाहर खेलने आदि चले जाएं।

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि अपने और अपने से संबंधित व्यक्तियों की प्रकृति को समझा जा सकता है। अतः परिवार के सदस्यों की एक दूसरे के दुर्बल पक्ष को बारीकी से समझ लेना चाहिए। मन पर आघात करने वाली बात कभी नहीं करनी चाहिए। मृदुवाणी से पारिवारिक कलह को रोका जा सकता है। तुलसीदासजी ने कहा

तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहुंओर,

वशीकरण इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।

यदि अपना दोष और दूसरे के गुणों को देखने का अभ्यास किया जाए तो घर में झगड़ों की संभावना कम हो जाएगी।

जिस घर में हर समय कलह होता है वहां तनाव और भय छाया रहता है। बच्चे घर में सहमे-सहमे से रहते हैं। वे समझते हैं कि घर में झिड़कियां खाने और पीटने से तो यही अच्छा है कि वे बाहर ही रहें। इनसे उनमें असुरक्षा की भावना आ जाती है जिससे व्यक्तित्व का विकास कुंठित हो जाता है।

घर में झगड़े कम हों तो घर का वातावरण शांत और स्वस्थ्य रहेगा। स्वस्थ वातावरण में बच्चे अच्छी बातें सीखेंगे अच्छा व्यवहार करेंगे तभी अपनी शारीरिक व मानसिक शक्तियों का अधिक से अधिक विकास एवं उपयोग कर सकेंगे। अभिभावकों द्वारा बच्चों के सुकोमल मन एवं तरल भावना को अति संवेदनशील ढंग से एवं प्यार से विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

14, उर्दूपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

.... पृष्ठ 27 का शेष

मधुमेह और प्रेक्षा चिकित्सा :3:

सावधानी – इस प्रयोग द्वारा प्राण ऊर्जा का समुचित उपयोग तभी हो सकता है जब चेतना उर्ध्वगामी हो। अगर चेतना अधोगामी होने के कारण विचार नकारात्मक हैं तो प्राण शक्ति को उर्ध्वगामी बनाने के लिए अन्तर्यात्रा का प्रयोग करें।

अपान मुद्रा

अपान मुद्रा गन्दगी को शरीर से निकाल कर शरीर को स्वस्थ बनाये रखती है। मल, मूत्र यदि एक, दो दिन भी सही तरीके से विसर्जित न हो सके तो पूरा शरीर मलाकीर्ण हो जाता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य का स्वस्थ रहना कठिन हो जाता है। अपान मुद्रा शरीर शुद्धि का साधन है।

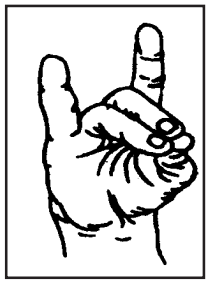

अपान मुद्रा

1. आसन – इस मुद्रा में उत्कटासन (पावंतलों को जमीन पर टिकाकर उकडु बैठना) उपयोगी है। फिर भी किसी भी ध्यानासन में किया जा सकता है।
2. मध्यमा एवं अनामिका दोनों अंगुलियों एवं अगूठे के अग्रभाग को मिलाकर दबाएं। तर्जनी और कनिष्ठा सीधी रहेगी।
3. इसे तीन बार 16–16 मिनट करें। हो सके तो पूरे 48 मिनट एक बार में ही कर लें।
4. मुद्रा दोनों हाथों से करनी है।

सावधानी – इस मुद्रा से मूत्र अधिक हो सकता है। इससे डरने की आवश्यकता नहीं है।

लाभ – इस मुद्रा का सही तरीके और समय से करने से मधुमेह रोग और अन्य कई रोगों में लाभ होते हैं –

1. शरीर और नाड़ी की शुद्धि होती है।
2. मल और दोष विसर्जित होते हैं। निर्मलता प्राप्त होती है।
3. कब्ज दूर होने से यह मुद्रा बवासीर में भी बहुत उपयोगी है।
4. पेट के विभिन्न अवयवों की क्षमता का विकास होता है।
5. वायु विकार दूर होता है।
6. मूत्रावरोध या गुर्दों का दोष दूर होता है।
7. दांतों के दर्द और दोष में भी लाभकारी है।
8. हृदय को शक्तिशाली बनाता है।
9. पसीना लाकर शरीर के ताप को कम करता है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि मधुमेह एक भयानक रोग है, जिसका कारण अनियन्त्रित जीवनशैली है। विश्व के प्रायः सभी देशों के नागरिक इस रोग से पीड़ित हैं। ऐसे रोगियों की संख्या में निरन्तर अभिवृद्धि होना चिन्ता का विषय है। इस रोग को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न प्रकार की औषधियों का भी सेवन किया जाता है। लेकिन इसका पूर्ण निदान संभव नहीं है। ऐसा योग, आसन, प्राणायाम, प्रेक्षा–चिकित्सा, नियमित घूमना, आहार–विवेक, नशामुक्त और श्रमयुक्त संतुलित जीवनशैली के माध्यम से निदान संभव है।

सेल्फमेड नहीं, सहयोगी बनें

सीताराम गुप्ता

पिछले दिनों एक रिश्तेदार घर आए। साथ में उनकी पत्नी भी थीं। दो-तीन दिन रुके। कई सालों बाद आए थे। ख़ूब आत्मीयतापूर्ण बातें हुईं। अच्छा लगा। पहले आर्थिक स्थिति पतली थी क्योंकि न तो कभी ख़ुद ही कोई काम किया और न ही कभी उनके पिताश्री ने कोई काम किया था। जब से उनके बच्चों ने सत्ता संभाली आर्थिक स्थिति में बदलाव आया। बातों से झलकता था कि अब आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है लेकिन जब तक रुके पति-पत्नी दोनों की एक ही शिकायत बार-बार प्रतिध्वनित होती रही, ''हमें तो माँ-बाप और दादा-दादी से कुछ नहीं मिला। हमारी जो संपत्ति है वह सब हमने स्वयं अर्जित की है। हमारी समृद्धि हमारी अपनी मेहनत का ही फल है।'' इसी प्रकार की शिकायत करने वाले अनेक लोगों से मुलाकात होती ही रहती है। कुछ का कहना होता है कि वे पूर्णतया स्वयंनिर्मित है। यह मात्र अहंकार है। यह आंशिक सत्य हो सकता है पूर्ण सत्य कदापि नहीं हो सकता। जहाँ तक माँ-बाप और दादा-दादी से विरासत में संपत्ति के मिलने की बात है उसके कई पहलू हो सकते हैं। यदि माँ-बाप और दादा-दादी के पास संपत्ति होती तो वह अवश्य ही तुम्हें मिलती लेकिन यदि उनके पास कुछ था ही नहीं तो वे कहाँ से तुम्हें कुछ देते। एक और प्रश्न उठता है कि क्या मात्र धन-दौलत अथवा पैसा ही वास्तविक विरासत है। धन-दौलत अथवा पैसा न मिलने पर भी माँ-बाप से बहुत कुछ मिलता है हम ये भूल जाते हैं। हम ये भूल जाते हैं कि हमारे अस्तित्व में आने के मूल में हमारे माता-पिता ही तो होते हैं। हम जो भाषा बोलते हैं वह हमने किसी स्कूल या मदरसे में नहीं अपितु माता-पिता के सान्निध्य में ही सीखी होगी। उन्होंने ही उँगली पकड़कर चलना भी सिखाया होगा। उन्होंने अपनी हैसीयत के अनुसार न केवल अच्छी परवरिश की होगी अपितु शिक्षा-दीक्षा दिलाने का प्रयास भी अवश्य किया होगा। घोर ग़रीबी की हालत में भी माँ ख़ुद भूखी रहकर अपने बच्चों का पेट भरने की जी तोड़ कोशिश करती है इसमें संदेह नहीं। ऐसे माँ-बाप से संपत्ति नहीं मिली तो क्या विषम परिस्थितियों में जीने का साहस और प्रेरणा तो अवश्य मिली होगी। फिर कैसे कहा जा सकता है कि हमें माँ-बाप से कुछ नहीं मिला?

कुछ लोगों को माँ-बाप से ही नहीं पूरे समाज से शिकायत होती है। उनका पूछना है कि दुनिया ने उनके के लिए आख़िर किया ही क्या है? ऐसे लोग प्रायः स्वयं में, स्वयं के द्वारा और स्वयं के लिए निर्मित होते हैं। उनके लिए सबकी जिम्मेदारी होती है लेकिन वे ख़ुद किसी के लिए जिम्मेदार नहीं होते। वो कभी ये सोचने की ज़हमत नहीं उठाते कि उन्होंने समाज के लिए क्या किया है अथवा करना चाहिए। यह सही है कि आपने स्वयं अपना विकास किया। आपने अपने समय का सदुपयोग किया, ख़ूब मेहनत करके पढ़ाई की और एक अच्छी सी नौकरी अथवा व्यवसाय में आ गए। यह ठीक है कि आपने पुरुषार्थ किया। वैसे भी आप पुरुषार्थ नहीं करते तो आपका ही अहित होता। पुरुषार्थ करके आपने अपने लिए अच्छा किया लेकिन क्या इसके पीछे किसी उत्प्रेरक तत्त्व ने काम नहीं किया? क्या आपको इसके लिए कहीं से प्रेरणा और प्रोत्साहन नहीं मिला? क्या अनेक व्यक्तियों और समाज ने आपको आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध नहीं कराए? जहाँ पर आपने शिक्षा प्राप्त की वे स्कूल, कॉलेज, संस्थान और विश्वविद्यालय क्या आपने स्वयं निर्मित किये थे? जिस कार्यालय अथवा प्रतिष्ठान में आप कार्यरत हैं क्या वह आपके ही परिश्रम का फल है? आप जो व्यवसाय कर रहे हैं क्या वह अन्य लोगों के सहयोग के बिना संभव है? आप जो उद्योग चलाते हैं क्या उसके उत्पाद स्वयं उपभोग में लाकर पैसा कमा रहे हैं? माना आपके पास अथाह संपत्ति है पर क्या मात्र पैसे के बल पर बिना एक डॉक्टर की मदद के रोगी होने पर स्वस्थ हो पाए हैं? आप एक डॉक्टर हैं तो क्या बिना मजदूरों की मदद के ये आलीशान घर और क्लीनिक ख़ुद बना सकते है? एक मजदूर ही क्या बिना किसान की मेहनत के अन्न का एक दाना भी मुँह में डाल सकेगा? एक किसान को भी अच्छी खेती के लिए न जाने कितने लोगों पर निर्भर होना पड़ता है। एक विद्यार्थी को भी पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के लिए कॉपी-किताब और क़लम-दवात आदि न जाने कितनी चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है जिसके लिए वह दूसरों पर निर्भर होता है।

बड़ी-बड़ी चीज़ों की बात छोड़िये छोटी-छोटी चीज़ों और ज़रूरतों के लिए भी हम दूसरों पर निर्भर होते हैं। एक मामूली सी लगने वाली क़मीज़ जो हमने पहन रखी है उसे हमारे तन पर सुशोभित करने में सैकड़ों लोगों का योगदान है। खेत में बीज बोने से लेकर पौधे उगने और उनसे कपास मिलने तथा कपास से कपड़ा और क़मीज़ बनने के बीच असंख्य हाथों का परिश्रम है। कपड़े से क़मीज़ बनाने के लिए एक सिलाई मशीन की ज़रूरत पड़ती है। वह लोहे तथा अन्य कई पदार्थों से बनती है। खनिकों द्वारा लोहा और अन्य खनिज पदार्थ खानों से निकाले जाते हैं। बड़े-बड़े करखानों में मजदूरों द्वारा लोहा साफ किया जाता है। फिर दूसरे बड़े-बड़े करखानों में लोहे से बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा छोटी मशीनें बनती हैं। उन्हीं में से एक मशीन पर कारीगर कपड़े से एक अच्छी-सी क़मीज़ सिलकर आपको पहनाता है। अब ज़रा सोचिये कि यदि क़मीज़ में बटन न लगे हों तो कैसा लगे। एक बटन जैसी अल्प मूल्य की वस्तु भी ऐसे ही नहीं बन जाती। उसके लिए भी न जाने कितने हाथों के सहारे की ज़रूरत पड़ती है। एक बटन टाँकने के लिए जो सबसे ज़रूरी यंत्र है वह है सुई। कहते हैं सुई से लेकर जहाज़ तक यानी सुई को सबसे तुच्छ वस्तु समझा जाता

शेष पृष्ठ 32 पर...

बिहार में लोकतंत्र ने भरी अपनी तान

सिद्धेश्वर प्रसाद

बिहार उन महत्वपूर्ण राज्यों में से एक है जिसने समय-समय पर भारतीय राजनीति को प्रभावित किया है। चाहे स्वतंत्रता संग्राम का समय हो या जे.पी. के संपूर्ण क्रांति का आंदोलन इत्यादि से देश को एक रोशनी मिली है। यही नहीं आपको याद होगा ढाई हजार वर्ष पूर्व भी छठी शताब्दी ई.पू. में बुद्धकालीन गणराज्यों में अधिकांशतः बिहार के मगध एवं वैशाली में लोकतांत्रिक व्यवस्था कायम हुई थी। आज पुनः इस राज्य में लोकतंत्र ने पुनः अपनी तान भरी है। आजादी के बाद से ही लगातार शोषित हो रही बिहार की जनता ने पिछड़ों की राजनीति करने वालों को आत्मसात करने के लिए सर्वप्रथम कदम बढ़ाया। आज से दो दशक पहले कांग्रेस की सरकारों से उबरकर यहां की जनता ने लालू व रामविलास जी को सत्ता की चाबी सौंपी थी। उस वक्त जनता के फैसले को सराहा गया था और यह समझा गया था कि इससे गरीबों का भला होगा, किन्तु सत्ता पर विराजमान होने के बाद परिवारवाद, जातिवाद और माफियावाद का वर्चस्व कायम हो गया। सत्ता के मद में चूर उनके नेताओं ने भ्रष्टाचार की सारी हदें पार कर दीं और राजनीति का अपराधीकरण हो गया। इस स्थिति को देखते हुए राजनीति के विश्लेषकों ने यह कहना प्रारंभ कर दिया था कि बिहार में कोई परिवर्तन नहीं होने वाला है। जातिवाद व संप्रदायवाद की वजह से यहां विकास नहीं हो सकता, लेकिन इतिहास स्वयं को दोहराता है।

वर्ष 2010 में बिहार विधानसभा के लिए जो चुनाव हुए उसमें नीतिश कुमार के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को स्पष्ट जनादेश मिला। इस चुनाव ने स्पष्ट संदेश दिया कि भ्रष्टाचार और अपराध से मुंह मोड़कर लोकतंत्र को मजबूत नहीं किया जा सकता। बिहार की जनता ने उन शक्तियों को केवल पराजित ही नहीं किया, बल्कि जड़ से उखाड़ फेंका, जो लोकतंत्र की जड़ें खोद रहे थे। नीतिश कुमार ने वर्ष 2005 में जब बिहार की सत्ता संभाली थी, तब उन्होंने विकास को मुख्य मुद्दा बनाया था और अपराधियों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने का संकल्प लिया था। इसी के अनुरूप बिहार में उनके कार्यकाल में 52 हजार अपराधियों को अदालत से सजा मिली। पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा करने के पश्चात् उन्होंने अपने कार्यकलापों से यह साबित कर दिया कि जनता विकास और सुरक्षा चाहती है, मजहबी और जातीय नारे नहीं। इस चुनाव में नीतीश कुमार ने कभी भी जाति या संप्रदाय की बात नहीं की। नीतीश कुमार की ऐतिहासिक जीत का निहितार्थ इतिहास के आईने में देखा जाना चाहिए। बिहार की लोकशक्ति ने लोकतंत्र की शक्ति का जो प्रदर्शन किया है उससे असली लोकतंत्र का अहसास होता है। लोकतंत्र में निष्ठा और ईमानदारी अपने आप में सच्चरित्रता का सबसे बड़ा प्रमाण पत्र होता है, लेकिन यदि आप सार्वजनिक जीवन के अनुभव से गुजर रहे हों, तो आपकी बेदाग छवि दिखनी भी चाहिए। नीतीश जी की विकास के प्रति और काम के प्रति ईमानदारी बरतने में इनकी बेदाग छवि दिख गई।

जिन सिद्धांतों और आदर्शों पर देश की आजादी की नींव रखी गई थी, जिसके लिए देश के महान नेताओं की पूरी पीढ़ी ने संघर्ष किया, अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, वही सिद्धांत खतरे में पड़ गया था। इसी के मद्देनजर नीतीश कुमार और उनकी राजग सरकार ने बिहार में विकास और सुरक्षा के कई स्तरों पर सेवाओं के कुशल निष्पादन के लिए अपनी क्षमता और दूरदर्शिता का परिचय दिया। उन्होंने अंधकार में न जाकर आगे बढ़ने का फैसला किया और जाति समीकरण की जंजीर को तोड़ा। हम सब इस बात से अवगत हैं कि नीतीश कुमार लोकनायक जय प्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति की उपज हैं और एक कुशल अभियंता होने के साथ-साथ गंभीर स्वभाव वाले राजनीति के सामाजिक अभियंता भी। वह अपने ऊपर सौंपी गई जिम्मेदारी को भलीभांति समझते हुए उसका निर्वहन करना भी जानते हैं। वह काम में विश्वास करते हैं, बात में नहीं। आखिर तभी तो उनके पांच वर्षों के कार्यकाल में तकरीबन दस हजार किलोमीटर सड़कों का निर्माण हुआ, शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार के साथ अपराधियों एवं रंगदारों पर अंकुश लगा। पंचायती राज में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर उनकी भागीदारी सुनिश्चित की गई तथा अति पिछड़ों को 20 प्रतिशत आरक्षण प्रदान कर उन्होंने सामाजिक न्याय को विकास के साथ जोड़ा। यही नहीं लूट, हत्या, अपहरण, चोरी-डकैती तथा बलात्कार की घटनाओं में काफी कमी आई।

नाउम्मीदी के वक्त बिहार में संपन्न चुनाव के नतीजे एक सुखद झोंके की तरह आए और उसने राजनीति को झकझोरा ही नहीं, नए सिरे से सोचने को मजबूर किया है। इस चुनाव ने लालू-पासवान का राजनीतिक कद एक झटके में छोटा कर दिया और दोनों के दंभ और बड़बोलेपन ने उन्हें अर्श से फर्श पर ला खड़ा कर दिया। यही नहीं देश के भावी प्रधानमंत्री को भी चुनाव ने उनकी हैसियत बता दी। दरअसल, राजनीति में भरोसे और विश्वास को खोकर जीवित नहीं रहा जा सकता। कोई भी राजनीतिक दल परिवार, वंश और जाति के संकीर्ण घेरे में एक लंबे अरसे तक नहीं रह सकता, यह एक-दो को छोड़कर नेताओं के बेटे, भाई-भतीजे, दामाद-बहू की करारी हार ने साबित कर दिया है।

यों तो पहले से भी यह कयास लगाया जा रहा था कि इस बार नीतीश कुमार की हुकूमत वापस लौटेगी, किन्तु इतना भारी समर्थन मिलेगा इसकी कल्पना नहीं की गई थी। पूरे बिहार में विकास की ऐसी आंधी चली कि किसी भी दल को विपक्षी दल बनने का मौका तक नहीं मिला। यह तो कहिए कि सत्ता पक्ष की सदाशयता कि 25 की जगह मात्र 22 सीटें हासिल करने के बाद भी राजद के विधायक अब्दुल बारी सिद्धिकी को प्रतिपक्ष का नेता मान लिया गया। नीतीश के चेहरे को देखकर मुसलमानों ने भाजपा को भी वोट दिया। यही नहीं, बल्कि भाजपा से भी मुसलमान समाज के एक विधायक जीतकर आए इसे नीतिश की शख्सियत की कामयाबी कहना लाजिमी होगा। इस जीत से इतना तो अब साफ हो गया है कि जो काम करेगा उसे वोट मिलेगा। इस पर योग गुरु बाबा रामदेव ने भी अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि वक्त रहते जो राजनेता इसे समझ लेगा वो 'तर' जाएगा, नहीं तो सत्ता से 'उतर' जाएगा। निश्चित रूप से बिहार विधान सभा के लिए हुए इस चुनाव में राजग को मिले अपार जनादेश के बाद देश का सबसे पिछड़ा हुआ बिहार राज्य राजनीतिक तौर पर रोल मॉडल बनेगा। इस प्रकार नेताओं को यह चिंता सताने लगी है कि यदि विकास ही मुख्य राजनीतिक मुद्दा होता है, तो कितने ही राजनीतिक दलों का बोरिया-बिस्तर बंध जाएगा। जिन राजनीतिक दलों का अस्तित्व ही छद्म और दंभ उम्मीदों के भरोसे टिका है, उनके लिए बिहार का यह चुनाव परिणाम एक खतरे का संकेत है।

नीतिश सरकार की पुनर्वापसी और उसे इस चुनाव में मिले अपार जनादेश जाहिर तौर पर सरकार के लिए बड़ी चुनौती है। जनता के बेहिसाब अरमानों और उम्मीदों को पूरा करने की प्राथमिक जिम्मेदारी से नई सरकार भाग नहीं सकती है। उम्मीद की जानी चाहिए कि अपनी दूसरी पारी में मुख्य मंत्री नीतिश कुमार राज्य की तमाम विसंगतियों का निपटारा करीने से करेंगे, जो नए बिहार के निर्माण का वाहक बनेगा। सत्ता संभालते ही जनता की उम्मीदों और अपेक्षाओं के प्रति नई सरकार इस मायने में गंभीर दिखती है क्योंकि मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने जहां अधिकारियों को साफ-साफ संदेश दिया कि जनता को छोटी-छोटी चीजों के लिए कतई परेशान न किया जाए जिसके लिए जहां उन्होंने सेवा का अधिकार विधेयक लाने की बात कही, वहीं उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने भ्रष्टाचार रोकने के लिए तथा मुखिया से लेकर ऊपर तक के अधिकारियों की कारगुजारियों पर नजर रखने के लिए लोकपाल गठन करने का फैसला किया। लोकपाल की नियुक्ति मार्च, 2011 तक कर लेने की बात कही गई और सभी विभागों के मंत्रियों ने अपने-अपने विभाग के कार्यों में मुस्तैदी और पारदर्शिता लाने का दावा किया। यह तो समय बताएगा कि उनके दावे कितने सही उतरते हैं, पर इतना जरूर है कि यह चुनाव वर्तमान परिदृश्य को पूरी तरह से बदल देने की प्रक्रिया की शुरुआत है और इस चुनाव परिणाम ने जनता की प्राथमिकता में निर्णायक बदलाव आया है और जनता की जागरूकता को देखते हुए सत्ता पर काबिज मंत्री भी अपने काम में शिथिलता से बचना चाहेंगे। राजनीतिक फैसले भी अब जनता के बीच से होने वाले हैं। मुख्यमंत्री ने सरकारी कार्यालयों की कार्य संस्कृति में सुधार की कवायद शुरू कर दी है। बैठकों के सिलसिले में इसको मूलमंत्र माना गया है, तो 'पुरस्कार' और 'दंडनीति' को प्रमुख हथियार। निःसंदेह पिछड़े प्रदेश के कलंक को मिटा देने और अपने गौरवशाली अतीत को याद कर नया इतिहास लिखने का ज़ज्बा व जोश बिहारवासियों में जगा देने की रणनीति में नीतिश कुमार काफी हद तक सफल रहे हैं। जाहिर है अपनी स्वच्छ छवि को न केवल बरकरार रखने, बल्कि उसमें चार चांद लगाने के लिए न तो वे अपने मंत्रियों को चैन की नींद सोने देंगे और न राज्य का न्याय के साथ समावेशी विकास करने से बाज आएंगे। हमारी शुभकामना सदैव उनके साथ हैं।

अध्यक्ष : बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड
पटना (बिहार)

.... पृष्ठ 30 का शेष

सेल्फमेड नहीं, सहयोगी बनें

है लेकिन उसी सुई के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हाँ इस छोटी-सी तुच्छ चीज़ को तो आप अवश्य ही स्वयं बना लेते होंगे? इसके लिए तो आपको न कच्चे माल की ज़रूरत है और न कल कारखानों की और न कुशल कारीगरों की। नहीं मित्र ऐसा नहीं है।

चलिए मान लेते हैं कि समाज ने आपको कुछ नहीं दिया। यहाँ सब स्वार्थी हैं। बिना कारण कोई किसी को कुछ नहीं देता। लेकिन एक जगह है जहाँ से आपको बहुत कुछ मिलता है और वो भी उपयोगी और बिलकुल मुफ्त। प्रकृति तो हमें बहुत कुछ देती है पर हम उसे क्या देते हैं सिवाय उसे प्रदूषित और नष्ट करने के। फिर समाज को भी प्रदूषित और नष्ट करें , उसकी उपेक्षा करें तो कौन-सी बड़ी बात है? लेकिन वास्तविकता यह है कि हम सब एक-दूसरे के सहयोग के बिना अपूर्ण हैं। हमारे विकास में हमारा पुरुषार्थ ही नहीं अन्य सभी का सहयोग अपेक्षित है। क्या माता-पिता, क्या भाई-बंधु, क्या समाज और क्या प्रकृति इन सब के सम्मिलित प्रयासों से ही हमारा जीवन गति पाता है। इन सब के सहयोग के बिना एक सांस लेना भी मुमकिन नहीं। आओ इस भ्रम को तोड़ें कि हम स्वयंनिर्मित (सेल्फमेड) हैं। हम सबको महत्त्व देंगे और सबकी रक्षा करेंगे तभी हमारी सुरक्षा संभव है।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

अहिंसा यात्रा का राजलदेसर से पुनः श्रीगणेश

हिंसा है तभी अहिंसा की प्रासंगिकता है : आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर, 14 फरवरी। 21 दिनों तक जीवन उत्थान के सूत्र पाने वाले राजलदेसरवासियों की आँखे उस समय भावुकता के साथ नम हो गई, जब तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता ने कस्बे से लूणासर की ओर विहार किया।

मर्यादा महोत्सव के सम्पन्न होने के बाद सोमवार को आचार्य महाश्रमण व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने करीब प्रातः 10:21 बजे नाहर भवन से अपनी अहिंसा यात्रा रथ व अपनी धर्मसेना के साथ जैसे ही विहार किया तो पूरा कस्बा उनके साथ हो लिया। चार कि.मी. लम्बा मार्ग जनमेदिनी से जुलूस का रूप लिये हुए थे।

विहार से पूर्व आचार्य महाश्रमण ने नाहर भवन में उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझे आत्म-संतोष हो रहा है कि मैं गुरुवर महाप्रज्ञ की अवशेष रही अहिंसा यात्रा को पुनः शुरू कर रहा हूँ और समय व स्वास्थ्य की अनुकूलता के साथ दीर्घ यात्राएं करने का भाव है। अहिंसा यात्रा का दूसरा चरण प्राणी जगत में स्नेह के जागरण, मानवीय और नैतिक मूल्यों का विकास का सशक्त माध्यम बनेगा। इस यात्रा का उद्देश्य आमजन में अनुकम्पा और नैतिकता का विकास करना है। आचार्य महाश्रमण ने अहिंसा यात्रा की सफलता हेतु मंगलकामना की।

अहिंसा यात्रा का शुभारम्भ

आचार्य महाश्रमण ने सोमवार को आचार्य महाप्रज्ञ की अवशेष रही अहिंसा यात्रा का पुनः शुभारम्भ किया। विहार करने से पूर्व आचार्य महाश्रमण ने गुरुवरों को याद करते हुए मंत्रोच्चारण के साथ यात्रा का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने रत्नादिक मुनियों सहित मंत्री मुनि की वन्दना कर अहिंसा यात्रा रथ के साथ विहार किया। यात्रा में साधु-साध्वियां, समण-समणियां, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, महिला मण्डल, कन्यामण्डल, ते.यु.प., किशोर मण्डल, ज्ञानशाला, अणुव्रत समिति व मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं व सदस्यों सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं एवं जैनेत्तर समाज एवं संस्थाओं के श्रद्धालु चल रहे थे।

लूणासर में भव्य स्वागत

आचार्य महाश्रमण के करीब 11:45 बजे लूणासर गांव पहुँचते ही अणुव्रत समिति कार्यकर्ताओं व ग्रामीणों ने गुरुवर के स्वागत में पलक पांवडे बिछाए। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने शहीद भगवानसिंह रा. उ. प्रा. विद्यालय में अपने स्वागत अभिनन्दन समारोह में कहा कि भौतिक दृष्टि वाला व्यक्ति भौतिकता में सुख-शान्ति खोजता है और आध्यात्मिक व्यक्ति आत्मा में शांति का अन्वेषण करता है। जिसमें अध्यात्म के प्रति निष्ठा है वह व्यक्ति सत्य का आश्रय लेता है। राष्ट्रसन्त ने हिंसा के इस अतिचार के युग में अहिंसा यात्रा की प्रासंगिकता के विषय में कहा कि हिंसा है तभी अहिंसा की प्रासंगिकता है। आग है तभी पानी की आवश्यकता है। आचार्य महाश्रमण ने अहिंसा का सन्देश देते हुए कहा कि आदमी यह सोचे कि मेरे कारण किसी को कष्ट न उठाना पड़े। जितना हो सके दूसरों को चित्त समाधि देने का प्रयास करें। इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने ''मोड़ो बेगो फूट्यां सरसि घड़ों भर्‌योड़ो पाप रो'' गीत का संगान किया। आचार्यप्रवर ने उपस्थित विद्यालयी छात्र-छात्रओं को नशामुक्ति की प्रतिज्ञा दिलवाते हुए कहा कि ''रघुकुल रीत सदा चली आयी, प्राण जाए पर वचन न जाई।''

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा अहिंसा यात्रा से सबको नया मार्ग मिले, नैतिक चेतना जागृत हो तथा यह यात्रा मानव जाति में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक मूल्य के लिए सुरक्षा कवच बन कर उभरे। समारोह में मंत्री मुनि, मुनि सुखलाल आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। इससे पूर्व ग्रामवासियों की तरफ से रतनगढ विधायक राजकुमार रिणवां व करणी गौशाला के महावीर सिंह ने आचार्य महाश्रमण को अभिनन्दन पत्र भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर स्व. बुद्धमल गिड़िया की स्मृति में गिड़िया परिवार के सौजन्य से जरूरतमंदों को कम्बल वितरण किये गए। इसी क्रम में पन्नालाल विनायक परिवार की तरफ से पांच जरूरतमंद असहायों को एक-एक ट्राईसाइकिल व स्वरोजगार के लिए पांचों अणुव्रत समितियों को जरूरतमंद लोगों के लिए दो-दो सिलाई मशीन भेंट की गईं।

लूणासर में आचार्य महाश्रमण के स्वागत कार्यक्रम के दौरान श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा राजलदेसर के अध्यक्ष हुणतमल नाहर के सौजन्य से राजलदेसर अणुव्रत समिति सहित निकटवर्ती पांचों देहात अणुव्रत समितियों लूणासर, रतनादेसर, भरपालसर, जोरावरपुरा, बण्डवा को साहित्य भेंट किया गया।

147वां मर्यादा-महोत्सव सम्पन्न

मेरे लिए संघ सर्वोपरि : आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर, 10 फरवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अपने सान्निध्य में संपन्न हुए तेरापंथ धर्मसंघ के 147वें मर्यादा महोत्सव को संबोधित करते हुए कहा मेरे लिए तेरापंथ शासन, भैक्षव शासन प्रथम है। चित्त समाधि सबके रहे यह प्रयास मैंने किया है। मैं चाहता हूँ, आत्मनिष्ठा सबमें पुष्ट बनी रहें। सबमें संघनिष्ठा, आचारनिष्ठा, मर्यादानिष्ठा, आज्ञानिष्ठा बनी रहे। उन्होंने आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित्त पांचों मौलिक मर्यादाओं को पांच महास्तंभ बताते हुए कहा एक आचार्य के अनुशासन में चलना, यह बीच का प्रमुख स्तम्भ है। अन्य चारों मर्यादाएं चार तरफ के महास्तम्भ हैं। इन महास्तम्भ के आधार पर ही तेरापंथ रूपी इमारत खड़ी है। इसमें अतीत की शुद्धि, वर्तमान की भारहीनता और भविष्य के लिए नयी पुष्टि दी गई है।

उन्होंने तेरापंथ शासन के प्रति समर्पित भाव को दर्शाते हुए कहा संघ में साधना का विकास होना चाहिए। मैं इसे सर्वाधिक महत्व देता हूँ। साधना के विकास में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। कषायमन्दता और निर्धारित आचार में निष्ठा होनी चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने विभिन्न विषयों पर बोलते हुए कहा ज्ञानशाला एक बहुत बड़ा उपक्रम है, इसका एक बहुत बड़ा नेटवर्क है। अपेक्षानुसार ज्ञानशालाओं को ओर पोषण दिया जाना चाहिए। जहाँ ज्ञानशाला नहीं है, वहाँ ज्ञानशाला खोली जाए ताकि बच्चों को अच्छे ढंग से तैयार किया जा सके, उनमें संस्कारों का निर्माण किया जा सकें।

जैन विद्या की परीक्षाओं में शुद्धता आयें। उनमें नकल नहीं

इसके लिए पूर्व ही सबको संकल्प करवा दिये जाने चाहिए। इन परीक्षाओं में भाग लेने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित उपक्रम अच्छें चलें। उपासक श्रेणी गुरुदेव तुलसी का प्रसाद है, इसका और विकास होना चाहिए। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम नई संस्था है। संघ के बारे में उन्हें जानकारी मिले और संघ से भी उन्हें पोषण मिले।

खानपान की शुद्धता पर बोलते हुए गुरुदेव ने कहा भोजनालयों में जमींकन्द का प्रयोग न हो। मुख्य रूप से मूली, आलू, गाजर, शकरकन्द, लहसुन व प्याज इन छः जमींकन्द का व्यक्तिगत रूप में त्याग रहना चाहिए। इनमें सबसे ज्यादा जीव होते हैं।

समाज में भवन बनते हैं। उन भवनों के उद्घाटन या लोकार्पण समारोह में साधु-सन्तों का सान्निध्य प्राप्त हो सकता है मगर शिलालेख में सान्निध्य का अंकन नहीं होना चाहिए। साधु के अन्तरंग कार्यों की फोटो नहीं लेनी चाहिए। फोटो का दुरूपयोग भी नहीं होना चाहिए। दृष्टि के प्रति जागरुकता रखनी चाहिए। मौखिक दृष्टि से ज्यादा महत्वपूर्ण है लिखित दृष्टि।

नशामुक्ति अभियान

आचार्य महाश्रमण ने संघ के लिए वर्ष भर के कार्यों का दिशा निर्देश देते हुए कहा वर्तमान विश्व की एक ज्वलंत समस्या है नशा। मैं चाहता हूँ समाज नशे से मुक्त रहे। नशा जीवन की सबसे खतरनाक स्थिति है। इस ओर हमें ध्यान देना होगा और सभी को नशे से मुक्त बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करना होगा। उन्होंने इस वर्ष के लिए 12 व्रती श्रावकों को तैयार करने के साथ ही चौबीसी एवं श्रावक संबोध नामक ग्रंथ को कंठस्थ कराने पर जोर दिया एवं इस ओर विशेष जागरूकता से कार्य करने के लिए साधु-साध्वियों एवं समण-समणियों को इंगित किया।

चुनाव राजनीतिक अखाड़ा न बने

आचार्य महाश्रमण ने कहा धर्मसंघ की सभी संस्थाओं में पवित्रता बनी रहे। इनमें मनमुटाव की बजाए मनाव को महत्व दिया जाना चाहिए। मतभेद और मन-भेद दोनों में गहरा अन्तर है। मतभेद भले ही हो, मनभेद नहीं होना चाहिए। मतभेद सुलझ सकते हैं मनभेद सुलझना बड़ी कठिन कार्य है। धर्मसंघ की संस्थाओं में शालीनता रहनी चाहिए। चुनाव भी हो तो शुद्ध तरीके से होने चाहिए, उसे राजनीतिक अखाड़ा नहीं बनाना चाहिए। संस्थाओं के कार्यो में शुद्धता रहे, इन संस्थाओं को एक दूसरे का पोषण मिलते रहना चाहिए और इनका विकास उत्तरोत्तर निरन्तर होता रहे। उन्होंने अणुव्रत के क्षेत्र में तेरापंथी सभाओं, प्रेक्षाध्यान के सन्दर्भ में महिला मण्डल एवं जीवन विज्ञान के क्षेत्र में युवक परिषद् को प्रमुखता से कार्य करने का इंगित किया।

अनावश्यक खर्च न हो

आचार्य महाश्रमण ने कहा समाज में आडम्बर मुक्त एवं सादगीयुक्त कार्यक्रम हों तो ज्यादा गरिमामय होंगे। वर्तमान समय में धार्मिक, सामाजिक कार्यों में आडम्बर प्रदर्शन न हो, इसकी ज्यादा अपेक्षा है। कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए, पर उनमें अनावश्यक खर्चे न हो इस ओर ध्यान देना जरूरी है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा आचार्य भिक्षु के पास अनुभव और नियंत्रण दोनों थे इसलिए आज तेरापंथ धर्मसंघ और दृढता के साथ चल रहा है। एक गुरु का नेतृत्व, अनुशासन, आज्ञा का बहुत महत्व है हमारे संघ में। हमारे धर्मसंघ में ऐसे संस्कार है जिसमें आज्ञा को मुख्य आधार मानकर जीवन जीते हैं। गुरु आज्ञा सुरक्षा कवच है। आज्ञा में रहने से हम सुरक्षित रहते है। वे ही व्यक्ति सफल हो सकते है, विकास कर सकते है जो गुरु के प्रति समर्पित रहते हैं।

स्वागत भाषण मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष पन्नालाल बैद ने प्रस्तुत किया। साध्वी संघप्रभा, समणीवृन्द, मुनिवृन्द, साध्वी मंगलप्रज्ञा, केलवा चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी आदि ने अपनी अभिव्यक्तियां दी। मोहनलाल कठोतिया ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा वर्ष 2011 का प्रेक्षा ध्यान पुरस्कार रतनगढ के रणजीत दूगड़ को देने की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

अणुव्रती दल पटना, कलकत्ता, कानपुर में

दिल्ली, 3 फरवरी। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका के नेतृत्व में पंचसदस्यीय अणुव्रती दल ने 27 जनवरी से 3 फरवरी तक पटना, कलकत्ता एवं कानपुर की यात्रा कर अणुव्रत आंदोलन को गति देने की दृष्टि से अणुव्रत समितियों का गठन-पुनर्गठन किया, कार्यकर्ताओं से सम्पर्क साधा, अणुव्रत गोष्ठियों में भाग लिया एवं संसाधन जुटाने के लिए अर्थ संकलन किया।

26 जनवरी रात्रि को निर्मल एम. रांका, डॉ. महेन्द्र कर्णावट एवं विजयराज सुराणा दिल्ली से रेल द्वारा पटना के लिए रवाना हो 27 जनवरी की संध्यावेला में पटना पहुंचे। रात्रि आठ बजे कार्यकर्ताओं की गोष्ठी आयोजित हुई जिसमें बिहार प्रादेशिक अणुव्रत समिति का गठन किया गया। इसका अध्यक्षीय दायित्व अणुव्रती लेखक तथा बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड पटना के अध्यक्ष श्री सिद्धेश्वर प्रसाद को सौंपा गया। कार्यकर्ता बैठक में तनसुखलाल बैद, विजय बोथरा, नरपत दूगड़, राजेन्द्र कोठारी, विनोद दूगड़, सौरभ आचार्य, अवधेश प्रसाद, राजकुमार महनोत, प्रकाश बोथरा, संतोष कुमार गेलड़ा, मनोज कुमार बैंगानी उपस्थित थे।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रतों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए बिहार स्तरीय अणुव्रत संगठन को गठित किये जाने पर जोर दिया।

अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों की अवगति देते हुए अणुव्रत संगठन को मजबूत बनाने पर जोर दिया।

पटना के प्रमुख कार्यकर्ता विजय बोथरा ने कहा हमारी संस्थाओं की कथनी-करनी में अंतर है। हम पहले स्वयं अणुव्रती बनें और अणुव्रतों को सच्चे मन से स्वीकारें। कार्यकर्ताओं के पास प्रचार-प्रसार सामग्री का भी अभाव है। मनोज बैंगानी ने कहा व्यक्ति की रुचि जिस कार्य एवं संस्था में हो उसे उसी संस्था से जोड़ा जाये।

सौरभ आचार्य ने कहा बिहार के हर जिले में अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र बने तथा बिहारव्यापी अणुव्रत संगठन हो। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने अणुव्रत समितियों के करणीय कार्यों की विवेचना करते हुए बिहार प्रादेशिक अणुव्रत समिति के गठन का विचार रखा।

अणुव्रती दल ने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र पटना का अवलोकन किया, जिसका संचालन सौरभ आचार्य एवं अवधेश प्रसाद कर रहा है एवं तनसुख बैद इस केन्द्र के निदेशक हैं। तनसुख बैद, सौरभ आचार्य के साथ अणुव्रती दल ने राजकीय आदर्श कन्या माध्यमिक विद्यालय गर्दनीबाग, यारपुर-पटना का भी निरीक्षण किया, जहां प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का क्रम नियमित रूप से चल रहा है। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका आशारतन सिंह ने हमारा स्वागत करते हुए बालपीढ़ी में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान के महत्व को प्रतिपादित किया।

अणुव्रती दल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष सिद्धेश्वर प्रसाद के आवास स्थल पर जाकर उन्हें बधाई दी। पटना में अणुव्रत के समर्पित कार्यकर्ता तनसुखलाल बैद की लोकप्रियता एवं कर्मठता सर्वत्र दिखाई दी।

बिहार प्रादेशिक अणुव्रत समिति का गठन
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद अध्यक्ष मनोनीत

● हावड़ा में

28 जनवरी 2011 रात्रि को पटना से रवाना होकर अणुव्रती दल 29 जनवरी 2011 की प्रातःवेला में हावड़ा पहुंचा जहां कोलकाता के समर्पित कार्यकर्ता एवं अणुव्रत महासमिति के पूर्व उपाध्यक्ष तरुण सेठिया तथा अणुव्रत महासमिति के प्रतिनिधि विमल बांठिया ने अणुव्रती दल की अगवानी की।

अणुव्रती दल के आवास की व्यवस्था दक्षिण कोलकाता श्री जैन श्वे. तेरापंथी सभा भवन में की गयी, जहां अणुव्रत महासमिति के निवर्तमान महामंत्री मगन भाई जैन, पूर्व रात्रि को ही पहुंच चुके थे एवं अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा 30 जनवरी 2011 को कोलकाता पहुंचे।

उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वे. तेरापंथी सभा भवन में साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में 29 जनवरी प्रातः कार्यकर्ताओं की गोष्ठी हुई जिसमें पश्चिम बंगाल एवं कोलकाता महानगर में अणुव्रत आंदोलन को सक्रिय करने तथा अणुव्रत संगठन को पुनर्गठित करने का निर्णय हुआ। गोष्ठी में सभाध्यक्ष अमरचंद दूगड़, मंत्री बिमल बैद तथा तेजकरण बोथरा, थानमल बोरड़, निर्मल चंडालिया, सुशील चंडालिया, राजेन्द्र सुराणा, रणजीत बोथरा, नरेन्द्र लूणिया, माणकचंद जैन, तरूण सेठिया, मिलाप दूगड़ की प्रमुख उपस्थिति रही।

कार्यकर्ता गोष्ठी में कार्यकर्ताओं का विचार रहा कि कलकत्ता महानगर में कम से कम चार अणुव्रत समितियों (उत्तर-दक्षिण-पूर्व-पश्चिम) का गठन हो और क्रियाशील कार्यकर्ताओं को जोड़ा जाये। अणुव्रती दल का उत्तर हावड़ा सभा द्वारा साहित्य से सभाध्यक्ष ने सम्मान किया।

● दक्षिण कोलकाता में

29 जनवरी की संध्यावेला में अणुव्रती दल ने दक्षिण कोलकाता श्री जैन श्वे. तेरापंथी सभा की कार्यसमिति बैठक में अणुव्रत यात्रा के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा अणुव्रत आंदोलन को प्रारम्भिक अवस्था में खाद और पानी तत्कालीन कलकत्ता से प्राप्त हुआ है। प्रारंभ में कलकत्ता में रेफिल आर्ट प्रेस की स्थापना हुई, जनपथ पाक्षिक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, प्रचारात्मक साहित्य का प्रथम सेट प्रकाशित हुआ और आचार्य तुलसी के 1959 चातुर्मासिक प्रवास में अणुव्रत दर्शन का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। अणुव्रत दर्शन की आज महती अपेक्षा है, अतः हम सभी मिलकर पश्चिम बंगाल में अणुव्रत आंदोलन के स्वर को पुनः बुलंद करें।

महामंत्री विजयराज सुराणा ने अणुव्रत महासमिति की गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों की जानकारी दी।

अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने आचार्य तुलसी शताब्दी वर्ष के संदर्भ में अणुव्रत की आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए सभी को इससे जुड़ने का आह्वान किया।

बैठक में सुरेन्द्र दूगड़, धर्मचंद राखेचा, विनोद बैद, बनेचंद मालू, प्रतिभा कोठारी, भंवरलाल सिंघी, राजकरण सिरोहिया, तरूण सेठिया एवं तारादेवी सुराणा इत्यादि लोककर्मियों की प्रमुख उपस्थिति रही। दक्षिण कोलकाता सभा के अध्यक्ष एवं महामंत्री ने साहित्य भेंट कर अणुव्रती दल का स्वागत सम्मान किया।

कोलकाता में अणुव्रत संगोष्ठी

साध्वी कनकश्री की प्रेरणा से जुड़े कार्यकर्ता

कोलकाता, 30 जनवरी। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अणुव्रत महासमिति के पदाधिकारियों की संगठन यात्रा के दौरान महासभा भवन कोलकाता में अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

साध्वी कनकश्री ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा आज विश्व में भ्रष्टाचार का साम्राज्य है, क्रूरता फैल रही है, हिंसक प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं, नैतिक पतन हो रहा है, चारित्रिक एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इन सब समस्याओं का समाधान आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के रूप में दिया। अणुव्रत आंदोलन ने तेरापंथ को ऊंचाइयां प्रदान की, व्यापकता दी, पहचान दी। हम अणुव्रत को व्यापक न बना पाएं, यह हमारे लिए एवं राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है। अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रत महत्वपूर्ण हैं एवं गंभीर समस्याओं का समाधान प्रदान करने वाले हैं। जिस तरह एक छोटा-सा बीज अपनी काया से दस लाख गुना फल पैदा कर सकता है उसी तरह एक-एक व्रत हमारे जीवन को रोशन कर सकता है, मानव मात्र में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा कर सकते हैं। हमारे संघ की सभी संस्थाएं आचार्य महाश्रमण के निर्देशानुसार कार्य कर रही हैं। अणुव्रत भी हम सबका महनीय दायित्व है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस दिशा में अपने चिंतन को दिशा दे व जन-जन में अणुव्रत को प्रसारित कर अपने दायित्व का निर्वहन करने हेतु सचेष्ट हो, इसकी अपेक्षा है। आज पुनः इस समय में अणुव्रत की अत्यधिक जरूरत है। गुरुदेव तुलसी एवं महात्मा गांधी के पुनर्जन्म की आवश्यकता है, ताकि जन-जन में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा हो और देश, समाज, राष्ट्र, परिवार, व्यक्ति भ्रष्टाचार, अनैतिकता, अप्रामाणिकता, हिंसा आदि ज्वलंत समस्याओं से मुक्त हो सके। आज देवेन्द्र कर्णावट व मोतीलाल रांका दोनों के पुत्र डॉ. महेन्द्र कर्णावट एवं निर्मल एम. रांका अपने पिताश्री की परम्परा व दायित्व का निर्वहन करते हुए यहां उपस्थित हुए हैं। यह प्रसन्नता का विषय है। साध्वी मधुलता आदि साध्वीवृंद ने ''अणुव्रत का उजाला फैले देश भर में'' गीत का मधुर संगान कर वातावरण को अणुव्रतमय बना दिया।

समणी शुक्लप्रज्ञा ने कहा जिस तरह छिलका फल को सुरक्षा प्रदान करता है, त्वचा शरीर को सुरक्षा प्रदान करती है, वैसे ही व्रत आत्मा का सुरक्षा कवच है। व्रतों का छोटा उपक्रम अणुव्रत रूप में आचार्य तुलसी ने आज से 62 वर्ष पूर्व आंदोलित किया। उसी अनुरूप आवश्यकता है संयम की, व्रत की। संयम हो आदतों का, भावनाओं का, प्रकृति का। बीज भी विकास के लिए धरती के अनुशासन को स्वीकार करता है उसी प्रकार हमारे भी विकास के लिए आत्मानुशासन की अपेक्षा है, अपने आपको बदलने की अपेक्षा है।

अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने पश्चिम बंग क्षेत्र की यात्रा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा अणुव्रत के माध्यम से संघ को एक विशिष्ट पहचान मिली है। उन्होंने उपस्थित जनसमुदाय से अणुव्रत कार्यक्रमों से सक्रियता के साथ जुड़ने का आह्वान किया। महासभा के महामंत्री भंवरलाल सिंघी ने कहा पूज्यवर द्वारा इंगितानुसार अणुव्रत का कार्य गतिमान हो इस हेतु महासभा अपनी सम्बद्ध सभाओं के माध्यम से तदानुरूप वातावरण का निर्माण कर रही है। सभाएं भी सक्रियता से अणुव्रत कार्यों से जुड़ें।

अणुव्रत महासमिति के पूर्व महामंत्री मगन भाई जैन ने कहा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने जो नवनीत निकाला वह अणुव्रत के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता अभिव्यक्त करते हुए गीत का संगान किया।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य तिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा आज के दिन अणुव्रत के विचारों को आगे बढ़ाना प्रासंगिक है। अणुव्रत की आचार संहिता की एक पंक्ति मैं किसी के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा इसका संकल्प व्यक्ति-व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र को रूपांतरित करने में सक्षम है। डॉ. कर्णावट ने अभिभावकों द्वारा ढ़ाई साल के बच्चे को स्कूल में भेजने को गलत ठहराते हुए पारिवारिक हिंसा, भ्रूणहत्या, बुजुर्गों की उपेक्षा, सांस्कृतिक ह्रास, प्रदर्शन एवं आडम्बर से बचकर अणुव्रत के नियमों को जीवन में उतारकर सहज व हल्का जीवन जीने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने कहा कार्यकर्ता जब किसी आंदोलन से पीढ़ी-दर-पीढ़ी जुड़ते हैं तो उस आंदोलन की सफलता अवश्यम्भावी है। अणुव्रत का उजाला देशभर में, विश्वभर में फैले इस हेतु सभी क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर सक्रिय एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की टीम बनाकर आगे आना होगा। आचार्यप्रवर की संभावित बंगाल यात्रा की तैयारी अणुव्रत के कार्यक्रमों को गति देकर आप लोग अभी से प्रारंभ करें। उन्होंने देश भर में चल रही अणुव्रत महासमिति की गतिविधियों की जानकारी दी।

कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। आगन्तुक अतिथियों का सम्मान साहित्य, मोमेन्टो प्रदान कर तेरापंथी सभा कोलकाता एवं पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा किया गया। कोलकाता सभा के अध्यक्ष करण सिंह नाहटा एवं प्रादेशिक समिति के मंत्री श्याम सुंदर चौरड़िया ने स्वागत किया। महासभा के पूर्व अध्यक्ष रतनलाल रामपुरिया के अभिनंदन ग्रंथ 'सेवा के सोपान' को उनके पुत्र अभय कुमार रामपुरिया ने साध्वीजी एवं समणीजी को उपहृत किया। कोलकाता सभा के मंत्री नरेन्द्र कुमार मणोत ने धन्यवाद ज्ञापन किया। संचालन तरूण सेठिया ने किया।

अणुव्रत समिति कोलकाता का गठन

www.terapanthinfo.com

पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति का पुनर्गठन

तरूण सेठिया पश्चिम बंगाल के प्रभारी मनोनीत
पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति के प्रकाश सुराणा अध्यक्ष एवं प्रतिभा कोठारी महामंत्री मनोनीत
श्यामसुंदर चोरड़िया अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष मनोनीत

● कार्यकर्ता गोष्ठी

30 जनवरी को महासभा भवन में आयोजित अणुव्रत गोष्ठी के तत्काल बाद कार्यकर्ताओं की गोष्ठी आयोजित हुई। जिसमें डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत समिति की गठन प्रक्रिया एवं कार्यदिशा को स्पष्ट किया। महामंत्री विजयराज सुराणा ने अणुव्रत योगक्षेमी योजना को प्रस्तुत करते हुए अणुव्रत पत्रिका से जुड़ने की बात रखी।

तेरापंथी महासभा के महामंत्री भंवरलाल सिंघी का विचार रहा कि प्रारंभ में पश्चिम बंगाल के लिए अणुव्रत महासमिति एक प्रभारी की नियुक्ति करे। प्रभारी यहां की स्थितियों का अवलोकन कर अणुव्रत समितियों का आवश्कता अनुसार गठन करे।

प्रकाश नाहर ने कहा जो कार्यकर्ता जनता के बीच जा सके उन्हें ही अणुव्रत से जुड़ना चाहिए।

जैन श्वे. तेरापंथी सभा कोलकाता पूर्व के अध्यक्ष सुशील चौपड़ा ने कहा हम अपने स्तर पर अणुव्रत के कार्य को गति दे रहे हैं। विगत दिनों में पूर्वांचल में अणुव्रत रैली का आयोजन किया गया।

अणुव्रती दल एवं महासभा के महामंत्री भंवरलाल सिंघी के आह्वान पर उपस्थित जनमेदिनी ने अणुव्रत महासमिति को आर्थिक योगदान देने की एक-एक कर घोषणा की। आर्थिक संकलन के क्रम में चम्पा बाई की सक्रियता से बैठक में लगभग दो लाख रु. का अनुदान प्राप्त हुआ।

● कोलकाता पूर्व

30 जनवरी की सायंवेला में अणुव्रती दल कोलकाता पूर्व के जैन श्वे. तेरापंथी सभा भवन पहुंचा एवं उपस्थित कार्यकर्ताओं को कोलकाता यात्रा के उद्देश्यों से अवगत कराया।

कोलकाता पूर्व की तेरापंथी सभा के युवा अध्यक्ष सुशील चोपड़ा समाज भूषण स्व. छोगमल चोपड़ा के प्रपौत्र हैं।

सभा मंत्री संजय सिंघी ने सुझाया कि अणुव्रत के प्रचार साहित्य की सी.डी. क्षेत्रीय सभाओं को भेजी जाए, ताकि सभाएं स्थानीय स्तर पर अपनी आवश्यकतानुसार प्रचार सामग्री को मुद्रित करवा सके।

● अर्थ संकलन

31 जनवरी को जनसम्पर्क एवं अर्थ संकलन का क्रम रहा। कोलकाता की जुझारू महिला कार्यकर्ता श्रीमती चम्पाबाई एवं प्रतिभा कोठारी ने दूरभाष पर ही सम्पर्क कर लगभग दो लाख रुपये की राशि अणुव्रत महासमिति के लिए एकत्र की। चम्पाबाई के व्यापक सम्पर्क, प्रतिष्ठा एवं कार्यशैली को देखकर लगा कि यदि कार्यकर्ता मन से अणुव्रत की प्रवृत्तियों के प्रचार-प्रसार के लिए जुट जाएं तो अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने का सपना शीघ्र ही पूरा हो जाएगा। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने भी जनसम्पर्क कर लगभग दो लाख रु. की राशि अनुदान के रूप में प्राप्त की।

● अणुव्रत समिति का गठन

1 फरवरी रात्रि को महासभा भवन में कार्यकर्ताओं की गोष्ठी में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति के पुनर्गठन तथा अणुव्रत समिति कोलकाता के गठन की घोषणा की।

निर्मल एम. रांका ने जनभावनाओं का आंकलन करने के उपरांत पश्चिम बंगाल के लिए तरूण सेठिया को प्रभारी मनोनीत किया, अणुव्रत समिति कोलकाता के अध्यक्ष पद हेतु श्यामसुंदर चोरड़िया के नाम की घोषणा की तथा पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत समिति का पुनर्गठन करते हुए प्रकाश सुराणा को अध्यक्ष एवं प्रतिभा कोठारी को मंत्री पद पर मनोनीत किया।

इसी के साथ निर्मल एम. रांका ने चम्पाबाई कोठारी, धर्मचंद राखेचा एवं हीरालाल सुराणा को पश्चिम बंग प्रादेशिक अणुव्रत का परामर्शक मनोनीत किया।

● कानपुर में अणुव्रत गोष्ठी

2 फरवरी सायं को हावड़ा से प्रस्थान कर अणुव्रती दल निर्मल एम. रांका, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, बाबूलाल गोलछा प्रातः पांच बजे कानपुर पहुंचे। कानपुर में बुच्चाजी के मकान पर अल्पाहार पर कार्यकर्ताओं से मिलन एवं विचार-चर्चा हुई। इसमें निम्न कार्यकर्ता उपस्थित थे चम्पालाल सेठिया, धनराज सुराना, मांगीलाल बोथरा, प्रवीण सुराना, राजकरण दूगड़, विजयराज पुगलिया, बच्छराज बुच्चा, बच्छराज सेठिया, पूनमचंद सुराना, मोतीलाल सेठिया, राजकरण बुच्चा, तेजकरण बुच्चा, सुशील बैद, नरपत बैद एवं टीकमचंद सेठिया।

फीलखाना तेरापंथ भवन में आयोजित अणुव्रत गोष्ठी को संबोधित करते हुए अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका ने कहा अणुव्रत असाम्प्रदायिक आंदोलन है जिसके माध्यम से जन-जन में नैतिक अहिंसक मूल्यों एवं सर्वधर्म समभाव के सनातन मूल्य को पुनर्प्रतिष्ठापित करने का भगीरथ प्रयास विगत छः दशकों से हो रहा है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का प्रवर्तन कर लाखों व्यक्तियों तक अहिंसा, सत्य चरित्रनिष्ठा कर्त्तव्यनिष्ठा का संदेश पहुंचाया है। अणुव्रतों को स्वीकार करके हम जीवन में नया बदलाव ला सकते हैं।

अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा अणुव्रत यानी छोटे-छोटे व्रत जिन्हें जीवन शैली में स्वीकार कर हम परिवार, समाज और राष्ट्र को चरित्र-संपन्न बना सकते हैं। अणुव्रत न सम्प्रदाय है न परम्परा। यह तो जीवन शैली है जो सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। आज जो घरेलू हिंसा देखने को मिल रही हैं उसका मुकाबला अणुव्रत से ही कर सकते हैं।

अणुव्रत समिति कानपुर के अध्यक्ष टीकमचंद सेठिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा अणुव्रत आंदोलन अहिंसक और नैतिक मूल्यों के विकास पर जोर देता है तो सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रहार करता है। आवश्यकता है इसे जीवन में जीने की।

अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा, उग्रसेन चतुर्वेदी, मदनलाल जैन, ज्योति भूतोड़िया, चम्पालाल सेठिया ने विचार रखे। कानपुर नगर में अहिंसा समवाय, नशामुक्ति अभियान, भ्रष्टाचार विरोधी अभियान, घरेलू हिंसा निषेध अभियान प्रारंभ करने हेतु जिला मजिस्ट्रेट मुकेश मेश्राम, पुलिस अधीक्षक अशोक मुथा जैन ने सराहना की।

www.terapanthinfo.com

विद्यार्थियों का जीवन निर्माण

सोलापुर, 21 जनवरी। साध्वी सत्यप्रभा ने स्थानीय जिला परिषद् के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा बच्चे देश का भविष्य हैं। भविष्य की उज्जवलता के लिए बच्चे अभी से लक्ष्य बनायें कि हमें पढ़ाई के साथ-साथ ईमानदारी, अनुशासन, सदाचार आदि गुणों का विकास करना है। ऊंची डिग्री प्राप्त करके आप डॉक्टर, शिक्षक व इंजीनियर बन भी गये लेकिन अच्छा इंसान नहीं बनें तो आपकी पढ़ाई अधूरी होगी। अच्छा विद्यार्थी ही अच्छा इन्सान बन सकता है। साध्वीश्री ने महाराष्ट्र की धरती पर जन्मे वीर छत्रपति शिवाजी के मार्मिक घटना-प्रसंग की व्याख्या करते हुए बच्चों को प्रेरित किया।

साध्वीश्री ने अणुव्रत की व्याख्या करते हुए कहा अणु छोटा एवं व्रत नियम अर्थात् छोटे-छोटे नियमों को स्वीकार करना। कलात्मक जीवन जीने का महत्वपूर्ण आयाम है जीवन विज्ञान। विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में शिक्षक वर्ग की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। साध्वीश्री की प्रेरणा से उपस्थित बच्चों ने परीक्षा में नकल नहीं करने एवं नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प किया। कार्यक्रम में लगभग 300 विद्यार्थी उपस्थित थे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य ने साध्वीश्री के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बच्चों को निरंतर प्रयोग करने की प्रेरणा दी।

गणतंत्र पर सम्मान

गंगापुर। अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान में उपखंड स्तर पर एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था 'आतंकवाद - एक समस्या और समाधान।' प्रस्तुत विषय पर उपखंड स्तर पर विद्यालयों से निबंध आमंत्रित किये गये। फलस्वरूप 129 निबंध प्राप्त हुए।

अणुव्रत समिति गंगापुर के संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने निबंधों के मूल्यांकन अनुसार अमित बोलिया विद्या निकेतन की कक्षा 10 की छात्रा सुश्री प्रीति रांका ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर आचार्य तुलसी अमृत महाविद्यालय के प्राचार्य एम. के. रांका की सुपुत्री मेधावी छात्रा प्रीति रांका का मुख्य अतिथि उपखंड अधिकारी ओंकारलाल जोशी ने सम्मान-पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मान किया।

अणुव्रत समिति प्रतिनिधियों द्वारा दर्शन लाभ

उदयपुर, 4 फरवरी। अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया, उपाध्यक्ष सवाईसिंह पोखरना के साथ समिति का एक दल ने राजलदेसर जाकर आचार्य महाश्रमण के दर्शन किये। साथ ही अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा वर्ष 2009-10 में किये गये कार्यक्रमों का प्रतिवेदन भी आचार्यश्री को भेंट किया।

अणुव्रत समिति उदयपुर के प्रचारमंत्री राजेन्द्र सेन ने जानकारी देते हुए बताया कि अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा वर्ष 2009-10 में नशामुक्ति, प्रेक्षाध्यान, चरित्र निर्माण, निःशुल्क चिकित्सा शिविर जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं।

इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा किये गये कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए तथा मानव सेवा में जनहित के कार्य करते रहने का प्रेरणादायी आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण के साथ अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल भी उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति द्वारा सेवा कार्य

जालना, 26 जनवरी। गणतंत्र दिवस के अवसर पर अणुव्रत समिति एवं महिला मंडल, जालना द्वारा सभा भवन में सहधार्मिक महिलाओं को स्वयं रोजगार के उद्देश्य हेतु छह सिलाई मशीनें उपलब्ध करवायी गयी। मुख्य अतिथि सुखलाल थे। स्थानीय अमृत सांसद व ज्ञानशाला एवं समण संस्कृति संकाय शेष महाराष्ट्र के संयोजक महावीर धारीवाल, सुरेश सेठिया, विनय बाबू आबड, रमेश चंद्र चोविश्या, स्थानक संघ के विनय कोठारी व आनंद सुराणा, हस्तीमल बंब, अणुव्रत सेवी रतनीदेवी सेठिया, पद्मा कोठारी एवं अन्य भाई-बहन उपस्थित थे। स्वागत रतनीदेवी सेठिया ने किया।

उपस्थित अतिथियों की राय थी अभावग्रस्त महिलाओं को सिलाई मशीन उपलब्ध करवाना महिला स्व रोजगार की दिशा में एक अच्छा कदम है। अमृत सांसद महावीर धारीवाल ने कहा कि अणुव्रत समिति क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रही है। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सुमन मरलेचा ने किया। कार्यक्रम की सफलता में महावीर धारीवाल, रतनीदेवी सेठिया, डालचंद बोथरा, अजीत मरलेचा, बिहारलाल मरलेचा, प्रदीप धारीवाल, गौतम समदरिया, बालकिशन पवार, अहमदभाई लोहार, अब्दुल कादिरभाई, मुसाभाई, गिरीष मरलेचा, सुनील सेठिया, प्रकाश पिपाड़ा, निलेश परलकर, मदन धोका, सतीश संचेती, प्रकाश बोरा, भंवरलाल बोथरा, संचालन उर्मिला पिपाडा ने किया।

निःशुल्क मधुमेह जांच शिविर

उदयपुर, 30 जनवरी। अणुव्रत समिति उदयपुर एवं मित्र व्यवसाय समिति उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में घंटाघर पर महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर निःशुल्क मधुमेह जांच शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का उद्घाटन डीआईजी भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, उदयपुर टी.सी. डामोर एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया ने जांच कराकर तथा दीप प्रज्जवलित कर किया। अणुव्रत समिति उदयपुर के मंत्री अरविन्द चित्तौड़ा ने शिविर की जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में 49 महिलाओं एवं 182 पुरुषों ने मधुमेह की जांच कराई।

शिविर में जांच परीक्षण रोश डायग्नोस्टिक के पवन नागौरी के सौजन्य से किया गया। शिविर की सफलता में जमनालाल दशोरा, शांतिलाल लक्षकार, महेश, बसन्त परिहार, नारायण परिहार, राजेश सोनी, महेश चौहान, प्यारेलाल सोनी, पुरुषोत्तम जीनगर, विनोद सोनी, रूप शंकर पालीवाल, अरविन्द सोनी, मोहन अलंकार, अणुव्रत समिति के अशोक राठौड़, राजेन्द्र सेन, सुरेश सियाल, राधाकिशन व्यास, योगेश गहलोत, नजमा मेवा फरोश, सुरेश जैन, दामोदर सोनी, भगवतीलाल नागर, महेन्द्र खतुरिया, विष्णु जीनगर का सराहनीय श्रम रहा। कार्यक्रम की संपन्नता पर दो मिनट का मौन धारण कर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भावांजलि अर्पित की गयी।

बाबूलाल गोलछा सह-संयोजक नियुक्त

अणुव्रत महासमिति के संयुक्तमंत्री बाबूलाल गोलछा को दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली प्रदेश जनसंपर्क प्रकोष्ठ का सह-संयोजक एवं राजस्थानी व जैन समाज प्रभारी नियुक्त किया है। बाबूलाल गोलछा पूर्व में भी भाजपा की कई ईकाइयों में अपनी सेवाएं देते रहे हैं।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत ज्ञान से आचरण आदर्श बने

नई दिल्ली, 5 फरवरी। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार ने अ.भा. अणुव्रत न्यास के तत्वावधान में आयोजित **''अणुव्रत एक मिशन''** विषयक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा अणुव्रत आंदोलन मानवता के लिए कल्याणकारी उपक्रम है। अगर व्यक्ति अणुव्रत आचार संहिता का पालन करे तो वह विकास के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति में सहयोगी बन सकता है। अणुव्रत आंदोलन स्वयं पर नियंत्रण करने की प्रेरणा देता है। मुनि सुधाकर ने कहा वर्तमान में जो भ्रष्टाचार सुरसा की तरह मुंह बाये खड़ा है अणुव्रत के माध्यम से ही इससे मुक्त हो सकते हैं। मुनि दीपकुमार ने भी अपने विचार रखे।

मुख्य आयकर आयुक्त मिलाप चन्द जैन ने कहा हर व्यक्ति विकास करना चाहता है, विकास करता भी है। परंतु विकास के साथ विनम्रता भी बढ़नी चाहिए। ज्ञान के साथ अगर विनम्रता नहीं बढ़ती है, तो वह ज्ञान साधक नहीं बाधक बन जाता है। ज्ञान प्राप्ति का उद्देश्य हमारे सामने स्पष्ट होना चाहिए। हमारा ज्ञान दूसरों के लिए उपयोगी बने, तभी उसकी सार्थकता है।

अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा ने कहा ज्ञान के साथ विवेक का जागरण होना जरूरी है, नहीं तो ज्ञान भी अज्ञान बन जाता है। विवेक के अभाव में व्यक्ति अनैतिकता की ओर बढ़ता है। जो स्वयं एवं राष्ट्र के लिए पतन का द्वार खोलते हैं।

कांग्रेस सांसद विजय दर्डा ने कहा वर्तमान में अणुव्रत आंदोलन बहुत प्रासंगिक है। यह नैतिकता, सच्चरित्र और मानवता के निर्माण का आंदोलन है। पूर्व प्रबंध न्यासी कन्हैयालाल जैन ने कहा अणुव्रत मिशन भाव परिवर्तन का प्रभावी आयाम है जिसके द्वारा अपने भावों को शुद्ध किया जा सकता है। कार्यक्रम के संयोजक आयकर आयुक्त कैलाश चन्द जैन ने कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला।

प्रारंभ अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रशिक्षक रमेश कांडपाल द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। संयुक्त प्रबंध न्यासी सुशील कुमार जैन ने अणुव्रत को नैतिकता की संजीवनी बताते हुए आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डी.आई.जी सतीश गोल्छा, डॉ. महावीर गोल्छा, स्पेशल पुलिस कमिश्नर शांति जैन, विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव सतीश मेहता, अतिरिक्त आयुक्त नवीन जैन, मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक रेलवे वी.के. जैन, अतिरिक्त आयुक्त अजीत कुमार जैन, मधु जैन ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में विजयवर्धन डागा, सम्पतमल नाहाटा, एम.एल. सेठिया, के.के. जैन, नरपत मालू, निर्मल भंसाली, सूरज सुराणा उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति सायरा की बैठक

सायरा, 31 जनवरी। अणुव्रत समिति सायरा की कार्यकारिणी बैठक अध्यक्ष मीठालाल भोगर के निर्देशन में आयोजित हुई। ''अणुव्रत सेवी'' जसराज जैन ने अणुव्रत समिति सायरा द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी देते हुए उपस्थित सदस्यों को अणुव्रत पाक्षिक के अधिक से अधिक सदस्य बनाने तथा अणुव्रत योगक्षेमी योजना से जुड़ने का आह्वान किया। जसराज जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष अणुव्रत पाक्षिक के मैंने 113 एवं मीठालाल भोगर ने 55 सदस्य बनाये हैं। अणुव्रत परीक्षा के क्रम में इस वर्ष 5 विद्यालयों में 302 विद्यार्थियों एवं 4 शिक्षकों ने भाग लिया।

■ प्रणाम आगम मनीषी को

आगम मनीषी मुनि श्री दुल्हराज का 19 जनवरी 2011 को श्रीडूंगरगढ़ में महाप्रयाण। मुनि श्री दुल्हराज आगम साहित्य के हिन्दी अनुवादक, गुजराती उपन्यासों के हिन्दी अनुवादक एवं कई पुस्तकों के रचनाकार थे। आचार्य तुलसी के हाथों दीक्षा की और मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ) के साथ वह जीवन का विकास करते हुए, साहित्य मनीषी के रूप में प्रख्यात हुए। मुनिश्री का हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, पाली, गुजराती भाषाओं पर पूरा अधिकार रहा। मुनिश्री की सरलता, आत्मीयता, समर्पण एवं ज्ञान पिपासुता सदैव स्मरणीय रहेगी। अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार में भी मुनिश्री का सक्रिय सहयोग रहा। अणुव्रत महासमिति परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

■ समाजसेवी सेठिया का निधन

अणुव्रत समिति कानपुर के अध्यक्ष टीकमचंद सेठिया के पिताश्री कानमल सेठिया का 92 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। सेठियाजी धार्मिक, सामाजिक एवं व्यापारिक संस्थाओं के विकास के लिए सदैव समर्पित रहे। वे जागरूक एवं विवेकशील व्यक्तित्व थे। अपनी सरलता, कर्मठता और मिलनसारिता के सहारे सेठियाजी ने व्यापक पहिचान बनाई। मृत्यु उपरांत परिजनों ने सेठियाजी के नेत्रों का दान कर दो नेत्रहीन व्यक्तियों के जीवन को प्रकाशित किया।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बी.एन. जोशी ने अपने शोक संदेश में कहा कानमलजी समाजसेवी, आध्यात्मिक भारतीय मनीषा के जानकार थे। वे अत्यन्त धार्मिक एवं मिलनसार व्यक्ति थे।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा मृत्यु एक नियति है। उसे टाला नहीं जा सकता। वियोग के समय धार्मिक माहौल के निर्माण का प्रयास हो। दिवंगत आत्मा को अणुव्रत परिवार की हार्दिक पुष्पांजलि।

■ शासनसेवी पन्नालाल बांठिया का निधन

अणुव्रत आंदोलन के आधार-स्तंभ शासनसेवी पन्नालाल बांठिया का 29 जनवरी 2011 को निधन हो गया। पन्नालाल बांठिया ने सन् 1954 से अणुव्रत आंदोलन से जुड़कर राजस्थान में विविध आयामों का नियमित संचालन कर अपनी कर्मजा शक्ति का परिचय दिया। वे संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित तथा समाज सेवा में संलग्न रहे। उन्होंने अपना जीवन अनुशासित, संयमित, सेवाभावी एवं सच्चे अणुव्रती के रूप में जीया। कर्मशील पन्नालाल बांठिया की अंतःचेतना इतनी प्रबल थी कि अस्वस्थता के समय में कभी दुःख प्रकट नहीं किया। अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

www.terapanthinfo.com

दूसरों के हित की भावना रखने वाला ही करता है अपना कल्याण : आचार्य महाश्रमण

अणुव्रत पुरस्कार-2009 सुषमा जैन को प्रदत्त

राजलदेसर, 11 फरवरी। जब साधना का अभ्यास परिपुष्ट बन जाता है, वह व्यक्ति दृष्टा बन जाता है। जो वीतराग केवली होते हैं, वे दृष्टा होते हैं। जिस व्यक्ति ने दृष्टा की भूमिका पर आरोहण कर लिया है, वह वीतराग को वरण कर लेता है। उन्हें उपदेश की अपेक्षा नहीं होती। उन्हें ज्यादा संयम से कहने की अपेक्षा भी नहीं रहती। वे स्वयं पर अनुशासन करने वाले होते है।

उन्होंने कहा आदमी के मन में कल्याण करने की भावना होनी चाहिए। स्वकल्याण और परकल्याण दोनों हो। पर कल्याण के लिए अनुकम्पा की चेतना का जागरण होना चाहिए। दूसरों के प्रति प्रमोद भावना, मंगल भावना होना अच्छी बात है। जो व्यक्ति दूसरों के प्रति हित, कल्याण व चित्त समाधि की भावना रखता है वह अपना कल्याण भी करता है।

अणुव्रत लेखक मंच द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह में बोलते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा अणुव्रत एक व्यापक अभियान है। इसकी पहले भी आवश्यकता थी पर आज तो अत्यन्त गहरी आवश्यकता है। जिस प्रकार भ्रष्टाचार बढ रहा है, हिंसा बढ़ रही है उसे रोकने के लिए अणुव्रत जैसे नैतिक अभियानों की अत्यन्त आवश्यकता है। इस कार्य को आगे बढाने के लिए कार्यकर्ता-शक्ति को और अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता है। आचार्य तुलसी ने लेखकों में अणुव्रत की भावना को पुष्ट बनाने के लिए अणुव्रत लेखक मंच की स्थापना की थी। अणुव्रत महासमिति इस दृष्टि से प्रतिवर्ष एक शीर्ष साहित्यकार को अणुव्रत लेखक पुरस्कार प्रदान करती है। इस बार यह पुरस्कार सुषमा जैन को प्रदान किया जा रहा है। मैं आशा करता हूँ इससे लेखक बिरादरी में पर्याप्त वृद्धि होगी।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा यह संयोग है कि आज मेरा 61वां दीक्षा दिवस है। मैनें बचपन से ही अणुव्रत में काम करना शुरु कर दिया था। हूँ तो मैं महाव्रती मगर मेरी पहचान अणुव्रती बन गयी है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेरणा से मैं निरन्तर आगे बढता रहा हूँ। अब आवश्यकता है कि नई पीढी के साधु सन्त इस मार्ग में आगे आयें और अणुव्रत की अलख जगाएं।

वर्ष 2009 की अणुव्रत लेखक पुरस्कार प्राप्तकर्ता सुषमा जैन ने कहा देश में आज सात्विक शक्तियां दुर्बल हो रही है, राजसी और तामसिक ताकतें बढ रही है इसलिए अणुव्रत का सात्विक शक्तियों को संगठित करने का प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है। मुझे जो पुरस्कार प्रदान किया गया है, इससे मुझे और ताकत से अणुव्रत के क्षेत्र में काम करने की ऊर्जा प्राप्त होगी।

यह पुरस्कार शासन भक्त स्व. हुकमचन्द सेठिया (श्रीडूंगरगढ-जलगांव) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र ताराचन्द दीपचन्द ठाकरमल सेठिया के सौजन्य से प्रतिवर्ष दिया जाता है।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एच रांका ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। बाबूलाल गोलछा, सम्पत सामसुखा आदि ने मोमेण्टो भेंट कर सुषमा जैन का सम्मान किया। अणुव्रत महासमिति के संरक्षक महेन्द्र कर्णावट ने कहा हम अणुव्रत पाक्षिक पत्र के द्वारा नैतिक लेखन को उभारने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह पुरस्कार उसी शृंखला की एक कड़ी है।

इस अवसर पर राजलदेसर के प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्ता एवं जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष गुलाबचन्द चिण्डालिया को पानादेवी सेखानी की स्मृति में नेमचन्द जेसराज सेखानी चैरिटेबल ट्रस्ट व जैन विश्व भारती द्वारा संघ सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। गुलाबचन्द चिण्डलिया ने जैन विश्व भारती के अध्यक्ष के रूप में लम्बे समय तक सेवाएं प्रदान की है तथा आचार्यों की दृष्टि की आराधना कर समाज में अपना गौरवपूर्ण स्थान बनाया है।

इसी क्रम में मनोहरीदेवी डागा ट्रस्ट (सरदारशहर) की तरफ से नोरतनमल बैद के द्वारा की गयी समाज सेवा का मूल्यांकन करते हुए समाजसेवी का पुरस्कार दिया गया। श्रीनोरतनमल बैद भी वर्षों से साधु-सन्तों की एवं समाज के लोगों की सेवा निस्वार्थ भाव से कर अपनी सेवा भावना का परिचय दिया।

कार्यक्रम में अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम रांका, महामंत्री विजयराज सुराणा, संयुक्तमंत्री बाबूलाल गोलछा, मुनि प्रशम, मुनि कुलदीप आदि ने अपने विचार रखे। नन्हीं बालिका नेहा बोथरा ने भगवान महावीर का पेंसिल-स्केच चित्र आचार्यप्रवर को भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

दुबई में अणुव्रत का शुभारंभ

नई दिल्ली, 2 फरवरी। यू.ए.ई. के विश्व प्रसिद्ध शहर दुबई में पर्यावरण सुरक्षा हेतु एक-एक बूंद पानी जागरूकता से उपयोग में लिया जाता है। ईमानदारी, कानून व्यवस्था अनुकरणीय है। दुबई में लक्ष्मी के साधक और भगवान महावीर के आराधक करीब 1900 भाई-बहन निवास करते हैं। वे वहां संगठित रूप से आध्यात्मिक गतिविधियां सुचारु रूप से चला रहे हैं।

दुबई जैन समाज के प्रधान राजेन्द्र बैंगानी ने अणुव्रत महासमिति की कार्यकारिणी सदस्या डॉ. कुसुम लूनिया एवं महिला मंडल दिल्ली अध्यक्षा सुमन नाहटा सहित दिल्ली से समागत 45 बहिनों का परिचय सम्मेलन वहां कान्फ्रेन्स हॉल में आयोजित किया। डॉ. कुसुम लूनिया ने इस अवसर पर दुबई में अणुव्रत समिति गठन करने की बात कही।

राजेन्द्र बैंगानी ने कहा गुरुदेव के पुण्य प्रताप से संचालित अणुव्रत आंदोलन की गतिविधियों के बारे में निरंतर जानकारियां प्राप्त हो रही हैं। डॉ. कुसुम का अणुव्रत समिति गठन करने का विचार स्वागत योग्य है। लेकिन एक मुस्लिम देश के रीति-रिवाजों, कायदे-कानून के अनुसार हम यहां कोई संस्था रजिस्टर्ड नहीं करवा सकते। पर अणुव्रती बनाने, अणुव्रत संकल्प-पत्र भरवाने, अणुव्रत पत्रिका के सदस्य बनाने एवं अणुव्रत योगक्षेमी योजना से जुड़ने की हमारी पूरी आकांक्षा है। उन्होंने अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्मशताब्दी वर्ष 2014 के दिल्ली चातुर्मास में दुबई से संघ लाने तथा अधिक से अधिक अणुव्रती बनाने की बात कही। राजेन्द्र बैंगानी की धर्मपत्नी विजया बैंगानी दुबई में प्रेक्षाध्यान की कक्षाएं चला रही हैं।

www.terapanthinfo.com